रामरहस्य नाटक



खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन,
बम्बई

ओ३म् ।

श्रीः ।

रामरहस्य नाटक ।



जिसको

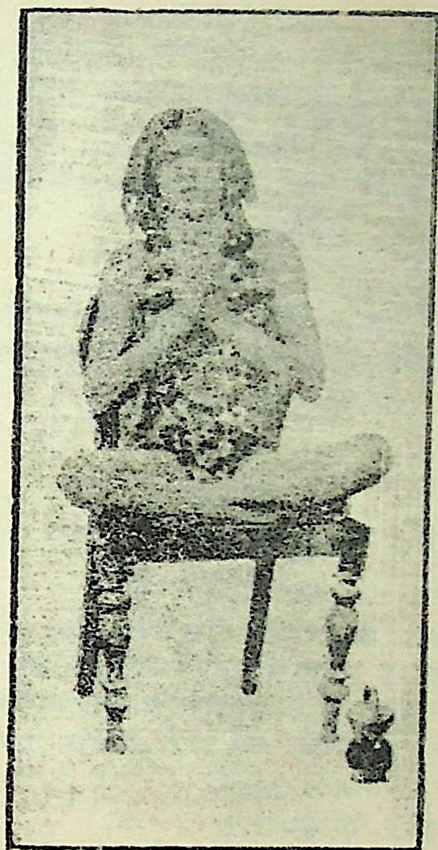
माताबदल गिरि अध्यापक, गङ्गापूर ग्राम, पोस्ट जिगना R. S. ज़िला मिर्ज़ापूर निवासीने श्रीमर्यादा-पुरुषोत्तम रामचन्द्रजीके प्रेमीभक्तोंके चित्त विनोदार्थ बड़ी परिश्रमसे संग्रह किया ।

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन,
बम्बई

संस्करण-सन् १९९०, संवत् २०४७

मूल्य १५ रुपये मात्र

मुद्रक और प्रकाशक-
मे खेमराज श्रीकृष्णदास, अध्यक्ष, श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
बम्बई-४, के लिये दे.स.शर्मा, मैनेजर, द्वारा
श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेस, खेतवाडी, बम्बई-४ में मुद्रित ।



श्रीबाबा लालनाथजी.



समर्पण।



श्री १०८ परमत्यागी परिव्राजकाचार्य्य अवधूत श्रीगुरुदत्ता-त्रेयानुयायी पूज्यपाद परमश्रद्धास्पद श्री बाबा लालनाथजीके करकमलोंमें— प्रातःस्मरणीय

परमपद प्राप्त, परम भागवत, भारत गौरव सुरक्षक
कविकुल चूड़ामणि

पूज्यपाद

श्रीगोस्वामीतुलसीदासकृत रामचरितमानसके मनोरमभावोंके आधारपर लघु "किंकर" रचित तथा संगृहीत यह

रामरहस्य नाटक

प्रथमखण्ड।

(बालकांड)

सादर समर्पित कर सविनय निवेदन यह है कि-

हरि गीतिका छन्द-

यह लघु समर्पण करकमलमें नाथजी स्वीकार हो।
आशीष दो इससे दयामय देशका उपकार हो॥
हम आर्यसन्तानोंमें भगवन् अति परस्पर प्रेम हो।
नाशै अविद्या, द्वेष, ईर्षा, ईशपदरति नेम हो॥

निवेदक सेवक:—
माताबदलगिरि (किंकर)
गंगापुर-जिगना R. S.
मिर्ज़ापूर U. P.

भूमिका।

शक्तिमान सर्वज्ञ प्रभु, जगकर्त्ता जगदीश।
बार बार कर जोरिके धरत चरणमें शीश॥

आज दिन भारतवर्षमें अनेक रामलीला मण्डलियाँ अपने २ हास्यप्रद कृत्योंद्वारा लोगोंके चित्तको मुग्ध कर रही हैं, किन्तु उनके अपशब्द तथा अश्लील उच्चारणोंसे प्रायः सभ्य जनताके मनको खिन्नता प्राप्त हो जाया करती है, रामलीलासे ज़ो कुछ शिक्षा मिलनेकी आशा की जाती थी उसका अभाव ही प्रतीत हो रहा है, और बहुधा तो दर्शकोंके चित्तमें नर्तकीके हाव, भाव, कटाक्ष आदि अभिनयसे आचरण विरुद्ध भाव उत्पन्न होजाया करते हैं जो अत्यन्त हानिकारक होते हैं।

इस "रामरहस्यनाटक" में इन उपरोक्त त्रुटियोंके सुधारका यथासाध्य व यथासम्भव ध्यान रक्खा गया है तथा मुख्य २ अवसरोंपर रामायणसे निकलती हुई शिक्षाओंका भी यथासाध्य दिग्दर्शन कराया गया है, यदि इससे किञ्चिन्मात्र भी रामलीला मण्डलियों अथवा जनताके हृदयमें उत्तम भाव पैदा हुए तो यह अनुचर अपनेको अत्यन्त कृतकृत्य मानेगा। इसका पुनर्मुद्रणादि सर्वाधिकार "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, के अध्यक्षके लिये सादर दिया है।

यदि सज्जनोंको इसमें किसी प्रकारकी त्रुटि दृष्टि गत हो तुरन्त सुधारकर सेवकको सूचित करें, क्योंकि मनुष्य होते हुये बड़े २ बुद्धिसागर भी चूक जाते हैं, मैं किस गणनामें हूँ?

आप लोगोंका कृपाकांक्षीः-
माताबदल गिरि (किंकर)
गङ्गापुर-जिगना R. S.-मिर्ज़ापूर,

ॐ

रामरहस्य नाटक ।



आरती ।

जयकृपाल करुणाकन्द । श्रीगोविन्द आनन्दकन्द ॥ टेक ॥ अजर अमर तू अभेद–गाइ थके तोहिं चारिहु वेद–तेरी गतीका न पायउ भेद–अगम माया सच्चिदानन्द ॥ जय० १ ॥ सर्वज्ञ शक्तिमान तू–करुणाका निधान तू–सबसे है महान तू–जगदाधार परमानन्द ॥ जय० २ ॥ तू ही जगत्का नायक है–मातु पिता औ सहायक है–सबही फलोंका दायक है–तेरी भजन सब नाशत फन्द ॥ ज० ३ ॥ "किंकर" को तेरी आश हरी–कीजे सकल दुख नाश हरी–ज्ञानका करदे प्रकाश हरी–जय २ जय २ हे मुकुन्द ॥ ज० ४ ॥

कामना ।

प्रभु जगमें वचन राखो मेरी ॥ टेक ॥
पंगु लंघै गिरि अन्ध लखै सब, ऐसी महिमा तेरी ॥ प्रभु० १ ॥
पाप हटाय ज्ञान परकाशहु, बजै धरमकी भेरी ॥ प्रभु० २ ॥
शुद्ध बुद्धि अब दान करो प्रभु, बरणहुँ कीरति तेरी ॥ प्रभु० ३ ॥
"किंकर" को दुखतापहरो सब, रहा तुमहिं प्रभु टेरी ॥ प्रभु० ४ ॥

स्तुति।

जयति जयति आदि शक्ति निखिल भुवन पालिनी ॥ टेक ॥ दुःखदाह दग्ध देह-मधिवसामि बन्ध गेह-भवतु जननि सर्व देह-भवतु मे सहायिनी ॥ जयति० १ ॥ इह निशिचराश्चरन्ति-जन्मभुव-मुपद्रवन्ति-साधुवृन्दमार्तयन्ति-विपदियं प्रमाथिनी ॥ जयति० २ ॥ दानवदल दमन नीति-रतिभयं प्रचकरीति-जगति यदि तवास्मि प्रीति-रेतु सिंहवाहिनी ॥ जयति० ३॥ स्वं स्वतन्त्रमस्तु धाम-समयो बहुरतिजगाम-सर्वमंगलेति नाम-सार्थयतु सनातिनी ॥ जयति० ४॥

सूत्रधार।

भजनः-दयाके अगार-महिमा अपार-तुम सम जगमें नहिं दूजा ॥ ॥ टेक ॥ सब गुणके खान-अति बुद्धिमान-सर्वशक्तिमान-करुणानिधान-हो सब आनन्दके देनहार ॥ तुम० १ ॥ नित शुद्ध बुद्धमुक्तस्वरूप-निर्मल निरीह अज अरु अनूप-हो सर्वजगतके तुम अधार ॥ तुम सम० २ ॥ तुम्हरी है शरण-सब दुख हरण-सब पापविमोचन सुखकरन-अगणित अधमन्ह कीन्हें उद्धार ॥ तुम० ३ ॥

अहा, हा, हा ! धन्य जगतकर्त्ता तेरी लीला धन्य है. और वह भी धन्य है जो संसारके झंझटोंसे विलग हो चित्तकी वृत्तिको तुझसे लगा देता है,जो आपका भक्त है निश्चय वही इस असार संसारमें आनंद पाता है, और जो मेरा तेरामें पड़ा है वह सदैव दुख भोगता है. और मायाको अपनाकर अन्तमें पछताता है।

नट—कहो भैया चैतन्यराम ! क्या अनाप सनाप बकबक लगाये हो, यह डेढ़ चावल की खिचड़ी तथा डेढ़ ईटका क़िला अलगही अपना बना रहे हो,

भला कुछ हमें भी बताते हो, कहां क्या हुआ, कौन पछताया, कौन रोया, बताओ तो सही।

सूत्रधार—अरे भैया सुचेतराम ! क्या बतायें, ईश्वरकी माया बड़ी प्रबल है. बड़े २ ऋषि, मुनि भी धोखा खाजाते हैं।

नट—भला क्यों कर ?

सू० धा०—सुन, अगर इसे जानना है तो नारद मोहकी कथा पढ़ डालो. जिस पर यह दोहा अति संघटित है।

दोहा-सुनु गिरिजा प्रिय वचन मम, ज्ञानी मूढ़ न कोय।
जेहिं जस रघुपति करहिं जब, तेहिं तसतेहिं क्षण होय॥

नट-अरे भैया ! सो तो हो सकता है, किन्तु आज यहां पर बहुतसे लोग एकत्र हैं कुछ ऐसा प्रबन्ध हो कि सबको शिक्षा तथा आनन्द प्राप्त हो।

सूत्रधार-तब तो यही उत्तम होगा कि "नारदमोह" की लीला श्रीरामायणके आधारपर आगत महाशयोंको यथा साध्य दिखा दी जावे, अतः दर्शकोंको सावधान कर दो कि शान्त होकर देखें।

नट-(दर्शकोंसे)

दोहा-हे सज्जन सब दर्शको, विनय सुनो धरि ध्यान।
लीला नारद मोहकी, देखहु सब मतिमान ॥ १ ॥
शोरोगुल, कचकच, उधम, अपर व्यर्थ बकवाद।
त्यागि, ग्रहण शिक्षा करो, चखौ भक्तिको स्वाद ॥ २ ॥

(दोनों गये)

(जवनिका पतन)

प्रथमाङ्क

प्रथम दृश्य.

इन्द्र सभा।

दर्बारी-(गाते हैं)

आवत हैं सुरराई सभामें ॥ टेक ॥

देव, परी, जिन, के स्वामी की, देखहु सबै अवाई ॥ सभामें ० १ ॥
बैठो नियम मुताबिक सब कोइ, नेकन अदब नशाई ॥ सभा० २ ॥
मानव गण क्यों अदब करैं नहिं, सुर रहे शीश झुकाई ॥ सभा० ३ ॥
गायक गण आ आके सभामें, रहिहैं तान सुनाई ॥ सभा० ४ ॥

(राजा इन्द्र आकर सिंहासनपर विराजते हैं सभासद जै २ पुकारते हैं)

सभासद-बोलो श्री देवेन्द्रकी जय।

इन्द्र-दो०-ना जाने क्यों हृदयमें, भयो शोक सञ्चार ॥
यातें चितरञ्जन निमित, करो कछू उपचार ॥ १ ॥
उत्तम तो होगा यही, गायक गणहि बुलाय ॥
गान, वाद्यके श्रवणते, लेउँ चित्त बहलाय ॥ २ ॥

बस, यही ठीक है, शीघ्र गायकों को बुलाओ।

चोबदार-जो आज्ञा, महाराज।　　(बुला लाता है)

गायकजन-(आकर)

दोहा०-जय सुर पति, वासव प्रभो, सुनासीर गुणधाम।
शोक टले, अरिकुल नशै, पूर्ण होय मन काम॥

(बैठके साज मिलाते हैं)

एक गायक–

गज़ल–भला ही नहीं है सताना किसीका।
सताना किसीका जलाना किसीका॥
सदा कौन कायम रहा इस जहाँमें,
हमेशा कहाँ याँ ठिकाना किसीका॥ १॥
न कर नाज़ तू फ़ानी अशिया पै हर्गिज़,
कि यकसाँ नहीं याँ ज़माना किसीका॥ २॥
वह गिरता है खुद गारमें जान लीजे,
जो चाहे कुयेमें गिराना किसीका॥ ३॥
"स्वतन्त्र" याद ईश्वरकी कर सच्चे दिलसे,
नहीं खूब उसको भुलाना किसीका॥ ४॥

(दूतका जाकर नारदके तपकी समाधि देखना)

दूसरा दृश्य.

नैपथ्य–चौ०–

हिमगिरि गुहा एक अति पावनि। बह समीप सुर सरित सुहावनि॥
आश्रम परम पुनीत सुहावा। देखि देव ऋषि मन अति भावा॥

नारद–(निर्गम निर्जन वन देखकर) बस, तपके लिये यही स्थान ठीक है (ध्यान करते हैं) ओं भगवते वासुदेवाय नमः (बार बार जप करते हैं)

दूत–(तप देख) ओः हो! ये तो अटल समाधि लगाए हुए हैं, जान पड़ता है इन्द्रलोक लेनेका प्रयत्न करते हैं, चलकर सुरेन्द्रको समाचार जताना चाहिये।

(जाता है)

तीसरा दृश्य.

इन्द्रलोक।

दूत–(इन्द्रसे)

दो०–हे प्रभु! नारद करत तप, इन्द्र लोकके काज।
कीजे कछु उपचार नतु, जात हाथसे राज॥

इन्द्र–अरे दूत ! क्या सत्य ही ऐसा कर रहे हैं, ठीक २ कह ।

दूत–हाँ महाराज ! इसमें तनकभी सन्देह नहीं ।

इन्द्र–तब तो विकट समस्या है क्या करें (कुछ सोचकर) अच्छा जाकर कामदेवको बुला ला ।

दूत–जो आज्ञा, जाता हूँ (गया)

कामदेवका भवन ।

दूत–(कामदेवसे)

दो०–हे रतिपति ! सुनिये ज़रा, विनय करत यह दास ।
किया स्मरण आपको, सुरपति जी निज पास ॥

कामदेव–बहुत अच्छा दूतवर ! शीघ्र चलता हूँ । (दोनों चले)

इन्द्रसभा ।

कामदेव–(इन्द्रसे) दो०–जय वासव जय इन्द्र जय, सुनासीर सुरराज ।
याद किया असमय कहो, केहि कारण मोहि आज ॥

इन्द्र–दो०–बड़ी कष्टमें पै अहै, सुनु रतिपति मतिधीर ।
अति चिंतत चित है मेरा, हरो कष्ट बलवीर ॥

शेर–बे ढङ्ग है दिल तङ्ग ऐ झखकेतु हमारा ।
मानूँगा मैं उपकार अगर दोगे सहारा ॥

कामदेव–शे०–दिल तङ्ग है बे ढङ्ग क्यों सुरराज तुम्हारा ।
बतलाइये क्या इसमें मैं दूँगा सहारा ॥

इन्द्र–चौ०–

सहित सहाय जाहु ममहेतू । मुनि तप खंडहु जलचर केतू ॥
मुनि नारद तप मन अति त्रासा । चहत देवऋषि ममपुर बासा ॥

कामदेव-चौ०-

तुव कारज हित सुनु सुरराजा। मुनि तपमहँ मैं करव अकाजा ॥
धीर धरहु निज मन सुर राई। आवत बेगहिं काज बनाई ॥

इन्द्र-तो शीघ्र जाइये, देर करनेका अवसर नहीं।

कामदेव-बहुत अच्छा महाराज! शीघ्र जाता हूँ (गये)

चौथा दृश्य.

नारदका तपस्थल।

नैपथ्य-चौ०-

तेहि आश्रमहिं मदन जब गयऊ। निज माया तब प्रगटत भयऊ ॥

(नारद दृढ़ समाधिमें मग्न हैं-कामदेव विघ्नका उद्योग करता है)

नारद-(ध्यानमें.) ओं भगवते वासुदेवाय नमः।

(कामदेव पुष्पबाणसे नारदको मारता है, उसके सहायक अपने कृत्यों द्वारा समाधि भंग करनेका यत्न करते हैं)

गण-(गाते हैं)

मुनिजी! चमनमें अनोखी बहार है ॥ टेक ॥

कदना, कदम्ब, कुन्द, केला, करंज, कञ्ज, कोरई, सुकेतकी, कनैल, कचनार है॥ मुनि० १॥ गेंदा, गुलाब, गुलदाउदी, सुगुलबहार, गुड़हर, गुलज़ाफरी, गुलतुर्रा, गुल अनार है॥ मुनि० २॥ "किंकर" गुलशनबहार, देखहु आँखें उघार, आँख मूँदि बैठे नहीं कछू मिलनहार है॥ मुनि० ३॥

(सब विस्मित हो कामदेवसे) अरे महाराज! इनकी तो आँख ही नहीं खुलती है, अटल हैं।

कामदेव–क्या कहूँ, आज भाग्य विपरीत सी प्रतीत होती है, परिश्रम सब व्यर्थ हुई। अब तो भय मालूम होती है, ऐसा न हो कि मुनिजी शाप देवें, अतः चलके क्षमा माँगें। (जाते हैं)

गण–हाँ, महाराज ! शीघ्र चलिये, देर न कीजिये।

कामदेव–(मुनिजीसे)

रेखताः–हमपर करो दया दयाल देर हो गई।
कीजे क्षमा मुनीश जो अघ ढेर हो गई॥
आजन्म हेत मैं तो अब दास हो गया।
ऐसा न होगा फेर जो इस बेर हो गई॥
परवश में होके भगवन् यह भूल हो गई।
कहें और क्या किस्मत में मेरे फेर हो गई॥
सब छोड़ कोह नाथ दया दृष्टि अब करो।
थोड़ी सी मेरी अर्ज क्या सुमेर हो गई॥

नारद–(कामदेव से)

ग़ज़लः–किया हमने क्षमा तुझ को तू क्यों अब थर थराता है
न रख भय तू मन मदन में क्यों नाहक़ बिल बिलाता है॥
किये तेरे को मैं छोड़ा मगर अब फिर न यों करना।
अभय हो जा भवन अपने तू क्यों देरी लगाता है॥
अगाड़ी जो करोगे तुम फल उसको भोगना होगा।
क्षमा "किंकर" किया तुझको विनय क्या तू सुनाता है॥

कामदेव–

दो०–करता हूँ परनाम मैं, नाथ चरण में शीश। (प्रणाम करता है)

नारद–जो निज गृह है अभय तू, है मम यही अशीष॥

कामदेव–जो आज्ञा महात्मन् ! जाता हूँ (गया)

इन्द्र सभा।

नैपथ्य-चौ०-

मुनि सुशीलता आपनि करणी। सुरपति सभा मदन सब वरणी॥

कामदेव-(इन्द्रकी सभामें उपस्थित होता है)

इन्द्र-चौ०-

समाचार कहु जल चर वाहन। भयेउ कार्य्य सब मम मन भावन॥

विघ्न भयेउ मुनि तप कैं नाहीं। होत सन्देह कछुक मन माहीं॥

हे कामदेव ! शीघ्र प्रकाश करो कार्य्य हुआ कि नहीं।

कामदेव-चौ०-

काह कहूँ तुम सों सुर राई। व्यर्थ भयउ मम सकल उपाई॥

जब विनती बहु भाँतिन कीन्हा। तब मुनि क्षमेउ शाप नहिं दीन्हा॥

हे सुरेंद्र ! क्या कहूँ किसी प्रकार वच गया।

इन्द्र-शोक; मेरे अभाग्यने कार्य्य विगाड़ा, अच्छा आप जाइये (कामदेव जाता है)

पाँचवाँ दृश्य.

स्थान-शिवजीका तपस्थल।

नपथ्य-चौ०-

तब नारद गमने शिव पाहीं। जीत काम अहमिति अधिकाई॥

(नारद का शिवजीके पास जाना)

नारद-(शिवजीसे)

दो०-कृपासिन्धु मर्दन मयन सब विधि पूरण काम।

चरण कमल महँ नाथ मम, स्वीकृत होय प्रणाम॥

शिवजी—चौ०—

आजु रहे मुनि अति हरखाई। कहहु सकल निज कुशल भलाई॥

नारद—(भजन) तव प्रसाद, शंकर भगवाना॥ टेक॥

धर्म्म की हानि होन नहिंपायेउ,तुम्हरी कृपा परम बलवाना॥ तव० १

इन्द्राज्ञा से जलचर बाहन, कीन्हेसि अति प्रपंच विधि नाना॥तव०२

कामकला कछु मोहि न व्यापी, निज कर्त्तव्य समुझि भय माना॥तव०३

"किंकर" सहित सहाय मार तब, इन्द्र लोक कह कीन्ह पयाना॥ तव० ४

शिवजी—क्यों नहो ! आप सामर्थ्यवान हैं, आप सब कुछ कर सकते हैं।

नारद—यह सब आप की कृपा है।

शिवजी—सो तो ठीक ही है किन्तु मेरी एक बात ध्यान रखना, कि:—

चौ०—बार बार बिनवों मुनि तोही। जिमि यह कथा सुनायेहु मोही॥

तिमि जनि हरिहि सुनायेहु कबहूँ। चलै प्रसंग दुरायेहु तबहूँ॥

नारद—बहुत अच्छा, नाथ ! मैं जाना और माना, कि:—

चौ०—सत्य सत्य प्रभु कथन तुम्हारा। जाकहँ मैं सब भाँति विचारा॥
थोरेहि महँ सब दीन्ह बताई। अधिक ताहि बूझेउँ मैं साईं॥
मंत्र सदृश गोपित रखिवानी। कबहुँ न कहब यह झूठ कहानी॥

अच्छा अब जानेकी आज्ञा प्रदान हो, प्रणाम (जाते हुए आप ही आप) भला इनकी चतुराई मैं नहीं समझता, ये यही चाहते हैं कोई दूसरा मेरे समान विदित न हो, अब तो मैं होही गया.

छठा दृश्य.

नैपथ्य—चौ०—

एक बार करतलकर वीणा। गावत हरिगुण गान प्रवीणा॥
क्षीरसिन्धु गमने मुनिनाथा। जहँ बस श्रीनिवास श्रुति माथा॥

नारद–(गाते जाते हैं)

भजन–प्रभु रक्षक मेरा–मुझको सदा है सहारा तेरा ॥ टेक ॥

जल थल व्यापक सबका स्वामी, तू है सर्वाधार।
ऋषी, मुनी, ज्ञानी, ध्यानी भी,पावें न तेरा पारहो॥प्रभु०१॥
अगम अथाह तुही सर्व्वोत्तम,जगका पालनहार।
आदि अन्त तेरा नहिं स्वामी, तू ही करै संहार हो॥प्रभु०२॥
तेरी ही सत्ता सबमें है फैली, रचना है संसार।
"किंकर"शरणनमें तेरे है, कीजै कृपा उदार हो॥ प्रभु० ३ ॥

(पहुंच जाते हैं)

भगवान–चौ०–

बैठिय आय इतै मुनिराया। बहुत दिनन्हमहँ कीन्ही दाया ॥
पाइ दरश मोहि परम हुलासा। समाचार निज करहु प्रकाशा ॥

नारद–(भजन) तुम्हरी कृपा सुनहु जग साईं हो ॥ टेक ॥
मार कला दलि राखि धर्म्म निज,रहेउँ चरण तुव ध्यान लगाई हो ॥ तुम्हरी० ॥ १ ॥ करि उपाय तप भंग करन चह, अटल समाधि न सकेउ हटाईं हो ॥ तुम्हरी० ॥ २ ॥ ऋतुपति, कामिनि, त्रिविधि बयारिहिं,प्रेरि थकेउ मन गयेउ लजाई हो ॥ तुम्हरी०॥ ३ ॥ सीम कि दाबि सकै कोउ कैसे;तुम हौ रक्षक जासु सदाई हो ॥ तुम्हरी० ॥ ४ ॥ "किंकर" सों पुनि क्षमा मांगि शठ, गयेउ इन्द्रपुर मन सकुचाई हो ॥ तुम्हरी० ५ ॥

भगवान–(मुस्काके)चौ०–

सुनु मुनि मोह होइ मन ताके। ज्ञान विराग हृदय नहिं जाके ॥
ब्रह्मचर्य्य व्रत रत मति धीरा। तुमहिं कि करै मनोभव पीरा ॥

हे मुनीश्वर ! अज्ञानता, कामवाधा, अभिमान तो आपका नाम स्मरण करनेसे ही दूर होजायगा, भला कामदेव आपका क्या कर सकता है।

नारद–चौ०–

का करि सकत मैं परम अयाना। तुम्हरी कृपा सकल भगवाना॥

हे प्रभो! भला मैं क्या कर सकता हूँ। अच्छा, अब जाता हूँ, प्रणाम (गये)

भगवान–(स्वतः) ओः, हो! इनके मनमें तो वड़ा भारी गर्वतरु अंकुरो है इसे समूल नष्ट कर देना ही ठीक है। (पटाक्षेप)

सातवाँ दृश्य।

(शीलनिधिपुरीका निर्माण तथा नारदका पहुँचना)

भगवान–(विश्वकर्मासे) भो, विश्वकर्मा! नारदके मार्गमें एक अति उत्तम नगर जाके निर्माण कर दो।

विश्वकर्मा–जो आज्ञा प्रभो! जाता हूँ। (जाकर निर्माण करता है)

नारद–(भजन गाते जाते हैं) भजनः–

ओ३म् सुमिरि ले सुमिरण कर ले को जानै कलकी। ख़बर नहिं जगमें यक पलकी॥ टे०॥ कौड़ी २ माया जोड़ी, माया है छल बल की। पापकी गठरी सिरपर भारी, कैसे होवै हलकी॥ ख़बर० १॥ अपनी करनी पार उतरनी, औरकी क्या फलकी। भव सागरमें आन फँसे हो, थाह नहीं है जलकी॥ ख़बर०॥ जबलग साधु अहै मंडपमों, शोभा है मंडपकी। प्राण पुरुष जब निकल जायगा, माटी है जंगलकी॥ ख़बर०॥ चाँद सूर्य्य दोउ साख भरत हैं, ज्योति झलाझलकी। "माधवदास" कहै कर जोरी, यह दुनिया मतलबकी॥ ख़० ४॥

ग्रामवासियोंसे–अजी! यह कौन नगर है? और कैसी सजावट हो रही है?

नागरिक–(दंडवतकरके) महाराज! यह शील नगर है, राजा शीलनिधिकी कन्या "विश्वमोहिनी" के स्वयम्वर की तैयारी हो रही है।

नारद–अच्छा, मैं भी चलके ज़रा नगर तथा राज प्रासादकी सजावट देखलूं (गये
शीलनिधि–(आगेसे)
दोहा–वरदायक तप पुंज प्रभु, दयासिन्धु मुनि ईश ।
करि प्रणाम दुहुँ जोरिकर, धरत चरणमें शीश ॥ (पैरपड़ताहै)
नारद–दो०–सुखसंपति दिन दिन बढै, नशै सकल दुख ताप ।
धर्म्मवृद्धि शुभ शांतिहो, बाढ़ै अमित प्रताप॥ (चिरंजीवी हो)
शील०–हे भगवन् ! कृपया पधार गृह पवित्र कीजिये ।
नारद–अच्छा । जैसी तेरी इच्छा, चलो (गये)
(आसनपर बिठाकर कन्याकी हस्तरेखा देखनेको कहता है)
शील०–दो०–दयागार गुणसिन्धु मुनि, दयादासपर धारि ।
कहहु नाथ गुण दोष सब, यहिकर हिये विचारि ॥
नारद–(हस्त रेखा तथा सुन्दरता देख मोहितहो आपही आप) ओः हो ! यह तो परम सुन्दरी होनेके अतिरिक्त ऐसी सुलक्षण है कि:–"जो यहि वरै अमर सो होई" और चराचर उसकी सेवा करैं, अहा हा ! वह भाग्यशाली होगा जो इसे वरेगा ।
(प्रकट) चौ०–
सुता सुलक्षणि नृपति तुम्हारी । सबगुण खानि स्वपतिहिं पियारी॥
अच्छा, अब मैं जाऊँगा (गये)
नारद–(स्वतः) गाना—
कौन यतनसो विचारी–मिलै तब राजकुमारी ॥ टे० ॥
जपतप कछु यहि काल बनैना, भा असमंजस भारी ॥ मिलै० १ ॥
चाहिय छवि सुअनूप मनोहर, यहि अवसर जगन्यारी ॥ मिलै० २॥
जासों रूप देखि मम रीझै, राजसुता सुकुमारी ॥ मिलै० ३ ॥
"किंकर"को मिलि सकिहै हरिसों, सुंदरता अब सारी ॥ मिलै० ४ ॥

बस २, उन्हींसे मांगना ठीक है (स्मरण करते हैं)

भजनः-नाथ ! तुम मेरे प्राण-अधार-मैं हूँ अधम गँवार ॥ टे० ॥ तुम महाराज जगतके स्वामी-करुणामय उर अन्तरयामी-होतुम जगत अधार ॥ नाथ० १ ॥ जग जीवन अरु पोषणकर्त्ता-पाप ताप भय संकट हर्त्ता-महिमा अमित अपार ॥ नाथ० २ ॥ ओंकार महाराज दयानिधि-अबतो दयाकरो करुणानिधि-मैं रहा तुम्हें पुकार ॥ नाथ० ३ ॥ हे प्रभु ! शीघ्र दया अबकीजे-सुछविदान "किंकर" को दीजे-मिलै सुराज दुलारि ॥ नाथ० ४ ॥

भगवान-(प्रकट हो)

चौ०-कहहु मुनीश सुदशा सँभारी । केहि कारण चंचलचित भारी॥

हे देवर्षि ! किस लिये आपका चित चंचल और विकल हो रहा है, सो कहिये ।

नारद-(हाथ जोड़ गिड़गिड़ाकर)

चौ०-नाथ! शीलनिधि नृपति दुलारी। अति लावण्य सुलक्षण हारी॥
जो वहि वैर अमर सो होई। समर भूमि तेहि जीत न कोई॥
सेवहिं सकल चराचर ताही। वरै शीलनिधि कन्या जाही॥
मन लोभेउ लखि सुन्दरताई। करि किरपा प्रभु होहु सहाई॥
आपन रूप देहु प्रभु मोही। आन भाँति नहिं पावहुँ ओही॥
हित जाही विधि होइ हमारा। करहु नाथ! सोइ अब उपचारा॥

हे प्रभो ! शीघ्र दया कीजिये ।

भगवान्-(मुसुकाकर)

दो०-जेहि विधि होय परमहित, नारद सुनहुँ तुम्हार ।
सोइ हम करब न आन कछु, वचन न मृषा हमार ॥

चौ०-कुपथ माँग रुज व्याकुल रोगी । वैद न देय सुनहु मुनि योगी॥
सोइ विधि हित तुम्हार मैं ठयऊ। आन न मन विचार कछु अहेऊ॥

हे मुनिजी ! आप कुछ चिन्ता न करें, मैं अवश्य वही करूँगा जिसमें आपका परम कल्याण होगा (अन्तर्हित होते हैं)

नारद-(प्रसन्नतापूर्वक गाते जाते हैं)

खूब दिया हरि सुन्दरताई ॥ टेक ॥ देखत ही मोहै नृप कन्या, मेलिहि गल जयमाल सुहाई ॥ खूब० १ ॥ आये जे भूप स्वयम्वर माहीं, जइहैं भवन सकल शरमाई ॥ खूब० २ ॥ "किंकर" अस वर सुघर अनूपम, दूसर अनत कबहुँ नहिं पाई ॥ खूब० ३ ॥

आठवाँ दृश्य।

स्वयम्वर-

(स्वयम्वर में नारद का पहुँचना-शीलनिधि सादर बैठाता है)

शी० नि०-(नारदसे)

दो०-आज स्वयम्वर सुताकी, जुरे भूरि महिपाल।
सभा सुशोभित कीजिये, मुनिवर ! परमकृपाल ॥ (बैठाता है)

शी०नि०-(मंत्रीसे)हे मंत्रीवर ! अब राजकुमारीको जयमाला लेकर आनेको कहो।

मंत्री-जो आज्ञा (जाता है)

(सहेलियोंके समेत राजकन्याका जयमाल लेकर आना)

नारद-(स्वतः) अहा, हा ! क्या ही मनोहर मूर्ति है, चितवन हृदयमें खुपी जाती है (खाँसते हैं)

राजकन्या-(स्वतः नारदको देखकर) भला, यह ललमुँहा स्वयम्वरमें क्यों आकरके बैठा हुआ है (दूसरी ओर जाती है)

नारद-(दूसरी ओर भी सामने बैठ जाते हैं)

(राजकन्या जिधर जाती है उधर बार २ नारद जाके बैठते हैं)

(शिवगण कूट करते हैं)

पहला शिवगण–दो०– देखो तो मुनिराजका, कैसा है यह हाल।
ज्ञात कछू होता नहीं, क्या है इनका ख्याल॥
दूसरा–दो०–ब्याहन हित नृपकन्यका, आये हैं यहि काल।
और बात कुछ भी नहीं, यही होयगा ख्याल॥
पहला–दो०–अस मलूकपर कौन विधि, रीझि देय जयमाल।
मोहि तो अस सन्देह है, देखि डरै ततकाल॥
दूसरा–दो०–देखत ही या रूपको, रीझि देय जयमाल।
सुन्दरता लखिके कुँवरि, रीझैगी तत्काल॥

पहला–वाह ! क्या कहना ! !
"को छबि वरनै अति सुघराई। लाजहिं हरि लखि सुन्दरताई॥"

दूसरा–क्यों न हो,
"भली बनी सूरति मनहारी। रीझइ कुंवरि स्वरूप निहारी॥"
(ले बढ़के)

पहला–क्या कहें, इतनी सुन्दरतापर भी उठ २ के आगे बैठना पडता है, इन्हें देखती ही नहीं, क्या उसकी आँख तो चमकसे नहीं चौंधियाती ? अफ़सोस !

दूसरा–अरे, अफ़सोस ही नहीं, बल्कि सौ हजार, कुल अफ़सोस।

पहला–अरे भाई ! मुझे तो इसकी सूरतसे डर लगता है।

दूसरा–सच तो "या ईश इस मुनीशकी बन्दरकी शकल है।
सब रंग रूप ठीक मगर दुमकी कसर है॥

(दोनों हँसते हैं–दूसरी ओर विष्णु आते हैं, राजकन्या जयमाल डालती है, वे लिवाके चल देते हैं)

नारद–(दुःखित हो) उफो ! मेरी सब कामनायें नाश होगई, हाय रे ! अब क्या करूँ ?

शिवगण–हे उपस्थित राजागण ! इनसे कहिये कि, अब हाय २ करनेसे क्या लाभ, जाकर दर्पणमें मुँह तो देखें, कहीं ऐसे भी रूप पर स्त्री मोहती हैं, ह ह ह ह !

नारद–(दर्पण न होनेसे जलमें मुँह बन्दर सा देख दुखित होते हैं और फिर जल में मुँह देख अपना स्वरूप पाते हैं किन्तु शान्ति प्राप्त नहीं होती और क्रोधमें आते हैं, शिवगणोंको हँसते देखकर उन्हें शाप देते हैं)

दोहा–होहु निशाचर जाय तुम, कपटी पापी दोय ।
हँसेहु हमहिं सो लेहु फल, बहुरि हँसेहु मुनि कोय ॥

(पुनः क्रोधमें ही विष्णुके पास जाते हैं) (स्वतः)

चौ०–देइ हौं शाप कि मरि हौं जाई । जगत मोरि उपहास कराई ॥
बस शाप ही दूँगा, या मारूँगा, नहीं नहीं शाप दूँगा॥ (जाते हैं)

भगवान–(राजकन्या तथा लक्ष्मी समेत प्रकट होकर, नारदसे)

चौ०–नयन अरुण मुख द्युति मुरझाई। मुनि कहँ चलेहु विकलकी नाई।
हे मुनिवर ! शीघ्र ही अपने चितकी व्यग्रताका कारण प्रकाश कीजिये ।

नारद–(कोपसे)

चौ०–पर सम्पदा सकहु नहिं देखी । तुम्हरे ईर्षा कपट विशेषी ॥
मथत सिन्धु रुद्रहिं बौरायहु । सुरन्ह प्रेरि विष पान करायेहु ॥

दोहा–असुर सुरा विष शंकरहिं, आप रमा मणि चारु ।
स्वारथ साधक कुटिल तुम, सदा कपट व्यवहारु ॥

चौ०–परम स्वतंत्र न सिरपर कोई । भावै मनहिं करहु तुम सोई ॥
भलेहि मन्द मन्दहिं भल करहू । विस्मय हर्ष न हिय कछु धरहू॥

स०–नीकको मन्दऽरु मन्दको नीक, न विस्मय हर्ष हिये बिच धारो ।
होय स्वतंत्र करौ मन भावत, कोई नहीं शिर शासन हारो ॥

परचि गये तुम डँहकि सबै, नहिं कर्म्म शुभाशुभ नैकविचारो।
बायन दीन भले घरमें मिलि, हैं फल वेगहिं कीन तिहारो ॥
चौ०–बँचेहु मोहि जवन धरि देहा। सोइ तनु धरहु शाप मम एहा॥
कपि आकृति तुम कीन्ह हमारी।करिहहिं कीस सहाय तुम्हारी
मम अपकार कीन तुम भारी। नारि विरह तुम होहु दुखारी॥

बस, जाइये, जैसा किया है वैसा भोगिये।

भगवान–जो मर्जी आपकी, मुनिवर! (माया दूर कर अकेले रह जाते हैं)

नारद–(विस्मय तथा भयसे हाथ जोडकर) हे प्रभो! क्षमा कीजिये।

चौपाई–मृषा होय मम शाप कृपाला। अबही हे प्रभु दीनदयाला ॥
मैं दुर्वचन कहेउँ बहुतेरे। हे प्रभु पाप कटहिं किमि मेरे॥

भगवान–चौ०–
जपहु जाइ शंकर शतनामा। होइहिं वेगि हृदय विश्रामा ॥

सुनिये, शिवजीके समान मुझे कोई प्रिय नहीं है, उनकी कृपा विना मेरी भक्ति नहीं मिल सकती, ऐसा विचार मनमें धारण कर आनन्दपूर्वक पृथ्वीमें विचारिये। अब मेरी माया तुम्हें न सतायेगी। (अन्तर्धान हुए)

शिवगण–(नारदके पैरों पड़कर) हे महाराज! हम लोगोंको क्षमा कीजिये, हम लोग ब्राह्मण नहीं हैं, शिवके गण हैं।

नारद–तो फिर, मैं क्या करूँ?

शिवगण–महाराज! शाप अनुग्रह कीजिये, भूल क्षमा कीजिये।

नारद–जाओ, तुमलोग राक्षस तो अवश्य होंगे, किन्तु बडे प्रतापी होंगे और संसारको जीतोगे, जब विष्णु नरतन धरकर तुमलोगोंको स्वयं मारेंगे, तब तुमलोगोंका उद्धार होगा, बस जाओ। (सब गये)

नारद–(ईश्वरकी स्तुति करते हैं)

गजल–जयति जय जग रचन हारे-धन्य हो प्रभु धन्य हो।
सबमें रमे सबसे हो न्यारे-धन्य हो प्रभु धन्य हो॥ टेक०॥
कल २ सुध्वानेसे सुरसरी, कलगान तेरा कर रही।
परिक्रमा दें चन्द तारे–धन्य हो० ॥ १ ॥
तेरी प्रभाकी झलकको, दामिनि दिखा देती प्रभो।
कौतुक विलक्षण हैं तिहारे-धन्य हो० ॥ २ ॥
सर्व शक्तिमान मङ्गल करन, सब ज्ञाता हो तुम।
जगत धारण करन हारे–धन्य हो० ॥ ३ ॥
निर्बल सबल जीव जगके, एक कर्त्ता हो तुम्हीं।
सबकी रक्षा करन हारे–धन्य हो० ॥ ४ ॥
मेघ वर्षत अम्बु महिपर, यह भी तेरी कृपासे।
अन्न पैदा करन हारे–धन्य हो० ॥ ५ ॥
तव चरण कमलोंको वन्दूँ–हो अगुण या गुण सहित।
सर्व जगके रचन हारे–धन्य हो० ॥ ६ ॥
है यही विनती प्रभो! "किंकर" की आशा पूर्ण हो।
गुण सदा गावें तिहारे–धन्य हो० ॥ ७ ॥

शिक्षा प्राप्ति।

दोहा–प्रबल शत्रु जग जीवके, काम क्रोध अहँकार।
इनके वश नर है सदा, होते दुखी अपार॥
चौबोला–होते दुखी अपार कामसे जिसे पड़ा है पाला।
नारदजीसे महा मुनीका किया वदन है काला॥
अहंकार वश नारद मुनिने, कथन शम्भुको टाला।
उसका फल जो उन्हें मिला, नाटकमें देखा भाला॥ ०॥
बड़ोंका कहना मानो रे-न कबहूँ हठको ठानो रे–काम है
शत्रू भारी–जिससे नारदसे ज्ञानीकी, क्षणमें मति गइ मारी॥

सूचना ।

दोहा–हे प्रेमी सब दर्शको ! विनय सुनो चित लाय ।
अब लीला सुन्दर सुखद, कालिह देखियो आय ॥

कालिह देखियो आय सज्जनों, मनुजीको तप भारी । जिमि वरदान लहे, ता पीछे महि गैया वपु धारी ॥ सकल सुरन्ह संयुक्त जायकर हरिस्तुति मन धारी । भइ अकाशवाणी पुनि जा बिधि, लीला अति मुदकारी ॥ ० ॥ प्रेमसे देखहु आई जी–चित्त हरिचरणन्ह लाई जी–ध्यान भक्तीमें दीजे–श्री जगदीश्वरकी लीलाका, मधुर अमिय रस पीजै ॥

प्रार्थना ।

नहीं बुद्धि हमारी-गावे महिमा तुम्हारी-तुम्हीं सन्तन हितकारी-प्रभु ओ३म्, ओ३म्, ओ३म् ॥ टे० ॥ दया भक्तनपै कीजै–सब दुखको हरलीजै–निज भक्ती अब दीजै–प्रभु ओ३म्० ॥ १ ॥ हारे योगी योगीश्वर–सारे ऋषी औ ऋषीश्वर–महिमा जानै ना मुनीश्वर–प्रभु ओ३म्० ॥ २ ॥ तेरी महिमा अपार–कोई पावे न पार–चाहे गावै हजार–प्रभु ओ३म्० ॥ ३ ॥ प्रभु तुम हो कर्त्तार–सारे जगके अधार–सभी कहते पुकार–प्रभु ओ३म्० ॥ ४ ॥ नहीं तुम बिन हमारा–कोई जगमें सहारा–तूही जीवन अधारा–प्रभु ओ३म्० ॥ ५ ॥

उपदेश ।

लावनी:–ओ३म् नाम निज आदिमंत्र इसको बिसराना नहिं चहिये ।
ओ३म् नामको छोड़ ओरके गुणको गाना नहिं चहिये ॥
और रूठै तो रूठै एक भगवतको रूठा नहिं चहिये ।
गऊ विप्र औ साधु सन्त सत गुरुको सताना नहिं चहिये ॥
दुर्जन काला नाग कभी गोदीमें खिलाना नहिं चहिये ।

अपने पैरके तले डंक बिच्छूका दबाना नहिं चहिये
पास शस्त्र नहिं होय सिंह सोतेको जगाना नहिं चाहिये।
वर्षा ऋतुके बीच किसीका भवन गिराना नहिं चहिये॥
गंगा यमुना छोड़ नदी नालेमें नहानो नहिं चहिये।
तनिक कामके हेत मित्र सोतेको जगाना नहिं चहिये॥
लाख अमीरी होय पर अपनी जात छिपाना नहिं चहिये।
घरकी नारी छोड़ माल रण्डीको खिलाना नहिं चहिये॥

सावधानी।

दोहाः–सुन लो प्रेमी दर्शको, बिनय मेरी चित्त लाय।
लीला सुन्दर देखिये, जातें भक्ति दृढ़ाय॥

चौबोला–जातें भक्ति दृढ़ाय भ्रातृगण मनको हो सुखदाई॥
यदि धरिके तुम ध्यान लखौ, ऊधम बकबाद बिहाई॥
परमानन्द प्राप्त हो प्यारे, हरि पद भक्ति दृढ़ाई॥
भूल चूक अपराध क्षमाकरि, लीला लखौ सुहाई॥

ध्यान लीलापर दीजे जी–उधम बकवाद न कीजेजी–ईशमें ध्यान लगाओ–जातें आनँद लहो तथा हरि भक्तिभलीविधि पाओ॥०॥

द्वितीयाङ्क.

प्रथम दृश्य.

(स्वयम्भू मनुका तपके लिये उद्यत होना और पुत्रको राज्य सौंपना)

मनु–(पुत्रसे) चौ०:–

सुनु सुत मोर वचन चितधारी। चौथ अवस्था भयेउ हमारी॥
कछु हरि भजन करन चित चाहा। अब मैं करत तुम्हहिं नरनाहा॥

(चोबदारसे) श्रीगुरुजी महाराजको बुला ला ।

चोबदार-जो आज्ञा, महाराज, (गया)

(गुरुसे) श्रीमान् गुरुजी महाराज ! प्रणाम, आपको श्रीराजाजूनें स्मरण किया है, कृपया पधारिये ।

गुरुजी-आनन्द रहो, चलो, मैं चलता हूँ । (दोनों जाते है)

राजा-(गुरुजीसे) श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः, विराजमान हूजिये ।

गुरुजी-(बैठकर) क्या कार्य्य राजन् सो कहो ।

राजा-मैंने आज अपने मनकी इच्छा राजकुमारपर यह प्रकट की है कि:-

सोरठाः-होय न विषय विराग, भवन बसत भा चौथपन ।
हृदय बहुत दुख लाग, जन्म योग हरि भक्ति बिनु ॥

सो हे गुरुवर्य्य ! कृपया,कुंवरजीको राजतिलक करदीजिये, मैं तपको जाना चाहता हूँ

गुरुजी-बहुत ठीक, बहुत ठीक, अच्छा, तिलकके सामान मँगाइये (मँगाते हैं) (तिलक मंत्र पढ़ते हैं)

मं०-ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च लोकपाला दिगीश्वराः ।
रक्षन्तु सर्वगात्राणि मस्तके तिलके कृते ॥ (टीका लगाते हैं)

राजकुमार-(उठकर) गुरुजी ! प्रणाम ।

गुरुजी-चिरंजीव,

मनु-(पुत्रसे) हे पुत्र ! राजनीति तथा धर्म्मानुसार प्रजापालन करना, अब मैं तपको जाता हूँ । (सपत्नीक जाते हैं)

(स्थान-वन, गोमतीका तट, ऋषियों मुनियोंका सम्मेलन)

राजा-(भजन गाते जाते हैं)

नर ग़ाफ़िल क्यों सोता, अब तू ॥ टेक ॥

पंचतत्त्वकी बनी शरीरिया क्यों विरथा है खोता । हरिहर भजनकरो

निशिवासर, सो काटै जो बीता ॥ १ ॥ अन्तकाल पछतायगा मनुआं दर २ फिरि है रोता । यमदूतनकी मार पड़ेगी रोयेसे क्या होता ॥ अब तू० ॥ २ ॥ मन मूरख हरिनाम भजो रे, ज्यों पक्षिनमें तोता । मुक्तीका सन्मार्ग बनेगा, हरिहरनाम रटोता ॥ अब तू० ३ ॥

मुनिगण–(राजाको देख, आपही आप) अहा ! यह तो कोई राजर्षि आरहे हैं । (पास जाकर) राजन् ! प्रथम उत्तमोत्तम तीर्थोंके दर्शन कीजिये, पश्चात्, साधनमें तत्पर होइये ।

मनु–बहुत अच्छा । (जा कर दर्शन करते हैं)

मुनिगण–हे राजन् ! देखिये, यह स्थान तपके हेत उत्तम है ।

राजा–जो आज्ञा महात्मन् ! (बैठ जाते हैं–मुनिगण जाते हैं तथा राजा जप करते हैं)

मंत्रः–"ओरेम् भगवते वासुदेवाय नमः" (बार २ जपते हैं)

ब्रह्मा–(आकर) हे राजन् ! वर माँगो, क्या इच्छा है ?

मनु–हे प्रभो ! कोई कामना नहीं, (मंत्र जपते हैं)

शिव–राजन् ! वर माँग, मैं प्रसन्न हूँ ।

मनु–क्या मांगू, कोई अभिलाषा नहीं (मंत्र जपते हैं)

आकाशवाणी–चौपाईः–

मांगु २ वर नृप मनभावा । परम भक्ति तव मोहि सुहावा ॥
मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ, जो कामना हो प्रकट करो ।

मनु–(नमस्कार करके)

चौ०–सुनु सेवक सुरतरु सुर धेनू । विधि हरिहर वन्दित पदरेनू ॥
सेवत सुलभ सकल सुखदायक । प्रणतपाल सचराचर नायक
जो अनाथ हित हमपर नेहू । तो प्रसन्न होइ यह वर देहू ॥

जो स्वरूप बस शिव मनमाहीं।जो भुसुंडि मन बसत सदाहीं॥
देखहिं हम सो रूप भरिलोचन।कृपा करहु प्रणतारतिमोचन॥

भगवान–(प्रकट हो)

दो०–सुनहु नृपति तुक वचन यह, अति प्रसन्न मोहि जानि।
पुनि मन भायो मांगु वर, महा दानि अनुमानि॥

मनु–(हाथ जोड़)

भजन–देखि नाथ पदकंज तिहारो ॥ टेक ॥ अपर कछू अभिलाषा नाहीं, पूरेउ प्रभु सब काज हमारो ॥ देखि०१ ॥ यक लालसा हृदय बड़भारी, सुगम अगम नहिं जात उचारो ॥ देखि० २ ॥ देते तुमहि सुगम अति स्वामी, मम कृपणाय ते लागत भारो ॥ देखि० ॥ ३ ॥ सो सब जानहु अन्तरयामी, " किंकर " की सो आश सँवारो ॥ देखि० ४ ॥

भगवान–चौ०–

सकुच विहाय मांगु नृप मोही। मोरे नहिं अदेय कछु तोही॥

मनु–दोहा–दानि शिरोमणि कृपानिधि, नाथ कहौं सतभाव।
चाहौं तुमहिं समान सुत, प्रभु सन कवन दुराव॥

भगवान–एवमस्तु। हे राजन् ! मैं अपने समान कहां ढूँढता फिरूँगा, अतः मैं ही आकर तुम्हारा पुत्र होऊंगा। (रानीसे) हे देवी ! तू भी अपने रुचिका वर मांग।

रानी–चौ०–

जो वर नाथ चतुर नृप मांगा। सो कृपाल म्वहि अति प्रिय लागा॥
और:–जे निज भक्त नाथ तव अहहीं।जो सुख पावहिं जो गति लहहीं

दोहा:–सोइ सुख सोइ गति सोइ भगति, सोइ निज चरण सनेहु।
सोइ विवेक सोइ रहनि प्रभु, मोहि कृपा करि देहु।

भगवान-(चौ०) जो कछु रुचि तुम्हरे मनमाहीं।
मैं सो दीन कछु संशय नाहीं ॥
और हे देवी ! मेरे अनुग्रहसे तेरा लोकोत्तर ज्ञान कभी न मिटैगा ।

मनु-हे प्रभो ! एक बिनय और स्वीकृत हो ।
चौ०-सुत विषयक तव पदरति होऊ।मोहि बरु मूढ़ कहै किन कोऊ ॥
मणिबिनुफणिजिमिजलबिनुमीना।मम जीवनतिमितुमहिं बिहीना॥
(पैरों पड़ते हैं)

भगवान-एवमस्तु ! अच्छा, शरीर त्यागनेपर मेरी आज्ञानुसार इन्द्रलोक जाओ ।
सोरठा-तहँ करि भोग विशाल, तात गये कछु काल पुनि।
होइहहु अवध भुआल, तब मैं होब तुम्हार सुत ॥
चौ०-अंशनसहित देह धरि ताता । करि हौं चरित भक्त सुख दाता॥
आदि शक्ति जिन जग उपजाया।सोउ अवतरहि मोरियहमाया॥
पुरवहुँ सब अभिलाष तुम्हारा । सत्य २ प्रण सत्य हमारा ॥
(अन्तर्धान हुए)

दूसरा दृश्य ।

(स्थान-विश्वश्रवाका तपस्थल)

विश्वश्रवा-श्लोकः-यः पृथ्वीभरवारणाय दिविजैः संप्रार्थितश्चि-
न्मयः, संजातः पृथ्वीतले रविकुले मायामनुष्योऽव्ययः ॥
निश्चक्रं हतराक्षसः पुनरगाद् ब्रह्मत्वमाद्यं स्थिरां, कीर्ति-
म्पापहरां विधाय जगतां तं जानकीशं भजे ॥ १ ॥
(सायसन्ध्यामें तत्पर होते हैं)

पथ्य-तेहि क्षण तहां कैकसी आई । मुनि नायक सन बैन सुनाई ॥

कैकसी–चौ०–

प्राणनाथ मोहि मदन सतायो। तेहि कारण मैं तब ढिग आयो

खेमटा–मुनि कैसे कलेजेमें धीर धरूँ ॥ टेक ॥

मारे मैनके चैन न आवे, मदसे माती दिवानी फिरूँ ॥ मुनि० १

रतिनायक कर शायक मारै, बाणकी चोटको सहि न सकूँ॥मुनि०२

रतीदान मुनि हमको दीजै, नातो ज़हर मैं खाय मरूँ ॥ मुनि० ३

नैपथ्य–तब मुनि बोले मंजुल बानी॥सन्ध्या समय कुअवसर जानी

मुनि–दो०–भोगकाल यह है नहीं, सुनहुँ प्रिया मम बैन ।

समय पाय कारज करहु, तव पावहुगी चैन ॥

कैकसी–चौ०–

जो कुछ कहहु मुनीश उदारा। पै न मानि हौं बयन तुम्हारा॥

नैपथ्य–बरबस पकरि मुनीशहिं वामा।सुरत कीन त्रिभुवनअभिरा

गर्भाधान भयो तेहि काला। हर्षित भई कैकसी बाला

मुनि–दो०–धारण कीनो गर्भ तुम, काल गोधुली मांहिं ।

यहि ते तुम कहँ होयँगे, राक्षस संशय नाहिं ॥

कैकसी–चाहे जो हो, मेरा मन शीतल हुआ, पीछे देखा जायगा ।

नैपथ्य–सुखयुत कछुक कालचलि गयऊ। रावणादि जन्मत तबभय

(पुत्रयुक्त मुनि विराजमान हैं–कुबेरका आना)

नैपथ्य–विश्वश्रवा तनय सुखधामा। यक्षराज आयो तेहि ठामा

कुबेर–श्रीमन् पूज्यपाद पिताजी, प्रणाम।

मुनि–चौ०–

कहहु पुत्र आपनि कुशलाता। जेहि कारन आयेहु तुम तात

कुबेर–तव दरशन हित आयेउँ ताता। आन नहीं कछु दूसरि बात

नैपथ्य–देखि कहै रावण सुनु माता। को यह तेजवान शुठि गाता॥

रावण–सवैया–

भानु समान विमान भरो, द्युति आजु लौं ऐसो लखो दृग हौं न है
तेज भरो पितुको पितु वोलत, जाके प्रकाश भरो सब भौन है॥
भूषण वस्त्र अनेक धरे, यह आजुहि आय कियो इत गौन है।
तेजको पुंज महा धनवानसो, वीर बड़ो जननी कहु कौन है॥

कैकसी–चौ०–

जेठ पुत्र मुनिको वलधामा। भ्राता तव कुबेर असनामा॥

दोहा–राज राज ए यक्षपति, जेष्ठ भ्रात तव तात।
है कुबेर याही लखौ, जगयश अति विख्यात॥

रावण–दोहा–सहे जात नहिं मातु तव, कठिन वचन ए तीर।
जीति इन्हैं करिहौं अबै, देवनके मन पीर॥
जात तपहिं युत बन्धु मैं, लगि है मातु न वेर।
जीतहुँ गो दिगपाल सब, का बापुरो कुबेर॥

(तपको जाते हैं)

तपस्थल।

नैपथ्य–चौपाई:–

कीन त्रिविध तप तीनिहुँ भाई। संयम नियम वरणि नहिं जाई॥
पूरन भो जब तप तिनकेरी। सुमन वृष्टि तब भयेउ घनेरी॥
प्रकट भयेउ ब्रह्मा भगवाना। कहेउ माँगु मोंसन वरदाना॥

ब्रह्मा:–चौपाई:–

अति प्रसन्न तोहिपर मतिमाना। माँगु २ मोंसन वरदाना॥

रावण–दोहा–मरौं न काहू हाथसे, जीत लेउँ संसार।
नर वानरको त्यागिके, जो मम सदा अहार॥

ब्रह्मा–एवमस्तु, यही वर दिया। (कुंभकर्णको देखकर) जो यह नित अहार करेगा तौ ससार चौपट हो जायगा। हे शारद! इसकी मति फेरो।

(प्रकट कुंभकर्णसे)

दो०–तुम माँगो वरदान सो, जो चित रहो समाय।
मैं प्रसन्न देइ हौं वहै, हिये मोद सरसाय॥

कुम्भकर्ण–जो प्रसन्न हो, तो यह वर दो, कि:–

दोहा–यक दिन जागौं नींदको, गहे रहौं षट् मास।
ह्वै प्रसन्न दीजै यही, हित कै जगत निवास॥

ब्रह्मा–दोहा:–दीन यही वरदान मैं, चितमें अति हरषाय।
जाइ सोइये धाममें, सुखसों सेज बिछाय॥

ब्रह्मा–(विभीषणके पास जाकर)

दो०–पुत्र चतुर चितवर तुमहुँ, मन भायो लै लेहु।
अति प्रसन्न हौं देखि तप, हियसों सहित सनेहु॥

विभीषण–सवैया–

चाहौं कृपाल यही चितमें, मति साधुकी संगति माहिं ठनी रहै।
सोवत जागत ही निशि वासर, मों मति धर्महिं माहिं सनी रहै॥
छोड़ि सबै जगको ललिते, यह एकहि आश हियेमें ठनी रहै।
कञ्जसे पायनमें हरिके नित, मेरी घनी प्रभु प्रीति बनी रहै॥

ब्रह्मा–दो०–

धन्य २ सुत धन्य तू, नभ भूषण मतिमान।
अति प्रसन्न सुनु सुमति मैं, दियो यही वरदान॥

(तीनों भाइयोका घर आना–रावणादिका उपद्रव करना)

(नैपथ्य) चौ०–

करहिं उपद्रव निशिचर तहवाँ। जप तप यज्ञ होत रह जहवाँ ॥

(राक्षस उपद्रव करत हैं)

तृतीय दृश्य।

(अत्याचारोंसे व्याकुल होकर पृथ्वीका पश्चात्ताप करना इत्यादि–)

(नैपथ्य) दोहा–वरणि न जाय अनीति, घोर निशाचर जो करहिं।
हिंसापर अतिप्रीति, तिनके पापहिं कौन मिति।

पृथ्वी–(स्वतः) क्या करें, अब तो असह्य भार हो रहा है, क्योंकि:–

चौ०–बाढ़े बहु खल चोर जुआरी । जे लम्पट परधन परनारी।
मानहिं मातु पिता नहि देवा। साधुनसन करवावहिं सेवा ॥
गिरि सरिसिन्धुभार नहिं मोही। जसमोहिगरुअएकपरद्रोही॥

(नैपथ्य) चौ०–

धेनुरूप धरि हृदय विचारी। गई तहाँ जहँ सुरमुनिझारी।

पृथ्वी–(स्वतः) अच्छा, ज़रा देवताओंसे तो सहायता माँगू। (जाती है)

(देवताओंसे) चौ०–

घोरपाप मोंपर अति भारा । सुर मुनि दीजै कछुक सहारा ॥

सुरगण–(कन्दराओंसे) अरे चुप, चुप, कहीं रावणके दूत न सुनते हों, सुन क्या करूँ ?

चौ०–सकलधर्म्म देखहुँ विपरीता। कहि न सकौं रावण भयभीता ॥

मुनिगण–वसुंधरे ! शोर न कर, नहीं तो हमें राक्षस खालेंगे। सुनः–

छन्दः–जप योग:बिरागा, तप मख भागा, श्रवण सुनै दशशीशा।
आपुन उठि धावै, रहै न पावै, धरि सब घालै खीसा॥

अति भ्रष्ट अचारा, भा संसारा, धर्म सुनै नहिं काना।
तेहि बहुविधि त्रासैं, देश निकासैं, जो कह वेद पुराना।

पृथ्वी-(स्वतः) चौ०-

केहि सन्ताप सुनावउँ रोई। काहूसे कछु काज न होई॥

(देवताओंसे) हे देवताओं ! कबतक इस प्रकार दुःख सहोगे, कुछ यत्न करना चाहिये, किन्तु निरुपाय काम न चलेगा।

देवतागण-वसुधे ! धैर्य्य धरो, हमारे तुम्हारे कष्टको ईश्वर हरेंगे, चलो, ब्रह्माके पास चलें (सब जाते हैं)

ब्रह्मा-(सबसे)मैं स्वयं इसी विचारमें हूँ, किन्तु क्या करें, चलो ईश्वरप्रार्थना करें

देवगण-भला, ईश्वर कहाँ मिलेंगे ?

एक-अजी, जानते नहीं, ईश्वर वैकुंठमें रहते हैं।

दूसरा-नहीं, नहीं, तुम भी नहीं जानते, वे तो क्षीरसमुद्रमें रहते हैं।

शिव-सुनिये, हमारी समझमें तो:-

चौ०-हरि व्यापक सर्वत्र समाना। प्रेमसे प्रकट होंहिं मैं जाना।
देशकालदिशि बिदिशिहु माहीं। कहहुसोकहाँजहाँप्रभु नाहीं।
अग जग मय सब रहित विरागी। प्रेमसेप्रकटहोंहिंजिमिआगी।

ब्रह्मा-धन्य, धन्य, धन्य ! अच्छा, ईश्वरकी सब कोई स्तुति करो।

स्तुति।

ईश्वर निराकार- मेटो ताप सन्तापके। त्राहि माम् २ त्राहि माम् २ प्रभो २ प्रभो२-टे०॥ हमपर,इनपर,उनपर सबपर,-अपनी दयाके करुणासागर। हमने तेरा ध्यान बिछोहा-वेदोंका विज्ञानबिछोहा होम यज्ञ अरु दान बिछोहा-यथा योग्य सन्मानबिछोहा-हरी ४

दाता धाता, जगके त्राता-पाठक तेरीऽस्तुति गाता-पाहि माम् २ पाहि माम् २ प्रभो ४ ॥ २ ॥

हे प्रभो ! शीघ्र दया करौ, सन्ताप हरौ भूभार दूरि करौ-दीनानाथ !

आकाश वाणी-चौ०:-

जनि डरपहु सुर सिद्ध सुरेशा। तुमहिं लागि धरि हौं नरभेषा ॥
अंशन सहित मनुज अवतारा। लेइ हौं दिनकरवंश उदारा ॥

हे देवताओ ! निर्भय हो जाओ, मैं पृथ्वीका भार हरूंगा, घबडाओ मत।

ब्रह्मा-(पृथ्वीसे) अब तुम आशा रक्खो, ईश्वर सब कष्ट हरेंगे। (देवताओ !) अब तुम सब भी ईश्वरसेवानिमित्त यथारुचिरूप धारण कर संसारमें विचरो।

(सब जाते हैं)

चौथा दृश्य.

अयोध्यामें राजा दशरथका पुत्रहेत ग्लानि करना इत्यादि।

दशरथ-(स्वतः) हा ! हमारे कोई सन्तान नहीं है, निस्सन्तानकी मोक्ष भी नहीं होती, अब क्या किया जावे, सन्तानोत्पत्तिके लिये क्या यत्न हो, अच्छा ! चलकर गुरुजीसे यत्न पूछं, (चले)

दशरथ-श्रीमान् गुरुजी(वशिष्ठ) को प्रणाम करता हूँ।

वशिष्ठ-आयुष्मान् राजन् ! कहो कैसे आना हुआ ?

राजा-(हाथ जोडकर) हे गुरुवर्य्य ! शास्त्रोंसे जाना जाता है, कि निस्सन्तानकी मुक्ति नहीं होती, इसका अत्यन्त शोक है, क्या करूँ ?

वशिष्ठ-चौपाई:-

धरहु धीर होइ हैं सुत चारी। त्रिभुवनविदित भक्तभयहारी ॥

परन्तु इसके लिये शृंगी ऋषिको बुलाकर पुत्रेष्टि यज्ञ कराना चाहिये.

राजा–जो आज्ञा भगवन् ! उन्हें बुलानेको अभी आदमी भेजता हूँ, अच्छा, जाता हूँ, प्रणाम. (गये)

(दूतसे) हे चतुर चर ! तुम शीघ्र जाकर अंग देशसे शृंगी ऋषिको सादर बुला लाओ ।

दूत–जो आज्ञा महाराज ! जाता हूँ (गया)

अंगदेशमें शृंगी ऋषिके पास दूतका पहुँचना ।

दूत–(शृंगी ऋषिसे) प्रणाम ऋषीश्वर !

चौ०–परम कृपाल सुनहु मुनिनाथा। सादर धरत चरण महँ माथा ॥
नाथ अवधपति मोहि पठावा। यज्ञ करन हित तुम्हहिं बुलावा ॥

ऋषि–प्रेम सहित जो बोलेउ राजा। अवसि चलब भूपतिके काजा ॥
हे दूतवर ! मैं अवश्य चलूँगा, चलो । (दोनों चले)

दोनोंका अवधमें पहुँचना ।

दूत–(राजासे) महाराज ! आये हैं शृंगी ऋषी ।

राजा–लिवा उनको सादर तू आवे अभी ॥

दूत–बहुत अच्छा, महाराज । (लिवालाता है)

राजा–(शृंगी ऋषिसे) करता हूँ दण्डवत महाराज आपको । (बैठिये)

ऋषि–ईश्वर सदा बढावे तुम्हारे प्रतापको ॥ (बैठते हैं)

राजा–(मन्त्रीसे) दो०–

सुनहु सुमन्त ध्यान दै, करहु यज्ञको साज ।
कुण्ड वेगि सजवाइये, आइ गये ऋषिराज ॥

मन्त्री–जो आज्ञा महाराज ! (सामग्री एकत्र करता है)

यज्ञ।

देव आह्वान मन्त्र–ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव रक्तवर्ण सूर्य्य इहागच्छ इह तिष्ठ पूजार्थ त्वामावाहयामि। ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ॥ हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥ सूर्य्यदक्षिणपार्श्वे त्र्यम्बक इहागच्छ इह तिष्ठ पूजार्थं त्वामावाहयामि ॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधि पुष्टि-वर्द्धनम्॥ ऊर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। इतिसर्वेषाम्।

हवनमंत्रः।

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यश्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् स्वाहा। ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधि पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्यो-र्मुक्षीय मामृतात् स्वाहा। ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी, भानुःशशी भूमिसुतो बुधश्च। गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्ति-करा भवन्तु स्वाहा। इति सर्वेषाम्।

अग्निदेव–(प्रकट होकर)

चौ०-जो वशिष्ठ कछु हृदय विचारा। सकल काजभा सिद्ध तुम्हारा॥
(हवि देकर) यह हवि बाँटि देहु नृप जाई। यथायोग्य जेहि भाग बनाई॥

(अदृश्य हुए)

राजा–बहुत अच्छा प्रभो! (हवि ले जाकर रानियोंमें बाँटते हैं)

पुत्रोत्पत्ति तथा मंगल गान।

कौशल्या–(चतुर्भुज रूप देख स्तुति करती हैं)

छन्दः-मैं दुहुँ कर जोरी-स्तुति तोरी-केहि विधि करौं अनन्ता।
माया गुण ज्ञानातीत अमाना, वेद पुराण भनन्ता॥
करुणा गुण सागर-सब गुण आगर-जेहि गावहिं श्रुति सन्ता।
सो मम हित लागी-जन अनुरागी-प्रकट भयेउ श्रीकन्ता॥
ब्रह्माण्ड निकाया-निर्मित माया-रोम २ प्रति वेद कहै।
मम उदर सोबासी-यह उपहाँसी-सुनत धीर मति थिर न रहै॥
कीजै शिशु लीला-अति प्रिय शीला-यह सुख परम अनूप अहै।
प्रभु चरित जे गावहिं-पद रति लावहिं-तेनहिं पुनि भवकूप लहै॥

दोहाः-विप्र धेनु सुर सन्त हित, लीन आप अवतार।
निज इच्छा निर्मिततनु, माया गुण गोपार॥

सारांश।

मनुष्य अपने उद्योगसे असाध्य और कष्टसाध्यको भी सुगम साध्यकर दिखाता है और जो असमय वा अनीतिसे कार्य्य किया जाता है उसका परिणाम बुरा ही होता है।

सूचना।

दोहाः-सुनिये ध्यान लगाय टुक, ऐ दर्शक समुदाय।
सुन्दर लीला रामकी, कल्ह पुनि देखिय आय॥

चौबोलाः-कल पुनि देखहु आय, आगमन विश्वामित्र महाना।
अवध भुआल निकट आकरके माँगे कुँवर सुजाना॥
राम लखन दोउ बन्धु जाहि विधि मुनि सँग कीन पयाना।
रक्षा यज्ञ करन पुनि लागे हवन मुनीगण ठाना

दौड़ः-ताड़िकाको ज्यों माराजी-सुबाहूं बहुरि सँहाराजी-मारि मारीच भगाये-सो सब लीला कालिह मित्रगण आइ लखौ मनभाये ॥ बोलो चारों भय्यनकी जय ॥

तृतीयाङ्क.

प्रार्थना ।

दादराः-ईश्वर लीजे खबरिया हमारी ॥ टेक ॥
हो निराश सब ओरसे स्वामी, आनपड़े प्रभु शरण तिहारी॥ईश्वर०१॥
नर तन पाय तुम्हें नहिं खोजा,जीति बाजी जगतमें हारी॥ईश्वर०२॥
काम क्रोध मदलोभके वशह्वै,जीवने तुम्हरी सुरति बिसारी॥ईश्वर०३॥
"वासुदेव"कहै विद्या बलदो,विद्या मांगैं खड़े हम भिखारी॥ईश्वर०४॥

कामना ।

भजनः-ब्रह्मचारी जगतमें आवें तो बेड़ा पार हो ॥ टेक ॥ पाप और ताप सब पाखण्डोंके जाल तोड़ैं-आवैं तो बेड़ा पार हो- ब्र०॥१॥देखो हा ! अविद्यासे पापोंका ज़ोर है-पापोंका ज़ोर है-दुखोंका शोर है ॥ आवैं०२॥ देखो, भीषम औ अर्जुनसे योधा हुये यहां भारी-भीषमसे व्रतधारी-अर्जुनसे बलधारी ॥ आवैं तो० ॥ ३ ॥ यहां गौतम, कणाद मुनि व्यास हुये बड़े ज्ञानी-ऐसे दिमाग़ होवें-भारतके दाग़ धोवैं-आवैं तो० ॥ ४ ॥ देखो, ब्रह्मचारी लखनने मारा था योधा मेघनाद-ऐसे व्रतधारी ब्रह्मचारी-पर उपकारी ॥ आवैं तो० ॥ ५ ॥

शिक्षा ।

ग़ज़लः–नित भलाईके लिये, तैयार रहना चाहिये ।
काम करना चाहिये, कुछ भी न कहना चाहिये ॥ १ ॥
वैरियोंके चालको, समझा करो ऐ दोस्तो !
ज़ातके अपमानको, हरगिज़ न सहना चाहिये ॥ २ ॥
धर्म्मकी नैया न डूबै, पापियोंके जालसे ।
इसलिये पतवारको, निज हाथ गहना चाहिये ॥ ३ ॥
प्राणप्यारे देशका, उद्धार करनेके लिये ।
ऐक्यताके सूत्रमें बँध, शक्ति लहना चाहिये ॥ ४ ॥
चेत "पुष्कर" सब करो, अब कर्म युग है आगया ।
भूलकर आलस्यके, नदिमें न बहना चाहिये ॥ ५ ॥

सूचना ।

दोहाः–सुनो उपस्थित सज्जनों ! कहूँ सबहिं समझाय ।
जेहि विधि विश्वामित्र मुनि, अवधनगरमें आय ॥

चौबोलाः–अवध नगरमें आय, कुँवर दोउ नृप दशरथके लीन्हें ॥
मारि ताड़िका रामचन्द्र पुनि,बध सुबाहुको कीन्हें ॥
बिनु फरसर मारीच दुष्टको, भगा वहांसे दीन्हें ॥
मुनिगण सब आनंद मगन है, यज्ञ भली विधि कीन्हें ॥

दौड़ः–जनकपुर गमन किये हैं जी–अहल्या तारिदिये हैं जी–कथा सुरसरी सुनाऊँ–शान्त होय यदि सुनो तोलीला अति उत्तम दरसाऊँ॥

प्रथम दृश्य ।

अवधपुरीमें विश्वामित्रका आगमन इत्यादि ।

विश्वामित्र–(स्वतः) या ईश्वर ! इन राक्षसोंके कारण यज्ञादि शुभकर्म्म करना

दुस्तर हो रहा है, इन अधर्मियोंका कैसे नाश हो, किन्तु विना नारायण ए मरेंगे नहीं, ओहो ! अब याद आया, कि:-

चौपाई:-सुन्दर दिनकर वंश उदारा। प्रभु अवतरेउ हरण महि भारा॥
यहिमिसदेखहुँप्रभुपद जाई। करि विनती आनहुँ दोउ भाई॥

बस, बस, यही ठीक है, इसलिये अब चल देना ही नीक है। (चले)

अयोध्या-दशरथ सभा।

(सभासदोंके साथ राजा विराजमान हैं-मुनिजी आते हैं)

विश्वामित्र-(द्वारपालसे)

दोहा:-द्वारपाल तुम वेग ही, जाहु नृपतिके पास।
मम आगमन सुनृपतिसों, तुरत हि करहु प्रकाश॥

द्वारपाल-(प्रणाम करके)

दोहा-जो आज्ञा मोहि करहु तुम, मुनिवर परम कृपाल।
जाय सुनाउब नृपतिको, सादर मैं ततकाल॥ (गया)

द्वारपाल-(सभामें)

दो०-हे रघुवंश मुकुटमणि, विनय करत तव दास।
श्रीयुत विश्वामित्र मुनि, आयो चह प्रभु पास॥

दशरथ-(उठकर) हे द्विजवरो ! शीघ्र चलो, मान्यवर विश्वामित्रजीको बुला लावें, (सब गये)

दशरथ-(मुनिसे) करता हूँ मैं प्रणाम हाथ जोड़ महात्मन् !

मुनि-सम्पति और सन्तति बढे कीर्ति हे राजन् !

राजा-अच्छा महाराज ! पधारिये (ले जाकर बैठाकर पाँव धोते हैं) तथा (भोज्य-पदार्थ उपस्थित करके) हे भगवन् ! आज मैं धन्य हुआ, कृपाकर प्रसाद कीजिये।

मुनि–हे राजन् ! मैं तेरी सेवासे अत्यन्त सन्तुष्ट हुआ ।

राजा–चौपाई–

केहि कारण आगमन तुम्हारा। कहिय सो करत न लाउब बारा ॥

हे भगवन्। आज्ञा प्रकाश कीजिये।

मुनि–भजनः–राजन् ! राम लखन मोहि दीजे ॥ टेक ॥
चौ०–असुर समूह सतावहिं मोही। मैं याचन आयेउँ नृप तोही ॥
लखन०॥ १ ॥ राउर सुयश लाभ ढोटनको, मुनि सनाथ सब कीजे ॥
लखन० ॥ २ ॥ रिपु रण दलि मख राखि कुशल अति, अल्प दिनन
घर अइहैं ॥ लखन० ॥ ३ ॥ तुलसिदास रघुवंश तिलककी, कवि
कल कीरति गइहैं ॥ लखन० ॥ ४ ॥

राजा–(घबड़ाकर) चौपाईः–

चौथेपन पायेउँ सुत चारी। विप्र वचन नहिं कहेउ विचारी ॥
माँगहु भूमि धेनु धन कोषा। सर्वस देउँ आजु सह तोषा ॥
देह प्राणते प्रिय कछु नाहीं। सोउ मुनि देउँ निमिष यक माहीं ॥
सब सुत मोहि प्राणकी नाईं। राम देत नहिं बनै गुसाईं ॥
कहँ निशिचर अति घोर कठोरा। कहँ सुन्दर सुत परम किशोरा ॥

अतः–सवैया–

माँगिये राज समाज सबै, सुख साजहु दै सुख भूरि भरौंगो।
धाम, अराम, धरा, धन, ग्रामन, देत न नैक बिलम्ब धरौंगो ॥
बंदि, करौं चलिके मख रक्षन, लक्षन रक्षस संग लरौंगो।
पाँव परौं, न डरौं यमके, आँखिन ओट न राम करौंगो ॥

मुनि–दोहाः–दानी हेर न हानि कछु, दान देत हरषात।
तनिक बातमें गात सब, नृपवर तव थहरात ॥ लखन० १ ॥
डरपत हौ साँचेहु सनेह वश, सुत स्वभाव बिनु जाने ॥ लखन०२ ॥
चौपाईः–नहिं जानत तुम कोप हमारा।
करउँ भस्म पुर अरु परिवारा ॥ लखन० ३ ॥
पूछिय वामदेव अरु कुल गुरु, तुम पुनि परम सयाने ॥ लखन० ४ ॥
वशिष्ठ–छन्दः–इन्हहीं के तप तेज जगत की रक्षा कारि हैं।
इन्हहींके तप तेज सकल राकस संहारि हैं ॥
इन्हहींके तप तेज, बाढ़ि हैं तनके तूरण।
इन्हहींके तप तेज, होयंगे मंगल पूरण ॥
हे राजन्! ए तुम्हारे पुत्र ब्रह्मावतार हैं, सन्देहका ठौर नहीं, अतः
चौपाईः–राउ न मन सन्देह करीजे। सादर तनय मुनीशहिं दीजै ॥
राजा–(राजपुत्रोंको चरणोंको छुवाकर सविनय समर्पण करके)
चौपाईः–
नाथ! प्राण सम ए सुत दोऊ। तुम मुनि पिता आन नहिं कोऊ ॥
हे भगवन्! अब आप ही इनके रक्षक हैं, देखियेगा (सौंपते हैं)
विश्वामित्र–हे राजकुमारौ! शीघ्र महलमें जा माताओंसे बिदा होकर आओ. विलम्बका अवसर नहीं है, शीघ्र चलना चाहिये। (रामादि महलमें गये)
राम–लक्ष्मण–(आकर) चलिये प्रभो! हम लोग तैयार हैं। (सबको प्रणाम करते हैं)
(दोनों भाई मुनिके संग गये)

वि. मि.–राजकुमारो ! ताडका सुबाहु आदि राक्षसोंसे यज्ञ हवन आदि करना दुस्तर हो रहा है, ए बडे उपद्रवी हैं, तपस्थल अपवित्र कर देते हैं, अब आश्रम निकट ही है चलके स्वयं देखोगे ।

राम–हे मुनिवर ! यह ताडका कौन हैं ? और क्यों उपद्रव करती है ?

वि. मि.–हे राजकुमार ! यह ताडका सुकेतु यक्षकी कन्या है, इसने तप द्वारा ब्रह्माजीसे दश हजार हाथीके बलका बरदान प्राप्त की थी, जंभके पुत्र सुन्दके साथ व्याही गयी थी, जिससे मारीचकी उत्पत्ति हुइ । अनिष्ठके कारण महर्षि अगस्त्यने सुन्दका नाश किया, तब ए माँ बेटे मुनिको खाने दौडे, ऋषिने शाप दिया दोनों राक्षस हो गये, उस दिनसे ए दोनों सब शुभ कर्म्मों तथा साधु सन्तोंका उपद्रव किया करते हैं, ताडका अत्यन्त भयानक है । स्त्री समझ न छोडना, समझा । (आश्रममें पहुँचते हैं)

द्वितीय दृश्य ।

तप स्थल ।

मुनिगण प्रातः उठ ईश्वरकी प्रार्थना गाते हैं.

गज़ल–हे प्रभो ! तेरी शरणसे, फिर कहीं जाना हो ।
माग दिखला दे वही, पीछे जो पछताना न हो ॥ टेक ॥
हे प्रभो ! तव कंज पदका, मन मेरा मधुकर बने ।
है महाचंचल इसे, दुनियामें भटकाना न हो ॥ हे प्र० ॥
दान भक्तीका मुझे, देकर प्रभो ! सत् ज्ञान दो ।
काम, मद, लोभोंमें पड़कर, दिल ए दीवाना न हो ॥हे प्रभो०२॥
याद हे जगदीश तेरी, हम न भूलैं एक क्षण ।
अन्त अवसर पर हे स्वामी, जिससे शर्माना न हो॥हे प्रभो०३॥

जब करो दाया तुम्हीं, मायासे छूटें हम सभी।
फिर कभी तृष्णा नदीसे,हमको भय खाना न हो॥हे प्रभो०४॥
जीतेजी संसारमें, अपना बनाते हैं सभी।
अन्तमें तेरे सिवा, कोई अपना बेगाना न हो ॥ हे प्रभो० ५ ॥

ताड़का-अरे आओ रे मेरे गणों ! बहुत जल्दी आओ, आज अच्छे मुलायम २ भी खानेको मिले हैं, चलो जल्दी चलो, (हा हा कार करके दौड़ती है)

वि० मि०-देखिये रामजी ! यही ताड़का है जो शोर मचाती आती है, इसे शीघ्र मारिये।

श्रीराम-जो आज्ञा महाराज ! मारता हूं (बाण चला मार डालते हैं)

वि० मि०-(दोनों कुमारोंको दिव्यास्त्र सिखाते हैं)

श्रीराम-हे मुनीश्वरो ! अब आपलोग निर्भय यज्ञ करें, मैं सावधानी करता हूं।

मुनिगण-कुंवरजी ! अवश्य प्रबन्ध होगा।

मारीच सभा।

मारीच-(सेवकोंसे) शीघ्र खाने पीने तथा खेल कूदका प्रबन्ध करो। बज्रदन्त-ताम्रनैन-लोकानल तीनों साथ जाओ।

सेवक-जो आज्ञा, सर्कार। जाते हैं)

सेवकगण-(मैदानमें आकर कूद २ गाते हैं)

आओ सब यारो मिलकर खेलैं है अच्छा मैदान ॥ टेक ॥
निशिचर पतिकी आज्ञा मानें सब कोई इस आन ॥ आओ० ॥
साधु,सन्त, वैरागी, ब्राह्मण मारि करो खलिहान ॥आओ०२॥
बम २ बम् २ कहकर करलें शिवशंकरका ध्यान ॥ आओ०३॥
कड़ २ कड़ २ पंजर तोड़ैं, चाबैं सभी जवान ॥ आओ० ४ ॥
कूदैं फिर हम धम्२धम् २ धम धम धम्म धमान॥आओ०५ ॥

घुट २ घुट २ लोहूको भी कर लेवैंगे पान ॥ आओ० ६ ॥
शीश तोड़के गेंद बनाके खेलैंगे चौगान ॥ आओ० ७ ॥

एक–अरे ताम्रनैन । देर हुई जाती है, चल्के सामान ठीक करने हैं ।

ताम्रनैन–भाई वज्रदन्त । क्यों घवडाते हो वनालेंगे,

लोकानल–नहीं जी ढीलापन अच्छा नहीं (सव जाके प्रबन्ध करते हैं)

मारीच आगमन ।

मारीच–(गाता हुआ आता है)

गाना–आओ २ नाचो गाओ–मां भून खाओ खाओ–करो २ यारो मदपान ॥ टेक–खाना बनवाके–बोतल सजवाके लाओ–लाओ २ चटनी अचार ॥ आओ० साधुओंको मारो २–तपसीको काटो २ कर दो उपद्रव अपार ॥ आओ० २ ॥

मारीच–(सेवकोंसे) क्यों सेवको ! क्या २ सामान तैयार किया है ।

वज्रदन्त–ह, ह, ह, ह, सरकार सब कुछ तो ।

ताम्रनैन–महराज ! ई, ऊ, कुल्लि,

लोकानल–ए महराज ! बताई, हम, मजे मजेकी ।

मारीच–साफ़ २ क्यों नहीं वताते ।

व० दं०–शेरः–पिसवाके पिस्सू खासी पूरीबना ई है ।
जो मूतम गीधोंके खूब तलाईहै ॥

ता० नै०–हड्डीको चूरकरके बनाया है मैंने भात ।
चींटे मटेकी दालको केंवटी बनाई है ॥

लोका०–तरकारी विषखपरेकी हैगी मसालेदार ।
बड़ी बड़ा फुलौरी आतोंकी बनाई है ॥

मारीच—अरे नालायको! कुछ चटनी अचारका प्रबन्ध नहीं किया, क्या?

सब—अरे मोरे सर्कार! सब कुछ है। सुनिये तो सही।

ब०दं०—दोहा—मेढ़ककेर मुरब्बा, खटमलकेर अचार।
सिरका किलनोंका बना, बड़ा ज़ायकेदार॥

ता०नै०—और मोर महराज! तौ बड़ी मिहनतकेर अचार हौ देखिये, सुनाता हूँ।

सवैया—लेय छछूँदर एक हजार, पनालेके पानीमें खूब पकाये।
लायसियार, बिलारिअनेक, सोलोनासुतारीके साथ मिलाये॥
जूआँ औचीलर, मांछी, मसा, यह गर्ममसाला सबै सनवाये।
पांचबरीस परिश्रमकै, महाराजकेहेत अचार बनाये॥ हो, हो,

लोका०—गानाः—मसालेदार चटनी, बड़ी मज़ेदार रे॥ टेक॥
गिरगिट, बिस्तोइया, औ झींगुर पीसा, चीलर सुगंधीको खूबै सनाय रे॥ मसाले० १॥ लोमड़ी औ सेहीकी आतें निचोड़ी, सोऊ मिलाया है वही मँझार रे॥ मसाले० २॥

मारीच—अबे, अबे, नशे पत्तीके लिये क्या?

सब—हो, हो, ई, तौ सब पहले ही,

गाना—पियो २ मोरे राजा मज़ेकी है रम्॥ टेक॥
ह्विस्की, बराण्डी बालीं मज़ेकी, पीनेसे जाके नशा, न होय कम्॥ पियो पियो० १॥ महुयेकी मदिरा दो आतशी बनाई, जाके पीनेसे छूटै हैं दुनियाकी ग़म्॥ पियो पियो० २॥

मारीच, सुबाहु इत्यादि—(खाते पीते और खुश होते हैं) अहा हा २ ओहो हो २

दूतका ताड़काकी मृत्युपर शोक करते हुए आना।

दूत—(संसारकी अनित्यताका परिचय देता हुआ गाता है)

ग़ज़लः–दुनिया भी क्या ही मुक़ाम है अफ़सोस है अफ़सोस है।
सदा किस कायाँपर क़याम है अफ़सोस है अफ़सोस है ।।टेक।।
हुई सुबह सबको हुई ख़ुशी, मचे चहचहे हुआ जग सुखी।
हुई शाम सुबह भी चल बसा, अफ़सोस है० ।। १ ।।
जिसे देखा था जलवा नशीं किसी चीज़की थी कमी नहीं।
वही आज है ग़मगीन हुआ अफ़सोस है० ।। २ ।।
छोटेसे होता है बड़ा, जो बड़ा था वह नीचे पड़ा ।।
जो था खिला वह गुल गिरा, अफ़सोस है० ।। ३ ।।
जिनपर था नाज़ वे हैं कहां, हुए अपने बेगाने यहाँ।
नहीं चेतता फिर क्यों जहाँ, अफ़सोस है० ।। ४ ।।
है भरोसा जीनेका क्या भला, यही सोचो अब चला अब चला।
करो क्यों न हो सके जो भला, अफ़सोस है २ दुनिया० ५ ।।

भाइयो ! यह जो पर्वत शिखरके समान मृतक पडी है, ताडका दश हजार हाथींका बल रखनेवाली कभी यह न जानती थी कि मैं भी मरूँगी, अनेक निर्दोषी जीवोंका संहार की, आज वही अवसर इसे भी आया. बस, मनुष्यको अत्याचार न करना और उपकार तथा शुभ कर्म करना चाहिये । अच्छा, चलके महाराज मारीच इसके पुत्रको समाचार सुनाऊँ (जाता है)

अरे, मोरे महराज रे। ऊँ, हूँ, हूँ, हूँ (निकट पहुँचता है)

मारीच–अबे, क्या है रे।

दूत–अरे, हाय, मोरे महराज रे। ऊँ, हूँ, हूँ, हूँ,

मारीच–अबे, गधेकी दुम, कुछ कहेगा भी तुम।

दूत–अरे, मोरे महराज रे, हाय २ रे, का कहवँ रे। ऊँ, हूँ, हूँ, हूँ,

सुबाहु–अबे, पाजी, क्यों हाय हाय कर रहा है, बता तो सही।

दूत—अरे, हाय रे, का कही, अरे तोहार।

सुबाहु—अबे, हमार क्या।

दूत—अरे, सरकार, तोहार, चा—ची।

सुबाहु—कैसी चाची।

दूत—अरे तोहार, ताडका चाची।

सुबाहु—ताड़का चाचीको क्या हुआ।

दूत—मर गई।

सुबाहु—सच, मर गई। अरे कैसे मर गई।

दूत—अरे, जियरा, परनवां, सब निकारि गवा।

सुबाहु—अरे भइया! ताड़का चची मर गई।

मारीच—अरे कैसे मरी रे। हाय २ (सब रोते हैं)

दूत—अरे,वही डढ़ियल तपसियाके साथ दुइ ठो लरिका आये हैं, उन्होंने मार डाला

मारीच—अरे वे कौन हैं, सो तो बता।

सुबाहु—अरे बतारे।

ग़ज़ल—हमारी ताड़का चाचीको, किसने हाय मारा है॥ टेक॥

हमारा दल निशाचरका,हुआ उस बिन बेचारा है॥हमारी०१॥
पिलाती थी सुरा मुझको, खिलाती मांस देवोंका।
बिना उसके नहीं जगमें, रहा कोई सहारा है॥ हमारी० २॥
बली थी वह अधिक सबसे, कँपाती थी सभी जल थल।
कहांसे काल आया जो, उसे भी आ पछारा है॥ हमारी० ३॥
मुसीबत आ पड़ी मुझ पर, जिऊँ कैसे बिना उसके।
नहीं होता दिखै जगमें, हमारा अब गुज़ारा है॥ हमारी० ४॥

चलो सब मिलके रजनीचर, जहाँ चाचीका बरी है।
पकड़कर उसको खाजाऊँ, यही दिलमें विचारा है॥हमारी०५॥

दूत–चलिये, मैं दिखा दूँगा, परन्तु दूर हीसे।

मारीच–क्यों, क्यों, दूरसे क्यों, तुझे आगे २ चलना होगा।

दूत–तो महाराज! मैं नौकरीसे इस्तीफ़ा दूँगा। (हथियार फेंक देता है)

सुबाहु–अच्छा, चलके दिखा ही दे, मैं अभी मारके बदला चुकाता हूँ।

दूत–चलिये, (उँगलीसे दिखाकर पीछे हटता हुआ) देखिये महाराज! वहां दोनों हैं जो धनुष चढ़ा रक्षा कररहे हैं, लो अब दिखा दिया, मैं जाता हूँ।
(उद्यत होता है)

मारीच–अबे, ठहर।

मुनिगण–(यज्ञ आरम्भ करते हैं) मन्त्रः–ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय
आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्रवन्तु नः।

मारीच–लो, देखो, ए दढ़ियल तो यज्ञ करलेना चाहते हैं, अरे! दौड़ो, दौड़ो।

चौपाईः–मारु २ धरु शीशहिं काटू। टूक २ करि सब कहँ बाँटू॥

सुबाहु–शेरः–पकड़ टाँग इनको ज़मीं पर पछारो।
गला दाबकर प्राण इनके निकारो॥
अरे इन्हीं नन्होंने चाचीको मारा।
बना काम मेरा ए सारा बिगारा॥ (सब दौडते हैं)

विश्वामित्र–देखिये राजकुमार! सब दुष्ट आ गये।

श्रीराम–आनेदीजिये महाराज! कोई भय नहीं। (बाण सुधारते हैं)

मारीच–शेरः–अरे हाय! तूहीने माँकोहै मारा।
सँभल वार थक देखले तू हमारा। (युद्ध करता है)

श्रीराम–शेरः–सँभल सामने बाण मेरा सँभाल।
अभी मार तेरी भुलाता हूँ चाल॥(बाण मारते हैं वह उड जाताहै)

राक्षसगण–आओ २ हमसे लड़ो, हमलोग जिन्दा ही खाजावेंगे । (लड़ते हैं)

लक्ष्मण–आओ दुष्टो ! मैं तुम सबोंका काल तैयार हूँ, आओ; सब आओ

(सब राक्षसी सेना संहार करते हैं)

सुबाहु–(श्रीराम)

शेरः–अरे छोकरे ! तू ज़रा भय न खाया ।
जो चाचीको तैंने है यम पुर पठाया ॥
मज़ा उसका चख टुक तू आ सामने ।
तुझे भी पठाता हूँ यमके कने ॥ (युद्ध करता है)

श्रीराम–(ललकार कर)

शेरः–सँभल सामने बाण मेरा सँभाल ।
सुबाहू समझ आगया तेरा काल ॥ (बाण मारकर निष्प्राण कर देतेंहैं)

देवतागण फूलकी वर्षा कर स्तुति करते हैं.

रेखताः–हे राम ! सुभग श्याम छवी हियमें बस रही ॥ टेक ॥ मुख चारु सुधाकरसे सुधा है बरस रही ॥ हे राम० १ ॥ है क्रीट मुकुट शीशपै, रत्नों जड़ा हुआ । कुण्डल मकर श्रवणोंमे सुभग मन्द हँस रही ॥ हे राम० ॥ २ ॥ है भाल तिलक मोतियोंकी माल गल लसै । मणि मेखला मनोहर कटिमें है कस रही ॥ हे राम० ॥ ३ ॥ हाथोंमें धनुष बाण सुभग पीत पट धरे । सेना निशाचरोंकी क्षणकमें झुलस रही ॥ हे राम० ॥ ४ ॥ ऋषि संग युगल बन्धु छटा भावती मनकी । “किंकर” के मूर्ति सुन्दर हियमें है धँस रही ॥ हे राम० ॥५॥

बोलो युगल बन्धुकी जय ।

तीसरा दृश्य.

जनकपुर गमन—मार्ग कार्य्यादि.

विश्वामित्र—हे कुमारो ! मिथिलाके राजाके आजकल बड़ा उत्सव है, धनुषयज्ञ है। बुलावा आया है, हम लोग यज्ञ देखने जाँयगे, अतः तुम दोनों भाई भी साथ चलो।

श्रीराम—जो आज्ञा, गुरुजी, चलिये। (सब चले)

श्रीराम—(मार्गमें मुनिजीसे)

चौपाई:—

कहहु नाथ ! यह आश्रम कैसा। खग, मृग,जीव,जन्तु, बिनु ऐसा॥
तिय अकार कस शिला सुहाई। कारण कहहु नाथ समुझाई॥

हे भगवन् ! इसका वृत्तान्त स्पष्ट वर्णन कीजिये।

विश्वामित्र—हे राजकुमार ! सुनिये।

चौपाई:—

कन्या यक विरंचि उपजाई। धरी धरोहर गौतम पाहीं॥
कछु दिन लागि परीक्षा कीन्हा। है प्रसन्न गौतम कहँ दीन्हा॥
मुनि परोक्ष महँ सुरपति आई। मुनि तनु धरि रति कीन्हे जाई॥
सुरपति जब गृह बाहर भयऊ। आइ मुनीश देखि तेहि लयऊ॥
होइ सहस भग इन्द्र तुम्हारे। शिला अहल्या होय उचारे॥

सो हे कुमार ! दोहा:—

गौतम नारी शाप वश, उपल देह धरि धीर।
चरण कमल रज चाहती, करहु कृपा रघुवीर॥

श्रीराम—बहुत अच्छा महाराज ! जो आज्ञा, आपकी। (पैरसे शिला मस्तक छूते हैं)

अहल्या-(प्रकट होकर स्तुति करती है)

छन्दः-जेहिं पद सुरसरिता-परम पुनीता-होइ प्रगट शिव शिर आई।
सोई पद पंकज-जेहि पूजत अज-मम शिर धरेउ हे रघुराई ॥
मैं नारि अपावन-प्रभु जग पावन-असुरन अरि जनसुखदाई।
हे राजिवलोचन-भवभय मोचन-पाहि २ शरणन्ह आई ॥

दोहाः-और न चाहत नाथ कछु, मम मन रुचि सुनिलेहु।
अनपायनि पद पद्मकी, भक्ति कृपा करि देहु ॥

श्रीराम-तथास्तु। अब तू ऋषिजीके पास जा।

अहल्या-(लोगोंसे) ऐ लोगो ! सुनो,

दोहाः-अस प्रभु दीनबन्धु हरि, कारण रहित कृपाल।
रे नर ! पामर ताहि भजु, छाड़ि कपट जंजाल ॥

बोलो श्रीराम लक्ष्मणजीकी जय। (गई)

चौथा दृश्य।

गङ्गोत्पत्ति तथा पण्डोंके ढंग।

श्रीरामजी-(मार्गमें चलते गंगानिकट पहुँच मुनिसे)

चौपाई-अब सुरसरि उत्पति मुनिराई। कहिय नाथसबकथा बुझाई ॥

विश्वामित्र-हे रामजी ! आपके पूर्वजोंमें राजा सगर हुए। उन्होने पुत्रके हेत, अपनी दोनों रानियों समेत १०० वर्ष तप किये, भृगुजी आय रानियोंसे वर माँगनेको कहा। एक रानीने एक और दूसरीने साठ हज़ार पुत्र माँगे। मुनिने कहा तथास्तु। तिस पीछे अयोध्यामें आय रहे। समयान्तरमें सब पुत्र पैदा हो बड़े हुये। अकेले पुत्रका नाम असमंजस था, उसकी ऐसी बुरी प्रकृति थी

कि विवाहित होजाने उपरान्त भी प्रजाके बालकोंको नावमें चढ़ा सरयूमें डुबाया करता था, जिससे प्रजाकी पुकारपर राजाने उसे देशसे निकाल दिया। उसकी गर्भवती स्त्रीसे अंशुमान् पैदा हुआ। जो राजा सगरको अति-प्रिय था! कुछ काल बीतनेपर राजा सगरने अश्वमेध यज्ञके निमित्त श्यामकर्ण घोड़ा अनेक रक्षकोंसे संरक्षित करके छोडा, किन्तु इन्द्रने उसे चुराकर कपिल मुनिके तपस्थलमें उनके पीछे बाँध दिये। रक्षकोंने आकर राजासे समाचार कहा। राजाने साठ हज़ार राजपुत्रोंको शोधमें भेजा। वे पृथ्वीतक खोद डाले। अन्तमें खोजते २ मुनिके स्थानमें बँधे हुए घोड़ेको देखा। और क्रुद्ध हो मुनिको बहुत दुर्वचन कहे। समाधि भंग होनेसे ऋषिने शाप दिया वे सब भस्म हो गये। विलंब होनेपर उनक खोजमें अंशुमान भेजे गये। उन्हें मार्गमें गरुड़जीने मिल सब वृत्तान्त सुनाया और ले जाकर वहां पहुँचा दिया और यह भी कहा कि ऐसा उपाय करो जिसमें तुम्हारे चाचा सब उद्धार पावैं, अतः हे पुत्र उचित होगा कि:-

सोरठा:-करिये सोइ उपाय, गंगा आवहिं अवनिमें।
दर्शनसे अघ जाय, मज्जन कीन्हें परम सुख॥

अंशमान् मुनिसे प्रार्थनाकर अश्व ले घर आये, राजाने अश्व पाय यज्ञ किया। कुछ दिन पीछे अंशुमानको राज सौंप तपको चले गये। जब अंशुमानके पुत्र दिलीप वडे हुये तो सब कथा गंगा लानेके लिये समझाय दिलीपको राज दे तपको गये किन्तु गंगा आनेसे पूर्व ही स्वर्गवासी हुये। इसी प्रकार दिलीपने भी अपने पुत्र भगीरथको राज्य सौंप गंगा हेत तपको चले गये। किंतु प्रथम ही देहान्त हो गया। तो पीछे भगीरथने वही पथ अनुसरण किया, और अनेक यत्नों तथा तप द्वारा गंगाको धरातलमें लाये। उनके पुरुषार्थसे ६० हजार पूर्वजोंका उद्धार हुआ। साठ हजार राजपुत्रोंने जो पृथ्वी खोद डाली थी, वही समुद्र हुआ, कपिलजीके स्थानके पास ही गंगा और समुद्रका संगम हुआ, जो "गंगासागर" तीर्थके नामसे प्रसिद्ध

है। मकर संक्रान्तिपर यहांके स्थानका अत्यन्त पुण्य फल है। सो हे राजकुमारो! इस पवित्र सुरसरिमें चलकर स्नान करिये। (सब गंगातट जाते हैं)

पंडाओंकी दशा।

एक पंडा–क्या कहैं भैया हरखू! आजकल यजमानोंकी ऐसी आमद बन्द होय गइल कि भंग बूटीका भी जुगाड़ मुशकिल भइल बाड़ैस।

हरखू–हाँ भाई निरंजन! ठीक तो कहत बाड़ह, आज चार दिनसे हमनी भाँग न खइलीं। जी घबड़ाला, का करीं।

निरंजन–रउआँ! का कहीं, बहुत बुरा दिन आइल बा।

हरखू–कितने लोग कहइलें कि भंग भूसा ना खइला चाही। का छोड़ि देईं।

निरंजन–मूरखनकी बातनपर कान न दइल करली, भंगके गुण ना जानै लें। थोड़ीसी सिद्धी मोरे पास बचल बाड़ै, बनाओ तौ गुण हम न बताईला।

हरखू–तब तौ रउआँ जिअउलीं न। लाई हम बनइवीं न।

निरंजन–लेंई लेंई, जल्दी करीं (देता है)

हरखू–(भंग पीसता हुआ) अच्छा भंगके गुण कहीं न।

निरंजन–अच्छा भाई! सुनो।

गाना–मन मैल मिटै–तन तेज बढ़ै–दे भंग रंगका लोटा॥ टेक॥
सौ रोग टलै–सौ सोग जलै–करै भंग अंगको मोटा।
जब तार जमै–आज़ार रमै–नौ हाथ बढ़ै जी छोटा॥
तन साफ़,मन साफ़,हो साफ़ आदमी खोटा॥ मनमैल० २॥
लैकन्द दूधमें घोला–तब ठाट बना अनमोला–
फिर छान भंगका गोला– हरबार बोल बम्भोला।
बड़े भोर नहाले गंग–जमाले भंग–निराले ढंग–
उठाला जंगी कूँड़ी सोंटा॥ मन मैल० २॥

हरखू-बस, यही कि और भी।

निरंजन-बैठल सुनल करीं, हम सब सुनाईला न, सुनीं।

दोहाः-काहेको जप तप करै, काहेको व्रत दान।
भंग मिर्च भोजन करै, हृदय बसैं भगवान॥ १॥
हरी भंगमें हरि बसैं, भूरीमें भगवान।
या विजयाके सकल गुण, को करि सकै बखान॥ २॥
भंग कहै सो बावला, विजया कहै सो कूर।
इसका नाम कमलापती, रहै नैन भरपूर॥ ३॥
गंग भंग दोउ बहन हैं, बसैं शम्भुके संग।
मुर्दा तारन गंग हैं, ज़िन्दा तारन भंग॥ ४॥

सूख मारै फंका तो देखै गढ़ लङ्का। घोरि २ पीवे तो लाख बरस जीवे।
इसलिये-छान, छान, छान, किसीका कहा न मान।
जो यारोंकी करै बदमोई, उसके वंशमें रहै न कोई॥
रहैभीतो काना,कुबड़ा लूला,लंगड़ा,ऐंठता गोंयठतापड़ारहै
जो हमैं देखि जरैं उसके साढ़े नौ प्राणी मरैं-उनके न होय
तो इष्ट मित्रोंके यहाँसे लै पूरा करैं (वट्टा चलता है)

हरखू-तब तो बडी गुणकारी वस्तु जानि पडैली और कुछ।

निरञ्जन-सुनल, करह। हम सब कही ला।

कवित्तः-खाय देखे बीजबन्द असगन्ध आदि खाय देखे, मैंने सेमल-
का मूसरा। दिल्लीके हकीम वैद सब देखि डारे, काहूसे
न सुधरयो कारजको खूसरा॥ बंग औ बतासा बहु पिये
दूध डारि २, ताहूते बन्यों है नाहिं खिष्टक काल फूसरा।

कहै मस्तान चौदह विद्याकी निधान भैया, भंगके भरोसे मैंने व्याह किया दूसरा ॥ १ ॥

सवैयाः—योगी, यती, तपसी सब खात हैं, खात अहैं सब पंडित ज्ञानी।
भंग औ मिर्चेकी भूति बड़ी, महिमा इसकी सिगरो जग जानी।
रङ्क अरु राउ सबै यहि छानत, देवनमें महादेवहु मानी।
गंगसे दूनी तरंग उठै, जब अंगमें आवत भंग भवानी ॥ २ ॥

दोहाः—पहिले पहरे जो कोइ छानै, वाकी लम्बी डीठ।
उड़त चिरइया वह पहिचानै, गिरी सड़कमें ईंट ॥
॥ सवेरे फेर छनैगी भंग ॥ १ ॥
दुसरे पहरे जो कोइ छानै, वाके लम्बे कान।
तवा कटोरा बेंचके, धर बूटीपर ध्यान ॥ सबेरे फेर० ॥ २ ॥
तिसरे पहरे जो कोउ छानै, ज्यों भादौंकी कीच।
घरके जानें मर गये, आप नशेके बीच ॥ सबेरे फेर० ॥ ३ ॥
चौथे पहरे जो कोइ छानै, बच्चा आपी आप।
बिन जोरू बिन सास ससुरके, छः बच्चेका बाप ॥ सबेरे फेर० ॥ ४ ॥

कवित्तः—तन हरा, वदन हरा, खिला हुआ चमन हरा, चौतरफ ज़मीन आसमान सब हरे हरे। भंगकी तरंगमें बहार लहर बहर मौज, कोठरी दालान सायबान सब हरे हरे। खेत, धान, पान, बौर, बेल, बाग़वान सब्ज़ भङ्ग पीके देख ले जहान सब हरे हरे। चाटमें मिठासके उदास दिल कभी न हो, देख ले मिठाईकी दुकान सब हरे हरे ॥ ३ ॥

हरखू—बूटी तो तय्यार है।

निरंजन—लाओ छान डालैं, (साफीसे छानके दोनों पीते हैं)

दोनो—(मस्त होकर)

बम् बम् बम् भोला—भेज सोने और चांदीका गोला । ५६ करोड़ की चौथाई—चौदह पन्द्रह बरसकी लुगाई ॥ बे बियाही बे निकाही—हो किसी अमीरकी जाई—बैठे २ मौज उड़ाई ॥

२ बम् ३ बिहारी—सोलह फुलका और दाल नियारी—
घी परसै तो मरज़ी तिहारी ।

३ आवै ३ ऐसी लहर आवे—कि हाथीका सवार भुनगाही नज़र आवे।

४ बम् २ भोला बम् २ भोला—घोटों पीसो छानो गोला ।

५ जो करैं भङ्गकी गिल्ला वाकी माँ कुतिया वाप पिल्ला ।

६ भेज दे डलेके डले-सदा रहैं भङ्गमें पले और दुश्मनका कलेजा जले

शिखरिणी छन्द—

अधेलेकी बूटी मिरच दमड़ीकी लैलई ।
मसाला पैसेका रगड़कर गोली करलई ॥
लिया साफ़ी पानी जुगुत करि छानी सहलमें ।
पियेगा जो कोई हरि हर भजेगा लहरमें ॥ १ ॥
साधो खाई सन्तन खाई, खाई कुँवर कन्हाई ।
जौन भङ्गकी निन्दा करि है,ओकां खाइ कालिका माई ॥

वस, वस, रउआँ समझलीं नूँ।

विश्वामित्र तथा राम लक्ष्मणका आना ।

विश्वामित्र—(पंडोंसे) क्यों जी ! तुम लोग पागल हो क्या ? जो अट्ट सट्ट तथा अश्लील (गन्दी) वातें बकते हो ।

निरंजन–ना महराज ! मैं तो श्रीविजया महरानीकी महिमा कहत रहलीं ।

वि० मि०–तो तुम लोग भङ्गी हो क्या ?

निरंजन–अरे महराज ! रउँआँ का कहत तानी, हमनी भंगी ना हवीं, हमनी पंडा हयीं नजी । भंग तो बड़ी गुणकारी वस्तु है, इसे तो शिवजीने भी ग्रहण किया है ।

वि० मि०–छिः छिः । क्या अनर्थ बकते हो । भला भंग गुणकारी हो सकती है, कदापि नहीं, सुनो चरकसंहितामें लिखा हुआ है ।

श्लोकः–न रोगमूलं किमु भङ्गपानम्,न दुःखमूलं किमु भङ्गपानम् ।
न हानिमूलं किमु भङ्ग पानम्,ज्ञात्वेति हेयं ननु भङ्गपानम् १

अर्थ–भंग पीना सब रोग तथा दुःख और हानियोंकी जड़ है, अतः भंग न पीना चाहिये ।

दृष्टा न यैः कल्मषपेटिकास्ते, पश्यन्तु भङ्गां हृतबुद्धिसाराम् ।
किं किं न दुर्वृत्तिमसौविधत्ते, भङ्गस्तरंगैर्व्यसनी व्यधावत् ॥ २ ॥

जिन्होंने पापकी पेटी न देखी हो, वे भंगको देख लें, जो बुद्धिको हरनेवाली है । इसे पीनेवाला क्या २ बुरे कर्म्म नहीं करता,अतः भंग न पीना चाहिये ।

सारङ्गधरमें लिखा है कि–

श्लोकः–पूर्वं व्याप्याखिलं कायं, ततः पाकं च गच्छति ।
व्यावायत चादिभंगा, फेनादयथा समुद्भवम् ॥

जो औषधि अपक्व होनेसे खानेपर शरीरमें व्याप्त हो खाये पीये हुये पदार्थोंको भी निकम्मा कर देती है । उन्हीं व्यावाय पदार्थोंमें भंग शिरोमणि है, और सुनो–

कवित्तः–भंग भूसे को बटाय, सौंफ़ कासिनी मिलाय, भंग खायेसे अनेक कष्ट अंगमें उभारती । करती जलोदर कठोदर

भगन्दर अरु बवासीर सन्निपात दस्तको बढ़ावती ॥ कर्म्म धर्म द्रव्य लेय, बुद्धिहू बिगाड़ि देय, क्रोध, रोग मृत्यु देय बावरो बनावती । मानो ए प्रमाण, सुनो भंगड़ सुलतान, न हो पीकर शैतान, यह कुमति चलावती ॥

दोहाः–पीवे भंग न घोंटकर, यह मानो सिख एक ।
पीवत ही मिट जात है, विद्या बुद्धि, विवेक ॥

कवित्त–द्रव्यको बिनाश करै, मोहको प्रकाश करै, आलस आवास करै, क्रोश मूल ठानिये । समयको ख़राब करै, व्यर्थबकवाद करै, हठ औ प्रमाद करै, ऐसी भंग जानिये ॥ बुद्धिको बिगाड़िदेय, सिड़ीहू बनाय देय, धर्म्म कर्म्म सारे लेय, पापरूप मानिये । यासो कहूँ बोल २ सुनो मित्र कान खोल, पियें भंग घोल तिन्हें भंगीही बखानिये ॥

हरखू–अरे बापरे ! यहिमाँ इतनों अवगुण भरल बाड़ैस । आजसे कान धरीला । अब कबहूँ ना पियबीं ।

निरंजन–महराज एकाँ पियले बडा आनन्द मिलैला, छोड़ले दुख जानि पड़ैला

वि० मि०–देख, दुष्कर्म्म करते अच्छे ही जान पड़ते हैं, किन्तु परिणाम नरक है।

निरंजन–तो महाराज ! आजसे मैं हूँ छोड़िदेत बाड़ीस । अब कबहूँ ना पियबी । (रामसे) आई न कुँवरजी ! इसी आसनीपै वस्त्रधारि नहाईं नूँ।

हरखू–(मुनिजीसे) आपलोग कहा रहइलें ।

वि० मि०–ए दोनों राजकुमार तो अवधेशके पुत्र हैं और मैं विश्वामित्र हूँ ।

निरंजन–तब आई महाराज ! अवधके राजा तो मेरे ही यजमान हैं।

हरखू–कुँअरजी ! देखिये हमारी वहीमें महाराज त्रिशंकु, असमंजस, नहुष, दिलीप आदिके हस्ताक्षर हैं (दिखाता है)

निरंजन–कुँअरजी ! सुनलीं नू ! इतनों असत्य ! जब गंगाजी पृथ्वीमें ना आइल रहलीं, तबहीं त्रिशंकु, दिलीप नहइले रहलें । ए देखीं हमरे इहाँ

पारसाल महाराज दशरथजी आइके दान दिहलेन, हस्ताक्षर किहलेनि है, (दिखाता है)

श्रीराम—अरे क्यों झगड़ते हो ? हमे सब ब्राह्मण बराबर हैं।

हरखू—जय होय सर्कार ! कीर्ति बढ़ै।

राम—(कुछ देकर) अच्छा, जनकपुर किस मार्गसे जायें।

पंडे—(मार्ग बताकर) यही मार्ग जनकपुरको है (रामादि जाते हैं)

सूचना।

दोहा—सुनहु उपस्थित सुजन सब, विनय मेरी धरि ध्यान।
आजका कौतुक पूर्ण भा, यथाबुद्धि लो जान॥

चौबोलाः—यथाबुद्धि लो जान, मित्रगण ! बालकुतूहल सारा। अब मुनि संग बन्धु दोउ प्रमुदित, जनकनगर पगु धारा॥ सो लीला अगले दिन करना, है यह दास विचारा। कालिह आइ यदि उसे लखोगे, पइहौ मोद अपारा॥

दौड़—कृपा करि अवसि आइयेगा—दरश हमको देजाइयेगा—"किंकर" भी अनुगृहीत होगा—लीला रघुनंदनका लखिके मन आनंद लहैगा॥ बोलो २ युगल बन्धुकी जय।

चतुर्थाङ्क.

विनय।

लावनी—तुम सुनो दया करि नाथ विनयइक मेरी।
अब लीजे नाथ उबारि करो ना देरी॥ टेक॥

यह अनुचर शरणन्ह नाथ तुम्हारी आया। महराज ! राखिय लाज कीजिये दाया ॥ तव कीर्त्ति अनन्त अपार वेद सब गाया। गुण गाइ थके शुक शारद पार न पाया ॥ भला। मैं क्या वर्णन कर सकूँ बुद्धि कम मेरी ॥ अब० १ ॥ अज निर्विकार निर्मल निरीह तुम स्वामी। मैं अधम महामल राशि कुटिल खल कामी ॥ हे पारब्रह्म सर्वज्ञ औ घट २ यामी। अनुचरको कीजै शुद्ध जानि अनुगामी ॥ प्रभु! दीजै आनंद दान त्रास निरवेरी ॥ अब० २ ॥ जगके इस जन्म मरणसे अति दुख पाया भ्रमि लख चौरासी नाथ बहुत घबड़ाया ॥ हो निराश चहुँ दिशिते तब शरणन्ह आया। हे करुणासिन्धु ! अब वेगि कीजिये दाया ॥ करि दया दयानिधि! काटो कर्म्मकी बेडी ॥ अब० ३ ॥ हे प्रभो! सुनाऊँ किसे व्यथा निज मनकी। जगमें अपना है कौ(आश करूँ जिनकी ॥ मतलबके साथी सभी आश करैं ध की। अन्तरयामी प्रभु जानत दुख निज जनकी ॥ है आर. "किंकर" रहा इसी टेरी ॥ अब० ४ ॥

शिक्षा।

हमरे देशवामें–ऐसन २ बालक अवतो जन्में ॥ टेक ॥

सकल पुरानी चाल छोड़िके नई चाल मन धारे। तोड़ि प्राकृतिक नियम हाय, अधरमके करत प्रचारे ॥ हमरे ० १ ॥ मातु पिताका कहा न मानैं करते हैं मनमानी। सेवा करना दूर रहा, नहिं देत घूँट भर पानी ॥ हमरे० २ ॥ सतसंगतिसे करैं किनारा, कुसङ्ग में चित धारैं। घरकी नारिन छोड़ि अभागे, रंडिनसे शिर मारैं ॥ हमरे ० ३ ॥ ब्रह्मचर्य्य पर लात मारके, खूब करैं व्यभिचार। रात गिनैं ना दिन पहिचानैं, ऐसी करैं भरमार ॥ हमरे ० ४ ॥ जूआ नशा, नाचमें मातें, रहते हैं दिनरात। धर्म्माधर्म्मका ख्याल न करके

दिन २ बिगड़े जात ॥ हमरे० ५ ॥ पीते हैं सिगरेट चुरट, अँगरेज़ी टोपी लगावें। साबुनसे नित मुँहको धोवैं, बाबू साहब कहलावें ॥ हमरे० ६ ॥ अपने देशकी बोली त्यागी, बोलत गिटपिट बानी। जय राम, जयगोपाल, छोड़ी, बोलि रहे गुडमानी ॥हमरे० ७॥"किंकर" कहै बन्धुओ मेरे, अब भी हिये विचारो । सकल कुरीतें त्यागन करिकें, धार्म्मिक मारग धारो ॥ हमरे० ८ ॥

सूचना ।

गाना–जरा ध्यान देके सुनना–जो कुछ हैगा मेरा कहना–मर्ज़ी है करना न करना–अजी आप आप २ ॥ चुगली काहूकी न करना–दाया हिरदे माहीं धरना–हरदम हरिका करते रहना–मनमें जाय २ जाय ॥ १ ॥ तकना परनारीको नाहीं–यह तो है अति ही दुखदाई–कलंकका इससे लगजाई–तनमें छाय २ छाय ॥ २ ॥ कहना "किंकर"का टुक ध्याओ–शोर-ऊधम नहीं मचाओ–शांत ह्वै लीलामें चित लाओ–यारो आप २ आप ॥

दोहा–सुनिये दर्शक सकल अब, वचन मेरी चित धारि ।
कौतुक पुर मिथिलेशका, लखौ परम मुदकारि ॥ १ ॥
लीला सुन्दर वाटिका, बहुरि दिखायो जाय ।
ऊधम, बकबक, शोर, गुल, बन्द करौ सब भाय ॥ २ ॥

प्रथम दृश्य.

विश्वामित्र तथा राम लक्ष्मणका जनकपुरमें पहुँचना ।

स्थान बाटिका ।

विश्वामित्र–(रामसे) हे राजपुत्र ! देखो तो, मेरे समझमें–

चौपाई–अति अनूप है यह अमराई । सब सुवास सब भांति सुहाई ॥
देखि ठाँव यह मम मन माना । इहाँ रहिय रघुवीर सुजाना ॥

राम-चौपाई-आश्रम नाथ सुनीक सुहावा। परम रम्य मोरेहु मन आवा॥

हे भगवन् ! अति उत्तम स्थान है, बस यहीं ठहरना ठीक है।

(आसन लगाते हैं)

समाचार पा जनकरायका आना।

जनक-दोहा-श्रीमन मुनिवर पूज्यपद, कृपागार गुणधाम।
चरणकमलमें दास यह, करता नाथ ! प्रणाम॥

(माथ झुकाते हैं)

वि०मि०-दो०-विधि, हरि, हर, निज कृपातें,सुखी करैं नृप तोहि।
पूजै मन अभिलाष सब, अति प्रसन्नता मोहि॥ बैठिये,

जनक-(बैठकर) चौपाई।

कबहु नाथ सुन्दर दोउ बालक। मुनि कुल तिलक कि नृप कुल पालक॥
ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा। उभय भेष धरि सोइ कि आवा॥
सहज विराग रूप मन मोरा। थकित होत जिमि चन्द चकोरा॥

हे नाथ ! आपके दर्शनसे परमानन्द हुआ, इनकी परस्पर प्रीति ब्रह्म जीव जैसी स्वभाविक है।

वि०मि०-ग़ज़लः-सुनो मिथिलेश राजन जू ! ए हैं अवधेशके बारे।
अभय कर देवता सारे, निशाचर यूथको मारे॥ टेक॥
वदन लोने सलोने ए, सुभग उपवीत पट धारे।
ए गौतमकी तिया तारे,हमारे प्राणके प्यारे॥ सुनो०॥१॥
सुभग शिर चौतनी सोहै, निरखि छवि रूप मन मोहै।
ए नृप दशरथ दुलारे हैं,हमारे मखके रखवारे॥सुनो०॥२॥

जनक-हे प्रभो ! अब नगरमें पधारिये।

विश्वामित्र–बहुत अच्छा, चलो। (सब जाते हैं)

जनक–(सुन्दर स्थान दे भोजनादिका उचित प्रबन्ध करते हैं)

(विश्वामित्रसे) भगवन्! अब आज्ञा हो तो जाऊँ।

वि० मि०–अच्छा, जा सकते हो,

जनक–प्रणाम, महात्मन्!

वि० मि०–चिरजीव राजन्! (जनकराय जाते हैं)

वि० मि०–(रामसे) हे रामजी! तुमलोग भी खा पीकर विश्राम करो।

श्रीराम–(हाथ जोड़) जो आज्ञा गुरुजी (भोजनादि करते हैं)

दूसरा दृश्य.

श्रीराम–(हाथ जोड विश्वामित्र से)

भजनः–सुनहु नाथ यक विनय सुनाऊँ ॥ टेक ॥

चाहत लखन जनकपुर देखन, देउँ दिखाय जो आयसु पाऊँ ॥ सुनहु० ॥ १ ॥ "किंकर" पुर दिखायके हे प्रभु! आवउँ वेगि न देर लगाऊँ ॥ सुनहु० ॥ २ ॥

वि० मि०–(प्रसन्न हो)

भजनः–धर्म्मसेतु पालक रघुराई ॥ टेक ॥

कस न कहहु तुम नीति विचारी, प्रेमविवश सेवक सुखदाई ॥ धर्म्म० ॥ १ ॥ सुख निधान, गुण धाम बन्धु दोउ, देखहु नगर यथा रुचि जाई ॥ धर्म्म० ॥ २ ॥ करहु सुफल "किंकर" के नैनन सुन्दर वदन सरोज देखाई ॥ धर्म्म० ॥ ३ ॥

दोनों भाई–(प्रसन्न हो प्रणाम कर जाते हैं)

जनकपुर प्रवेश.

दलालका मिलना ।

दलाल–(आगेसे मिलकर रामजीसे)

सवैयाः–आइये आइये श्रीरघुनाथ, लखौ मिथिलापुर हाट निकाई।
मैं हूँ सुना बहु कालसे कानन्ह, आवहिंगे इत दूनहुँ भाई ॥
ताहिते धारिके कार दयानिधि, मैं हूँ दलाल रहौं इहि ठाई ।
देइ हौ दलालीमें काह हमैं, निज "किंकर"को प्रभु देहु बताई ॥ १ ॥

लक्ष्मण–सवैयाः–ए हो दलाल ! भले ही मिले, रघुनाथजी देखि हैं हाट निकाई । प्रेमकै पारिखकै गथ सुन्दर, लेइहि जो उनके मन भाई ॥ या मिथिलापुर हाटनकी गथ, बाटन देखि बढ़े पुलकाई। खूब अनन्द दिखाओ सु "किंकर" देइहौं तुम्हैं हरि भक्ति देवाई ॥ २ ॥

दलाल–जो आज्ञा महाराज ! चलिये,

सवैयाः–देखो बज़ाज़, सराफ़, सुनार अहै जिनके धनहूँ अधिकाई।
ए हलवाइनके बने धाम, सुकोटिन भांति बनावें मिठाई ॥
है जिनके पुरखान ते कार, बड़े अशराफ़ न नेक खुटाई ।
प्रेम परेखि सु "किंकर" के प्रभु, लीजिये दीजिये भक्ति सुहाई ॥ ३ ॥

बज़ाज़–(दलालसे)

दोहा–हे दलाल ! इतलाइयो, दूनहुँ दशरथलाल ।
जो भावहिं सो लेइहैं;करिहैं मोहिं निहाल ॥

दलाल–दोहा–हे बज़ाज़ ! धीरज धरौ, आवत जगके नाथ ।
पीछे माल कटाइहौं, जब लागै कछु हाथ ॥

बज़ाज़–दोहा–प्रथम माल बिकवाइये, हे दलाल मतिमान ।
फेरि दलाली देउँ मैं, जैसी हाट प्रमान ॥

दलाल–दोहा–पहिले पैसा देतहैं, जौन पुरुष हरखाय ।
बालक ताको खेलहीं, घर घुनघुना बजाय ॥

दलाल–(श्रीरामसे)

सवैया:–आइये राम ! इतै सुनिये, यहिकी गति शुद्ध न है सुख कोमल।
गाहक देखितरीफ़ करै, अति है कपटी न कहै कबहूँ भल ॥
चौगुना मोल बखानि हरै धन, ऊपर सन्त सुभाव हिये मल।
नाथ न आइये बातनमें, यह कार बज़ाज़ करै सिगरो छल॥४॥

बज़ाज़–(दलालसे)

दोहा:–सन्तन सेवा करन हित, तोहि वस्त्र प्रतिसाल ।
देइहौं मन भावत इतै, लाओ दशरथ लाल ॥

दलाल–अच्छा (रामसे) छन्द:—

इतै आइये राम ! राजान राजा । खरो या गलीमें अहै सुबज़ाज़ा ॥
बड़ो दर्श आशी न नेकौ मिज़ाजा। चलौ नाथ वाको लखौ प्रेम ताजा॥

दलाल–(बज़ाज़से)

दोहा:–हे बज़ाज़ ! रघुनाथ तव, आये देखि स्वभाव।
कहौ मालके नाम गुण, लेइहैं जो मन आव ॥

बज़ाज़–बहुत अच्छा. (वस्त्र दिखाता है)

कवित्त:–शाला, औ दुशाला, लोई, कम्बल, पश्मीना अहै, काश्मीर
देशके सुगुनिन बनाये हैं । धुस्सा औ कटिया, कश्मीरा,

फलालैन लोनी, बीकानेर देशसे सुहालही मँगाये हैं॥ देखिये बनातैं नाथ हैंगी मुख्य देशनकी, आसनी ग़लीचा सब देशनके आये हैं। ऊनी अहैं चोखो नाथ धोखो ना बनाय कहूँ, हनूमान "किंकर" लायआपको दिखाये हैं ॥१॥ देखिये नीलाम्बर है बैजनी, गुलावी, लाल, औरहू पिता-म्बर ज्यों विद्युतकी जालैं हैं। मखमल, धूपछाँह, अतलस, गुलबदनहू, चीन ब्रह्मदेशकी सुचित्रित रुमालैं हैं॥ फुलवर, सुआलपाका, साफ़ा है जड़ावदार, सारी सुकिनारी युत शालहू दुशालैं हैं। हनूमान "किंकर" शुठि रेशमी सो लीजे प्रभु, आपहीके हेत तन, मन, धन आलैं हैं ॥ २ नीको जो न लागै तो लखाऊँ अतलस आज, तू न तजि भौन मारकीन इमि गायो है। ख़ासे, चारख़ाने, चमलेट-डोरिया सो लाय, "बलदेव" बिशद बिचार ठहरायो है, गाढ़ा हेत राखौं तो गवनहु दरेश होत, चीकनको टारि सुख जारी मन भायो है । नैन सुख लीजै तनज़ेब तजि सारी लाल, बिशद किनारी गुलबदन सुहायो है॥ ३ ॥

दोहाः-विनती दीन बज़ाज़की, सुनिये श्रीरघुवीर।
"किंकर" को निज भक्ति दै, राखिय चरणन्ह तीर ॥

सर्राफ़-दोहाः-हे दलाल ! इतलाइये, दूनहुँ रघुकुलचन्द।
नग अमोल लेवें इतै, मों मन होय अमन्द॥

दलाल-दोहाः-इक मनमें धीरज धरौ,हे सराफ़ ! मतिमान।
धरि राखहु हक मोर तुम,आवत हैं भगवान ॥

सर्राफ़-दोहाः-माल विके नहिं प्रथमही, हक़ मिलै कस तोहि।
प्रभु आपुहिते आइहैं, करन कृतारथ मोहि ॥

दलाल-(रामसे) सवैया-

हे रघुनन्दन ! नैक सुनो, ए सराफ़ सुबातन खूब चरीफ़ है ।
गाहक देखि बुलावत वेगि, अनेकन झूट सुनावे तरीफ़ है ॥
नीक दिखाय करावत मोल, मुलम्मा गहाय उठावै सरीफ़ है ।
नाथ चलौ जनिया ढिगमें,यह सराफ़सुनाथ महान हरीफ़है ॥

सर्राफ-दोहा-अच्छा लेलो प्रथम ही, अपनो हक्क दलाल ।
करि किरपा इक लाइये, दूनहुँ दशरथलाल ॥

दलाल-(श्रीरामसे) आइये महाराज ! सर्राफी भी देखलीजिये । (गये)

सर्राफ़-इतै आई महराज ! नीके २ माल देखइवीं । (दिखाता है)

कवित्त-सेली, गुंज, गोपैं औ क्रीट, मुकुट, कुण्डलादि, अंगद, पदिकहार, जोजित नगीने हैं । गुखरू औ मोती माल, वाला औ बुलाकहार, स्वर्ण मणि मुक्तनके कंठा सुनवीने हैं ॥ पहुँची औ फेरवा सुहुँडी मुहर, रामनामी, तगड़ी औ तोड़ा रचे अतिही प्रवीने हैं । मोतिनके मालबीच मोहनके माला सबै, "किंकर" प्रभुहेत सुवखाने भेंट कीने हैं ॥१॥
शीशफूल, चन्द्रिका, सुबेंदी, बीज, बाँके अहैं, बेनी, पान, बेसर, बनाई अतिलोनी है। हाटकके वेंदा औ बुलाकैं खरीलवाला, चम्पकली दुलही ए औरके न होनी है॥ कर्णफूल, झुमका, सुढारैं औ हुमेलहार, तिलरी, कटि करधाने सुचौकी चौकोनी है। बाजूबन्द, कङ्कण, सुक्षुद्रघंटिकादिदेखौ, "किंकर" प्रभुहेत गढ़ीकारीगरसोनी है ॥२॥

सवैया-बँगुरी, दँतवा, दोहरी, पहुँची,पोरवा मुँदरी बहु देशनके ॥
सु आँगुरतान, सुआरसि आनन, देखन ओप करै मनके ॥

बिछिया, फुलवा, अँगुरी, अँगुठा, पगज़ेब बड़े अतिमोलनके।
कटिको शुभ जेहर और छड़ा, प्रभु लीजिये भूषण नारिनके ३॥

दोहा–ए भूषण प्रभु जगतके, दिखरायउ धीर तीर।
सकल निछावरि आपके, देहु भक्ति रघुवीर॥

जौहरी–सोरठाः–हे दलाल! मतिमान, लावइतै रघुनाथको।
मणि, मोती, पाषाण, देउँ जिते या जगतके॥

दलाल–दोहाः–फेरि कौनसी बातमें, करहु जौहरी देर॥
दिखरावहु श्रीरामको, सकल रत्नकी ढेर॥

जौहरी–कवित्तः–शर्णागति षटविधि सो मुक्ता षट खानिनके, ज्ञानयोग, सूर्य्यमणि, अतुलित प्रकाशके। चन्द्रमणि भक्ति-योग, चर्चायोग नीलमणि, नागमणि, मंत्रयोग, भक्तन हुलासके॥ हाटकसे हठयोग, नीलमसों राजयोग, पन्नासों पुरुष अरु प्रकृति विलासके। लक्ष योग लाल, पुष्पराज लै सुयोग नीके, चमकै बिल्लोरी सुअष्टाङ्गयोग भासके॥१॥ नौधा स्याह मूसा, संगमरमर सुप्रेम भक्ति, पन्ना है कसौटी, ध्यान धामन जड़ावके। सतोगुण सेता, सेल-खरी हैं सुराजसके, ससुआ गुण तमो धाम बने निज भावके॥ कंकरीट आतम, सुखंजरीट ब्रह्मज्ञान, किला कोट बनै राम दृढ़तायुत चावके। कर्म्मनके गोला नहिं बेधैं तहाँ "किंकर" के, देखिय प्रभु दासके हैं सतगुरु प्रभावके॥२॥

दोहा–सुगति, सुमति, सम्पति, सुगुण, बारौं तन मन धाम।
मूल्य "किंकर" हिं देहु यह, हिये बसे प्रभु नाम॥

हलवाई–आइये महाराज! बढ़ियाँ २ मिठाइयाँ तय्यार हैं।

कवित्त–मोदक, जलेबी, सूतफेनी, अरु कलाकन्द, बर्फ़ी, दूध, जामुन, गुलावके सुहाये हैं। पट्टी औ पिड़ाक माठ खुटिया औ खिलौना सबै, सुन्दर कड़ाकदार गट्टा मन भाये हैं॥ खाँड़ औ बतासा, खाजा, सेवहू, सुपेड़ा भले, खुरचन औ लाचीके दाना बनवाये हैं। दुर्रा औ गोझावटी सबै भांति भाँतिनके, हनूमान "किंकर" भेंट आपके देखाये हैं॥१॥ पूरी औ कचौरी ताज़ी तिलकी तिलौरी पुवा, पोस्तकी दलौरी औ अलौरी वटीवटके। गुलगुला, सोहारी, मोंठ, पापर, सुगोझा भले, कौसिली गलेफी पाय तृप्त होत झटके॥ गूना औ सुमालपूआ, हिरसा अनेक पाक, दूध औ मलाई भरे रवड़ीके मटके। सबै हैं अहारी फलाहारी "किंकर" पै नाथ लीजै दाम दीजै प्रभु निजनाम रटके॥ २॥

तम्बोली–गाना–ए हो अवधेशलाल ! आइके दुकनियाँ, मोहूँ काँ तनक निहाल किये जाव, नाथ मोहूँ काँ०॥ टेक॥ मगही, कपूरी, केकर, औ महोवा, सेउँढ़ा, टिकारीके पान खाये जाव॥ नाथ मोहूँ काँ०॥ १॥ मुश्की, केसरिया, तम्बाकू सुवासित, सिनसिन औ जीनतान खाय चले जाव॥ मोहूँ काँ०॥ २॥ बीड़ी औ सिगरेट, मेचेजकी पेटी, "किंकर" से लेइ धूमपान किये जाव॥ मोहूँ काँ०॥ ३॥

ठठेर–(दलालसे) दोहा–

सुभग कमंडल सन्तहित, तोहि सहस प्रतिसाल।
देइहौं आसु लिआवहू, इत दशरथके लाल॥

दलाल–चलिये महाराज ! वर्तन तो देखिये।

ठठेर–कवित्तः–घण्टी घण्ट झालर सुझाँझ विजय कण्टनीके, आरती सुधूपदानी संपुटी सुहाई है। अर्घा, हरिताव, छिन्न-धारा औ गिलास, लोटा, संपुट, सिंहासनकी ज्योति छबि छाई है॥ गंगाजली, गडुआ, सुआचमनी, अर्घ-पात्र, नाथ देशदेशनके गुनेन बनाई है। रामचन्द्र लीजै सबै पूजाके जु काम आवैं, हनूमान "किंकर" आप योग्य ही सुहाई है॥ १ ॥ गंगाजली, कलसा, घण्डाल, भाल, कोपरहू, नक्शके परात थार थारी बहुतेरी हैं। बेला औ तबेला, डोल, बटुई, सुबटुआ हैं, कलित कटोरा औ कटोरिनकी ढेरी हैं॥ चामचा, कड़ाही, औ तवेली, तवा, तामलोट, पानदान, पीक-दान संयुत चितेरी हैं। तसला, पतीली, संसी सबै सब धातुनकी, "किंकर" यह अर्ज़ ग़र्ज़ आपसे निवेरी हैं॥ २ ॥

दोहाः–सकल वस्तु प्रभु पद निकट, जो चाहहु सो लेहु।
दाम यहै प्रभुचरणसे, कबहुँ न घटै सनेहु॥

माली–आइये प्रभो !

भजन–रघुवीर जी! देखो सुमनकी बहार है॥ टेक॥
सुन्दर सुबासके अनेक फूल चुन २ लाय आप खाति[र] बनायो प्रभु हार है॥ रघुवर०॥ १॥ साँवरो गोरो शरी[र] दोउ बन्धु आइ इतै, दीन्हें हैं दरश बड़ी भाग यह हमार [है] ॥ रघुवर०॥ २॥ जेते हैं फूल सबै गाय २ नाथ ढिग, नाम कहत सबके प्रभु "किंकर" तुम्हार है॥ रघुवर० ॥ ३ ॥

कवित्तः–कमल, करञ्ज, कुन्द, कुमुद, कचनार, केला, कदना, कदम्ब, केसर, केतकीके भाये हैं। गेंदा, औ गुलाब, गुलदावदी

सुगुलेनार, गुलवहार, गुड़हर, गुलजाफ़री सुहाये हैं ॥ गुलाबास, गुलफ़िरङ्ग, खैरा, गुलशब्बो अहै, तुर्रा गुलमेंहदी, गुललाची चुन लाये हैं । चांदनी, चमेली, चम्पा, चोपचीनी, चन्द्रकान्ति; चोवा, कनकचम्पा, नाथहित लाये हैं ॥ १ ॥ जूही, जैत, जिगिया, जँभीरी, जाफ़री, निवारि, नैनिया, सुनर्गिस, नौरंग रंग भाये हैं । मौलसिरी, मोतिया, सुमान, मीन, मोरपखी, मुर्ग़केश, मरवा, मचकन्द मन भाये हैं ॥ आसती अशोकहू, अगस्त, सूरमुखी, बेला, सेवती, सुहागि सदा, विष्णुकान्ति लाये हैं। देवकी, सुदेवदारु, दौना, मन्दार, लौंग, "किंकर" कपूर, औंग, कनैर चुन लाये हैं ॥ २ ॥

मेवाफ़रोस–आइये महाराज ! मेवे तो ले लीजिये ।

कवित्तः–नींबू, नारंगी, सेव, सन्तरा, सुनासपाती, जामुन, शरीफ़ा, दाख, खिन्नी मन भाई है । कटहर, बड़हर, अंजीरहू, लुकाट, केला, आड़ू औ अंगूरकी पिटारी छवि छाई है ॥ मालदहा, बम्बई सुआम, अमरूद भारी, मूँगफली, पिण्डहू खजूरकी सुहाई है । हनूमान "किंकर" आपहेत ही सुदेशनके, मेवा स्वाददार अति लीजिये मँगाई है ॥ १ ॥

दोहाः–मेवा सब संसारके, अरु वारूँ मन प्रान ।
मम मनमें निशिदिन बसै, तव मूरति भगवान ॥

पंसारी–गाना–देखो पंचूनकी दुकानियां हो, दशरथके लाल ॥ टेक ॥
सिधा औ सामान लै रसोई बनालो, अमचुरकी चुटपुट चटनियां हो ॥ दशरथके० ॥ १ ॥ चावल, दालसे खिचड़ी बनाओ, मैदाकी ख़ासी फुलकियाँ हो ॥

दशरथके० ॥ २ ॥ लौंगैं औ ज़ीरा, इलाची, मिरच लो, मेथी, हरद और धनियाँ हो ॥ दशरथके० ॥ ३ ॥ कत्था, सुपारी, जायफल लीजै, सुरती, तम्बाकू, सुंघनियाँ हो ॥ दशरथके० ॥ ४ ॥ पीला, गुलाबी, उन्नाबी, सबुज, स्याह, धानी, बसन्ती, बुकानियाँ हो॥ दशरथके० ॥ ५ ॥ हर्रा, बहेरा, औ आमला लीजे, सोंचर, सोहागा, पचलोनिया हो ॥ दशरथके० ॥६॥ "किंकर" पर हरदम प्रभु रखिये, अपनी दया चितवनियाँ हो ॥ दशरथके० ॥ ७ ॥

हे महाराज ! औषधियाँ और सब किराने भी यहीं मिलैंगे ।

बिसाती–कवित्त–संखी, संख, फीता, फानूसैं, चूड़ी, झाड़, भारी, बैठककी लेम्पैं औ गिलासैं बहुरंगके । गोल महताबैं, मोमबत्ती औ देवालगीर, हाँड़ी, छला, झाबे खेलवस्तु हैं सुढंगके ॥ विद्युतद्युति गोले, तार, गैस, ग्लास, गोटा, गेंद, क्षत्र, बिजन, चँवरी, चँवर, आतप उमंगके । मोती, लरमूँगा, सुई, पेचक, बटन, मोजा "किंकर" दस्ताना, कैंची, तांला बहु रंगके ॥ १ ॥

दोहा–क्रीट, मुकट, कुण्डल, तिलक, धनुष, बाणयुत हाथ ।
निशिदिन मों हियमें बसै, तव मूरति रघुनाथ ॥

गन्धी–कवित्तः–काम त्यागके बड़ा बन्यो, मोतिया हटाय मद, अहंकार त्याग इत्र अगर नवीना है । ख़स क्यो है मोह सोई ख़स है सुबासदार, विषय आश मिट्टी करि मिट्टीहूको चीना है ॥ लालच तजन लाची, गर्व त्यागको गुलाब, पञ्च भूत हीना करि बन्यो इत्र हीना

है। राउरको यश गान मोद ज़ाफ़रान मुश्की, आप-हीके हेत रचे "किंकर" नवीना है ॥ १ ॥ चित्तकी कुवासना हटायके चमेली बन्यो, पीछे कारि जगत आश पानड़ी बनाये हैं। चित्त त्याग वेला, मन मारन मसाले सब, ताते हिम, हिम्र कल्यान तेलन पकायेहैं ॥ लीजे लौंगादि, धूप, अगर-वत्ति, ध्यानन, की खेद त्याग खैरको सुवास करवाये हैं। शील बासि मालती सुशील ताम्बूलहूको, सुरुचि बिहार "किंकर" नाथ हेत लाये हैं ॥ २ ॥

दोहा-नाथ तुम्हारे वाससे, बासित सकल दिगन्त।
अनबासित हियमें मेरे, वास करहु भगवन्त ॥

साक भाजीवाला-

गानाः-तरकारी लेलो नाथ तुम्हारे लिये लाया मैं ॥ टेक० ॥ केला, कुँदुरू और करैला, कटहल, कँकड़ी, आलू। कुलफ़ा, कद्दू, गोभी, घुँइयां, ढेंढ़स, और रतालू हो ॥ तरकारी० ॥ १ ॥ मरसा, मटरफली औ मूली, भंटा, सेमी, सोवा। पालक, भिंडी, नेनुआ, मेथी, परवर, कुम्हडा, लौवा हो ॥ तरकारी० २ ॥ ग्वारफली, चौंरई, चिचींडा, चनाबूँट, तरोंई। करमकला, सीताफल, अदरख, लीजे सुन्दर पोई हो ॥ तरकारी० ३ ॥ अमिया, अँवला, मिरजा, धनियाँ, चटनीहेत पुदीना। अमरख और करौंदा, सेवा माहीं हाज़िर कीना हो ॥ तरकारी० ४ ॥ साक सबै "किंकर" ने स्वामी आपै हेत मँगाई। लाय धरयो चरणह्न ढिग तुम्हरे, बसौ मेरे मन आई हो ॥ तरकारी० ॥ ५ ॥

पुस्तक विक्रेता-आइये २ महाराज ! कृपा कीजिये।

दोहा-हे दयाल इत आइये, दशरथ राज कुमार।
प्रथम पुस्तकनि निरखि पुनि, लेहु ग्रन्थ सुखकार॥

कवित्त-वेद औ वेदांग, शास्त्र, वैदिक, वेदान्त, धर्मशास्त्र, योग, सकल पुराण रु इतिहासके। न्याय, कर्मकाण्ड, छन्द, ज्योतिष, व्याकरण, काव्य, अलङ्कार, नाटकहु, कोष, उपन्यासके॥ सुन्दरऽस्तोत्र पाठ, संगीत, राजनीति, और सम्प्रदाय ग्रन्थ, सन्तन सुपासके। क़िस्सा और नारिनके योग्य वहुत ग्रन्थ भले, क़ानून पुनि छापे लिखे "किंकर" ही ख़ासके॥

दोहा-जो भावे सो लेहु प्रभु, अर्पण सर्व दुकान।
"किंकर" हिय मूरति बसै, सदा श्रीभगवान॥

अश्वविक्रेता-लीजिये प्रभो! अच्छे २ घोड़े लीजिये।

कवित्त-अवध भुआल लाल, देखिये तुरङ्ग ताज़ी, तुर्की, ईरानी कच्छी, काबुली सुरङ्ग हैं। मिसरी, सुअर्बी, कलंगी, रूमी रूसी, अंगी, जङ्गली, जपानी, लदेजी, वीर जङ्ग हैं॥ श्याम सुर्ख़, सब्ज़ा, कुम्मैत, श्वेत, पट्टनहू, श्यामकर्ण, पर्वती कल्यानी, पचरङ्ग हैं। सिन्धी, माड़वार, दरियायी, काठि वार, धन्नी, भोटी, चीनी, ब्रह्मी, "किंकर" पास तुरङ्ग हैं॥ १॥

गजविक्रेता-सवैया-

भांतिन भांतिके नाथ द्विपेन्द्र, अहैं शुठि सुन्दर श्वेत औ श्यामा।
भूरे मतङ्ग बड़े गिरिराजसे, भार बड़ो अवनी प्रतिठामा॥
एकसे एक अपूरब हस्ति, मँगाये हैं रावरे हेत दै दामा।
देखिके लीजिये नाथ सबै, निज "किंकर" को दो भक्ति ललामा॥१

चूरणवाला-लटका-

लीजै असल सुदर्शन चूरन। गङ्गाधर अजमोदा पूरन ॥
अरु है गोक्षुरादि शुण्ठ्यादी। चूरण अमिल पित्त विज्यादी॥
हरी लौंग आदि तालीसा। औ है हरीतादि जगदीसा॥
है शुभ वज्रखार बत्तीसा। अरु है लवण भास्कर पीसा॥
चूरण जीरकादि शुठि नीको। अग्नी सुख बावे सबहीको॥
दाड़िम चूर्ण आदि बहुतेरे। सुश्रुत वाग्भट्टके टेरे॥
खायें दिव्य देह दरसाती। पैसे विना जीभ तरसाती॥
चूरण अमिय मूरि मैं लाया। मुझको सतगुरुने बतलाया॥
इसको साधु सन्तने खाया। जिनने खुब सतसंग कमाया॥
इसमें पड़ी नामकी बूटी। लै के सुमति खलमें कूटी॥
पुनि तेहि सत्यवस्त्रमें छाना। शिव ब्रह्मादिकके मन माना॥
जाके काम वात वरियार। ताको जारि करत है छार॥
अरु जो क्रोध पित्त परकाशै। ताको पलक माहिमें नाशै॥
द्वन्द्वज्वर मत्सर अविवेका। यासों रहि न सकै क्षण एका॥
औरो जिते रोग हैं भाई। है सबकी यह सिद्ध दवाई॥
मैं प्रभु सुना जनकपुर आये। दौर्यो दर्शन आश लगाये॥
मांगौं चरणकमल रति दीजै। "किंकर"को प्रभु शरणमें लीजै॥

चौधरी-दोहा-धन्य २ राजा जनक, धन्य सुतासु बज़ार।
धन्य २ अति आज मैं, सुफल चौधरी कार॥

(श्रीरामसे) दो०-जो २ मन भावे प्रभू, लीजिय वस्तु बेसाय॥
दाम केर चिन्ता नहीं, अवधसे दिहेउ पठाय॥

श्रीराम-दोहा-हे बज़ारके चौधरी, अवध रीति तुम जान।
दाम विना गथ लेयँ नहिं; बिना जान पहिचान॥

चौधरी–दोहा–जय २ श्रीरघुनाथजी, जय जय जय सौमित्र ।
"किंकर" को अपने प्रभू, कीजै वेगि पवित्र ॥

बालकगण–भजन–

देखहु पूरब दिशि दोउ भाई ॥ टेक ॥ अति विस्तार सुचारु ढारि गच, सुभग धनुष मख भूमि बनाई ॥ १ ॥ चहुँ दिशि कंचन मंच अनेकन, तापर नृप जइहैं बैठाई ॥ २ ॥ ए देखहु पीछेके मंचन बैठिहिं नगर लोग सब आई ॥ ३ ॥ ता पीछ शुठि धवल धाम ए, ऊँचे नारि हेत बनवाई ॥ ४ ॥ यथायोग्य आसन सबहीको, दीन्हें जनकराय बनवाई ॥ ५ ॥ "किंकर" पर करि कृपा नाथ अब, दीजै चरण भक्ति सुखदाई ॥ ६ ॥

श्रीरामजी–(लक्ष्मणसे)

दोहा–बहु विलम्ब भा नगरमें, सुनहु वचन मम तात ।
वेगि चलहु गुरु निकट अब, मानि हमारी बात ॥

लक्ष्मण–(हाथ जोडकर) जो आज्ञा महाराज ! चलिये (चले)

पुरवासी स्तुति करते हैं–

सब–गज़ल—

कहो सब प्रेमसे प्यारे, श्रीरघुनाथकी जय हो ।
सकल संशय हरनहारे, श्रीरघुनाथकी जय हो ॥ टेक ॥
सन्त मन मानसर रूपी, हँस अवधेश नन्दन जू ॥
उसी सरमें वसनहारे, श्रीरघुनाथकी जय हो ॥ कहो० १
शिला थी नारि गौतमकी, जो अपनी भूलसे यारो ।
अहल्या तारनेहारे, श्रीरघुनाथकी जय हो ॥ कहो० २

दनुजगण जो मुनिगणके, यज्ञको भङ्ग करते थे ॥
उन्होंको नाशनेहारे, श्रीरघुनाथकी जय हो ॥ कहो० ३ ॥
सजल राजीवलोचन, श्याम घननिन्दक सुतनुधारी ।
सु "किंकर" दुख हरनहारे, श्रीरघुनाथकी जय हो ॥ ४ ॥

दोहा–सुन्दर राजिव नैन प्रभु, कृपासिन्धु गुण धाम ।
"किंकर" कर दोउ बन्धु कहँ, बारम्बार प्रणाम ॥

तीसरा दृश्य.

विश्वामित्रके पास दोनों भाइयोंका आना ।

दोनों भाई–(हाथ जोड़कर)

दोहा–चरण कमलमें नाथ ए, सेवक करत प्रणाम ।
देखा पुर मिथिलेशकर, आज्ञा पाय ललाम ॥ (प्रणाम करते हैं)

विश्वामित्र–दोहा–प्रेम प्रीति अरु नीतिके, तुम पूरण आगार ।
कस न कहहु अस राम तुम, रमे सकल संसार ॥

दादरा–सुनिये धरि ध्यान दोउ बन्धु टुक बातें ॥ टेक ॥ सब देखा जनकपुर जाई न बेर लगाई वगि आये स्थान ॥ दोउ० १ ॥ सन्ध्यावन्दनका काला करो ततकाला ईश्वरका ध्यान ॥ ॥ दोउ० २ ॥ "किंकर" पर दाया कीजै शरणमें लीजै हरो कष्ट महान ॥ दोउ० ३ ॥

श्रीरामजी–बहुत अच्छा गुरुवर (जाते हैं)

सन्ध्या ।

आचमन मंत्रा–ओ३म् शन्नो देवीःरभिष्टय आयो भवन्तु पीतये, शयोरभिस्रवन्तु नः ॥ यजु० ३६ । १२ ॥

इन्द्रियस्पर्श-मंत्राः ।

ओ३म् वाक् २। ओ३म् प्राणः २। ओ३म् चक्षुः २ । ओ३म् श्रोत्रम् २ । ओ३म् नाभिः । ओ३म् हृदयम् २ । ओ३म् कण्ठः। ओ३म् शिरः । ओ३म् बाहुभ्यां यशो बलम् । ओ३म् करतल-करपृष्ठे ॥

मार्जन-मंत्राः ।

ओम्भूः पुनात्विति शिरसि। ओम्भुवः पुनातु नेत्रयोः । ओ३म् स्वः पुनातु कण्ठे। ओम्महः पुनातु नाभ्याम् ॥ ओ३म् तपः पुनातु पादयोः । ओ३म् सत्यम्पुनातु पुनश्शिरसि । ओ३म् खम्ब्रह्म पुनातु सर्वत्र ॥

प्राणायाम-मंत्राः ।

ओ३म् भूः । ओ३म् भुवः। ओ३म् स्वः। ओ३म् महः । ओ३म् जनः । ओ३म् तपः । ओ३म् सत्यम् ॥

जप-मंत्राः ।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ यजु० ३६। ३। ऋ० मं० ३ सू० ६२ मं० १० सा० ६ । ३ । १० ॥

नमस्कार-मंत्राः ।

ओ३म् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च। नमः शंकराय च मयस्कराय च। नमः शिवाय च शिवतराय च ॥

(दोनों भाई गुरुसन्निकट आयके) (प्रणाम करते हैं)

विश्वामित्र–सर्वोन्नति हो–अच्छा, व्यालू करके विश्राम करो,

दोनों भाई–जो आज्ञा, गुरुवर–(निवृत्त हो, गुरुके चरण दावनेमें लगते हैं)

विश्वामित्र–(अनेक, कथा व इतिहास कहते कहते निद्रा ग्रसित होकर) हे राम ! अब तुम लोग भी जाकर सो रहो।

दोनों भाई–जो आज्ञा गुरुवर्य्य (सो रहे)

चौथा दृश्य.

प्रातः नित्यकर्मसे निवृत्त हो दोनों भाई गुरुके पास आये।

दोनों भाई–श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः (प्रणाम करते हैं)

विश्वामित्र–आयुष्मान्, पुत्रो ! अच्छा,

दादरा–पूजनके हेत, लाओ सुमन दोउ भ्राता॥ टेक॥
दोउ बन्धु वेगही जाओ–न वेर लगाओ–दल तुलसि समेत लाओ० ॥ १ ॥ बिनु पूछे फूल मत लेना–समझ ए लेना–मन राखि सचेत ॥ लाओ० २ ॥ "किंकर" हरि पदकी पूजा–ध्यान नहिं दूजा–कल्यानको हेत ॥ लाओ० ३ ॥

दोनों भाई–दादरा–पूजनके हेत–लाऊँ सुमन प्रभु जाई ॥ टेक ॥
प्रभु बाग विदेहमें जाऊँ–वहींसे लाऊँ–है सुमन निकेत ॥ लाऊँ० १ ॥ तव आयसु पायके नाथा–वेगि हूँ जाता–ल सुमनहूँ देत ॥ लाऊँ० २ ॥ "किंकर" पर राखिये दाया–तुरत मैं आया–लघु बन्धु समेत ॥ लाऊँ० ३ ॥ (जाते हैं)

दोनों भाइयोंका वाटिकामें पहुँचना ।

श्रीराम—(मालीसे)

सवैया—फूले अनेकन फूलनके तरु, मोद बढ़ावत हैं अति भारी ।
कोकिल, कीर, मयूर, मधुव्रतकी धुनि होत घनी मनहारी ॥
दिव्य जू किंकर आयसु लै,गुरुको इत आय लखे फुलवारी।
माली कहौ तो उताली अबै, गुरु हेत सुफूलन लेउँ उतारी॥

माली—सवैया—

जीवन जातके पातसे गात, बिलोकि समात न मोद हमारे।
शासन भूलको मूल अहै, कहुँ फलसे फूल हैं जात उतारे॥
किंकर दिव्य जू बैठि सुकुंजन, भृङ्ग गुंजार सुनौ सुकुमारे।
हार सँवारि प्रसून उतारिके, हाज़िर होत हौं पास तुम्हारे ॥ २॥

श्रीराम—कवित्त—

पूजन महेशको हमेश सों करैं मों गुरु, सुमन निदेश वेश दीन हैं हमारे ते। आये तेहि काज आज मिथिलाधिराज बाग, अति अनुराग जाग सुछवि निहारे ते ॥ कोकिल मयूर कीर भीर द्रुम तीर तीर, सुमन कतीर झरैं पवनके सहारे ते। सेवन प्रणाली है निराली नृप माली सुनो, चुनि हौं उताली अबै शासन तुम्हारे ते ॥ १ ॥

माली—सवैया—

झूमि झुके तरुपुञ्ज रसाल घने हिन ताल तमाल लखीजै।
सारस, मोर, चकोर, वनप्रिय, आदिक शोर अथोर सुनीजै॥
किंकर दिव्य सरोरुह नीर बहार निकेतनको सुख लीजै।
दासनके रहते रघुराज स्व हाथनसों दल फूल न लीजै ॥३

श्रीराम-सवैया—

मानहिं मात न तातकी बात, अजात सुहात न मानहिं देवा।
किंकर दिव्य सुवेद पुराण न, ज्ञान महा अभिमान न भेवा॥
हैं हैं घने कलिकाल करालमें, पंथ अनेक भरे अहमेवा।
हौं तो सदा दल फूल उतारि, करौं सुख मूल गुरूपदसेवा॥

माली-कवित्त-

गेंदा, गुलदावदी, गुलाब, गुलाबास, गुलशब्बो, गुललायची, गुलाला, गुल भारी है। केवड़ा, कदम्ब, कुन्द, कोरई, करंज, कञ्ज, "किंकर" घी कुमारि, कामिनी, की बहु क्यारी है॥ मौलसिरी, मागधी, अमन्द मालती सुमंजु, मोगरा, मदार, मुचकुन्द मोदकारी है। दिव्य जू फलीके फुल फवित सु फले फलि, भीजे सुखकारी रावरेकी फुलवारी है॥ २॥

मालिन-(हाथमें फूलोंकी माला लिये हुए श्रीरामजीसे)

गज़ल-मालिन हूँ जनक बागकी सुन लीजिये प्यारे।
लाई हूँ सुमनहार इसे पहनिये प्यारे॥ टेक॥
मुँगरा, गुलाब, मालती, जूही औ रायबेल।
चम्पा, चमेली, चांदनीके हार सुधारे॥ मालिन० १॥
शशिकांति, कृष्णकान्ति, पारिजात बहुतसे।
गूँधी है कुन्द, मोतिया, और गेंदा हज़ारे॥ मालिन० २॥
"किंकर" कनेर, केतकी, कदना, कदम्ब भी।
प्रभु हेत हार लाई हूँ, निज हाथ सँवारे॥ मालिन० ३॥

सीता आगमन ।

(नेपथ्यमें) सखियोंका गाते हुए आना ।

सखियां-गाना-

बगियाकी देखो बहार बहार सिया प्यारी ॥ टेक ॥ गेंदा, गुलाब, जैत, नरगिस फूले, केला, कदम, कचनार-कचनार सिया० १ ॥ फले हुये हैं नींबू, सन्तरा, खिन्नी, खजूर औ अनार-अनारसिया०२॥ "किंकर" सरबिच कमल खिले हैं, तापै भ्रमर गुंजार-गुंजारसिया०३॥

एक सखी जो पृथक् बागसे घूमकर चकित दशामें आती है ।

दूसरी सखी-गाना-

सखी री तोहि, बावरि केहि करि डारो ॥ टेक ॥ पुलकित तनु दृग नीर बहतु है, गदगद कण्ठ तिहारो ॥ सखी री ० १ ॥ वेगि बताव हरष कर कारण, मन वश होत हमारो ॥ सखी री० २ ॥ बोलति क्यों न कौन रंग माती, का उरमाहिं तिहारो ॥ सखी री०३॥

वही सखी-भजनः-

परम मनहारी-दो जन बूझैं ॥ टेक ॥ श्याम गौर नहिं जात बखाने गिरा अन्ध चख गुंग बेचारी ॥ दो जन० ॥ १ ॥ शरद इन्दु पूरण सुख सुन्दर, अंग २ उपमा रुचिकारी ॥ दो जन० ॥ २ ॥ कदिक सम अम्बुज भुज सुन्दर, सोहै उदर सिन्धु छवि भारी ॥ दो जन० ॥ ३ ॥ "किंकर" नृपवाटिका विलोकन, आये दोय कुँवर छबिधारी ॥ दो जन० ॥ ४ ॥

दूसरी सखी–ठीक,ठीक। भजन–कुँवर मनहारी–वे ही होंगे ॥टेक॥
कल्ह मुनिसंग जे नृपसुत आये, सब पर रूप मोहनी डारी॥
वे ही० १ ॥ अवसि देखिये देखन लायक़,कीजै सुफल सुनैन निहारी॥
वे ही० २ ॥ "किंकर" पर कृपाल प्रभु होइहैं, देइहैं दरश सुमोहि खरारी॥ वे ही० ३ ॥

(सब बाग़में घूमती हैं–किंकिणिशब्द सुन रामचन्द्र लक्ष्मणसे कहते हैं)

श्रीराम–दादरा:–आई जनकदुलारी बाग़में–टेक–
गौरी पूजने हेत सखी लै,आज़ु इतै पग़ु धारी ॥ बाग़में० १ ॥
जाहित होत स्वयम्बर भारी,सोई राजदुलारी॥ बाग़में० २ ॥
याकी देखि अलौकिक शोभा,मम पवित्र मन वारी ॥ बाग़में०३ ॥
"किंकर"कारण जान विधाता,फरकत सुअंग हमारी॥बाग़में०४

(दोनों भाई लता ओट होते हैं)

सीता–(स्वतः) अरी ! नृप किशोर मेरे मनको हरण कर न मालूम किधर चले गये (चारों ओर देखती है)

१ सखी–चौपाई:–
देखहु लता ओट दोउ भाई । लेत सुमन दल मन हरखाई॥

गाना:–निरखु सखि, श्यामल गौर कुमारे ॥ टेक॥
बौर लतानकी ओट सखीरी, द्युति सम होत उजारे ॥ निरखु०१
कोटि अनंग लजावनि छबि है, विज्जु छटा छहरारे ॥ निरखु० २
गुरुमुख सिंह निज नैन विलोको, अवधनृपतिके बारे ॥निरखु० ३

सीता–(रामरूपका ध्यानकर आँखें बन्द करती है)

सखी-(व्यंगसे) चौपाई-

सुनहु वचन मम जनक दुलारी। अति हित करन समय अनुहारी॥
बहुरि गौरिकर ध्यान करेहू। भूपकिशोर देखि किन लेहू॥

सीता-(गूढ़ वचन सुन आँखें खोलती हैं)

सखी-(व्यंगसे) दोहा-

पुनि यहि बेला कालिह मैं, आऊँगी यहि बाग़।
देखन सुमन चकोर शुक, हियसों सह अनुराग॥

चौबोला-हियसों सह अनुराग, बाग़की शोभा फेरि निहारौं॥
मन रुचिके अनुसार सुमनको, शोभा ऊपर वारौं॥
होत विलम्ब सुकारजमाहीं, सोई हिये बिचारौं॥
अब टुक गौरि पूजि निज २ गृह, वेगिहिं सब पगु धारौं

हिये अभिलाषा भारी जी-आजकी दशा निहारी जी-ईश ग
जानि न जाई-ना जाने का होनहार है मन नहिं मोद समाइ

गाना-खेमटा-चलो भई बड़ी देर-गौरी पूजन सिय प्यारी॥ टेक
गौरी पूजन नित आवत-न देर लगावत-आज
बड़ी बेर॥ गौरी० १॥ गौरीको जो कोइ ध्या
मनोफल पावे-चल तुहूँ इही बेर॥ गौरी० २॥ भ
युत गौरी पूजो-ध्यान नहिं दूजो-करौ तनक
देर॥ गौरी० ३॥

(सब देवीके मन्दिरमें जाती हैं-सीता पूजन करती हैं)

सीता-ओ३म् भगवत्यै नमः। जलं समर्पयामि। चन्दनं समर्पया
अक्षतं समर्पयामि। पुष्पं समर्पयामि। धूपदीपनैवेद्यं स
यामि। ताम्बूलं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि॥

स्तुति।

सवैया:—उत्पति पाल संहार करौ, तुम मातु सदा श्रीशम्भु पियारी।
वरदायिनि श्रीगिरिराजसुता, तुम सेवत देत पदारथ चारी॥
आदि न मध्य न अन्त तुम्हार,अहौ तुम विश्व विमोहन हारी।
"किंकर" केर मनोरथ जानत,मातु करौ पुर आश हमारी॥

हे माता ! तुम संसारकी उत्पत्ति, पालन और संहार कर्त्री हो, तुम्हारी सेवासे सब कामनायें सुफलित होती हैं। तुम वरदेनेवाली तथा श्री शिवजीकी प्यारी हो। अपनी इच्छानुसार रूप धारण करनेहारी और संसार मोहनी हो।

चौपाई:—

मोर मनोरथ जान हुँनीके। बसहु सदा उर पुर सबहीके॥

देवी—चौपाई:—

सुनु सिय सत्य अशीष हमारी। पूजहिं मनकामना तुम्हारी॥

सवैया—

जाकी जु प्रीति लगै जियसों, सुसनेह रहै शुठि सुन्दर साँचो।
भेद न होय हिय जितको, परत्यक्ष सो आतम सों नहि बाँचो॥
त्यों करुणा निधि दीन दयाल, सनेह तुम्हार भली विधि याँचो।
मिलि है वर सुन्दर श्याम वही,तुम्हरे शुठि जौन अहैं मन राँचो॥

(सीता सखियों सहित राजभवनको गई)

(राम लक्ष्मण गुरुके पास आये)

दोनों भाई—(विश्वामित्रको फूल देते हैं)

विश्वामित्र—(श्री रामकी ओर देख) अहो पुत्र ! तुम्हारा चित क्या चञ्चल सा जान पडता है सो कारण कहो

श्रीराम-(हाथ जोडकर) सवैया:-

मैं प्रभु आयसुको धरि शीश, गयो जब ही हित कै फुलवारी।
तोरत फूल तहाँ ए दशा भई, ऐसी न जाति है देह सम्हारी॥
का कहिये प्रभु सों ललिते यह, जैसी भई नई रीति हमारी।
नेह भरो ठगिया मैं गयो, बगियामें लखी मिथिलेश कुमारी॥

सूचना।

दोहा:-सुनो पियारे दर्शको, सबहिं कहौं समझाइ।
लीला पुर मिथिलेशकर, सब कहँ दीन्ह दिखाइ॥

चौबोला:-सब कहँ दीन्ह दिखाइ, बहुरि लीला बाटिका दिखाई।
कालिह भंग धनु होवेगा, सो अवसि देखियहु आई॥
सकल नृपनको शक्ति बहुरि, धनु भंग देखियो भाई।
परसुराम सम्बाद देखिये, मन आनन्द अधिकाई॥

दौड़:-अवसि सब देखहु आई जी-ध्यान हरिपदमें लाई जी-ग्रहण चित
शिक्षा कीजै-श्री अवधेश कुँवरको सुन्दर लीला आय लखीजै।
बोलो श्रीअवधेशनन्दनकी जय॥

पंचमाङ्क.

विनय।

बनजारा तिताला:-

जगदीश जगत पति प्यारा। कर भव दुख दूर हमारा॥टेक॥ तु
सबके जीवन स्वामी-घट २ के अन्तरयामी-सब व्यापक सब

न्यारा ॥ जगदीश० १ ॥ सब रचना विश्व तुम्हारी-जल भूमि औ अम्बर भारी-अचरज यह खेल पसारा ॥ जगदीश० २ ॥ ब्रह्मा शिव ऋषि मुनि देवा-नित करत तुम्हारी सेवा-सबका तू पालन हारा ॥ जगदीश० ३ ॥ करुणानिधि दीनदयाला-शरणागत जन प्रतिपाला-ब्रह्मानन्द ए दास तुम्हारा ॥ जगदीश० ४ ॥

शिक्षा ।

क़व्वाली गज़ल:-

उठ जाग मुसाफिर देख ज़रा-है कूचकी नौबत बाज रही ॥टेक॥ सोवत २ बीत गई, सब रात तुझे परभात भई। सब संगके साथी तो लाद चले, तेरे नैनन नींद विराज रही ॥ १ ॥ कोई आज गया कोई काल्ह गया, कोई जावन हार तयार खड़ा। नहिं क़ायम कोई मुक़ाम यहां, चिर कालसे ये हार बाज रही ॥ २ ॥ इस देशमें चोर चकोर बड़े, निज मालकी राख सँभाल सदा। बहुते हुशियार ठगाय गये, नहिं काहूकी साबित लाज रही ॥ ३ ॥ अब तो तज आलसको मनसे, कर संग तयार समान सभी। ब्रह्मानन्द न देर लगाय जरा, बिजली सिर ऊपर गाज रही ॥ ४ ॥

खमाच तिताला।

हरि सुमिरन बिन दिन जाय रहे ॥ टेक ॥
बालापन खेलनमें खोयो, योवन काम लुभाय रहे ॥ हरि०१ ॥
वृद्धपणेमें शिथिल भयो तन, नाना रोग सताय रहे ॥ हरि०२॥
जप तप दान योग नहिं कीनो, विरथा जनम गँवाय रहे॥ हरि०३॥
ब्रह्मानन्द भजन बिनु प्रभुके, भव सागर भटकाय रहे॥ हरि०४॥

सूचना।

दोहाः-सुनहु उपस्थित सभ्यगण,विनय मेरि मन धारि।
धनुष यज्ञ लीला लखौ, अतिही आनँद कारि॥
चौबोलाः-अतिही आनँदकारि, सकल देशनके राजा आयो।
अपने २ विक्रम नृपगण, जौनी भाँति दिखायो॥
धनुष भंग करि रामचन्द्र,जयमाल सभामें पायो।
परशुराम सम्वाद आप, सबको जाय दिखायो॥
दौड़ः-उधम बकबाद न कीजै जी-दिल्लगीको तज दीजैजी॥
ध्यानलीलामें धारो। रहै शास्त्र मर्याद होय सब विधि
कल्याण तिहारो।

प्रथम दृश्य।

स्थान-धनुष मखशाला।

जनकजी एक कुर्सीपर बैठे हैं-लोग आ आकर रंगभूमि देख २ बैठते हैं।

दो चोपदार आते हैं।

पहला चोपदार-जय होय, जय होय, श्रीमहाराजाधिराज मिथिलेश राजन्-जूकी जय हो।

दोहाः-जयति २ निमिराजवर, जय मिथिलाधिप भूप।
सुयश रहै जग छायके, कीरति विमल अनूप॥

दूसरा चोपदार-जय होय, महाराजाधिराज धर्मस्वरूप, विप्र-गो-पालक, पाप खंडन, धर्ममण्डन, श्री निमिराज जू महाराजकी जय होय।

दोहाः—सदा दिवाकरके सदृश, अचल रहै तव राज।
बढ़ै २ आनन्द प्रभु, नित नूतन सुख साज॥ जय होय।

कवित्तः—

पालत प्रजानको सधर्म्म नित करत राज, जाको दंड परम प्रचण्ड यमराज सो। लाजको जहाज़ करैं क्षत्रिन पराजय नित, परहित कारी शील जाको द्विजराज सो॥ भनै कवि जाको भयो भूमिमें दराज राज, गुनिन निवाजनमें दूजो देवराज सो। परम सुजान अरु अति ही सुनीति मान, दूजो कौन आज श्री जनक महराज सो॥

जनक—ऐ चोपदार ! तुम शीघ्र जाकर शतानन्द जू को बुला लाओ।

चोपदार—जो आज्ञा प्रभो ! (जाता है)

शतानन्दका भवन—(चोपदार पहुँचता है)

चो. दा.—(शतानन्दसे) हे स्वामी ! प्रणाम, आपको श्रीविदेहजूने याद किया है।

शतानन्द—बहुत अच्छा, (दोनों चलकर जनकके निकट आते हैं)

जनक—पण्डितजी ! प्रणाम।

शतानन्द—चिरञ्जीवी राजन् ! कहिये आप प्रसन्न तो हैं।

जनक—आपकी कृपा है।

शतानन्द—दोहाः—

धर्म्म नीतिके निपुण हौ, कहौ कौन सो काज।
जौन हेत बुलवायहू, वेगि कहहु निमिराज॥

जनक—दोहा—

रंगभूमिमें नृपति सब, जुरे सु अवसर पाय।
पै अबलौं नृप कुँवर युत, नहिं आये मुनिराय॥ ० ॥

सो जाकर शीघ्र बुला लाइये।

शतानन्द–बहुत अच्छा राजन्। (चलके विश्वामित्रके पास पहुँचते हैं)

विश्वामित्र–कहिये शतानन्दजी ! कैसे कृपा की। नमस्कार।

शतानन्द–नमस्कार, महाराज ! सब राजागण रंगभूमिमें आ गये, अब आप लोग भी पधारिये।

वि०मि०–बहुत अच्छा (रामसे) हे प्यारे राम लखन ! विदेहजीने बुला भेजा है, चलो देखें शंकरजी किसे बडाई देते हैं।

लक्ष्मण–दो०–आनँद ताहि सदैव प्रभु, जापर तुम अनुकूल।
यश भाजन जगमें लखौं, नाथ कृपा मुद मूल॥

वि०मि०–धन्य। (दोहा)

राजपुत्र तुम धन्य हो, क्यों न कहौ अस बैन।
मनो कामना तुमन की, करै, सुफल त्रय नैन॥

(सब चले)

रंगभूमि।

जनक–देखोजी चोपदारो ! सबको यथेष्ट स्थानोंपर बैठादो, वृथा शोर न हो।

चोपदार–बहुत अच्छा राजन्! (सभाजनोंसे) देखोजी सभामें इस प्रकार वृथा और निरर्थक बकवादसे क्या लाभ, अपने २ स्थानपर बैठ जाइये।

दोहाः–करहुँ निवेदन सबन्ह सों, सुनहु सकल नर नारि।
कृपा समेत विराजिये, निज २ थल अनुहारि॥

(सब बैठते हैं)

(राजासे) महाराज ! सब बैठ गये)

विश्वामित्र आदिक रंगभूमिमें आते हैं–

जनक–प्रणाम भगवन् !

विं०मि०—कीर्ति बढ़े राजन् !

दोहाः—नृप विदेह निमि वंशमणि, कहहु स्वयम्बर हाल।
राजन् ! अस प्रण कीन्ह क्यों, तोरन धनुष विशाल॥

जनक—इसलिये कि जो वीर धनुषको खंडन करेगा, उसीके साथ सीताका व्याह होगा। अच्छा कृपया चलके रंगभूमि देखिये। (जाते हैं)

वि० मि०—(रंगभूमि देखकर) निःसन्देह मिथिलेशजू !

छन्दः—है अनुपम रचना वेदीकी, औ मंडप खूब सँवारा है।
शत कामदेवकी उपमाको, यह यज्ञ लजावन हारा है॥

जनक—छन्दः—

मेरी तो कुछ प्रभुताइ नहीं, सब किरपा नाथ तुम्हारी है।
दरशनसे हुआ कृतारथ मैं, यह सकल विभूति तुम्हारी है॥

जनक—दोहाः—पाणि जोरि युग चरणमें, अहै वन्दना मोर।
(मञ्च दिखाकर) कृपया दोऊ कुँवर युत, बैठिय प्रभु यहि ठौर॥

(बैठते हैं)

दूसरा दृश्य।

साधुराजा रामचन्द्रको देखकर प्रसन्न होते हैं—

साधु राजा—अहा हाहा ! धनुष तोड़नेहारे तो आगये।

चौपाईः—

अस प्रतीति हमरे मन माहीं। राम चाप तोरिहि शक नाहीं॥
बिनु भंजेउ भव चाप विशाला। मेलिहिं सीय राम उर माला॥
अस विचारि गवनहु गृह भाई। जय, प्रताप, बल तेज गँवाई॥

सवैयाः—वीर अधीर करैं रणमें आते, वीर छपाकरसे छुति धारे।
तोरि हैं शम्भु पिनाक यही, समरत्थ बड़े दशरत्थ दुलारे॥
तोरे बिना जयमाल सिया, हिय डारि ह दिव्य स्वरूप निहारे।
विक्रम, तेज, प्रताप, गँवाय, अहै भल भाय स्वमौन सिधारे॥

दुष्टराजा—(क्रोधावेशमें) कवित्तः—

मेरे भुजदण्डको अखण्ड शोर खंड २ शिवको धनुष चंड खंड कै बहाऊँगा। चाह उदवाहके उछाह छाय आये जौन, तौने नर नाह मुख बाह सा बनाऊँगा॥ किंकर जू दिव्य सिया हेत काल आवै यदि ताहूको कराल करवालसे भगाऊँगा। आजसे महान बल गौरव निधान ह्वैके, विदिशि दिशान निज कीरति गवाऊँगा॥

साधुराजा—क०—

बनत महान बल गौरव निधान अस, होत अनुमान मुख कारिख लगाओगे। देखि मृग काल विकराल करवाल ताजि, भगिहौ उताल हाल काल क्या भगाओगे॥ किंकर जु दिव्य चाप शंकरकी भारी दाप, बकत प्रलाप काँपि भवन सिधाओगे। भरम गँवाओगे न पाओगे महीपसुता, भाओगे न काहू मन-मोदक उड़ाओगे॥

दुष्टराजा—क०—

जानै देश २ के महीप कुलदीप तोहि, वादि बकबाद बिन स्वाद आइ ठाने हो। देखत ग़रूर भूरि शूर उर चूर होत, मोहिको अशूर क्रूरताते पहिचाने हो॥ किंकरजु दिव्य नृप दशरथ कुमार वेष, तिनको सुरेशते परेश जिय जाने हो। बातके प्रसंग संग, संग सब जान ढंग, अंग २ अंगके अभंग रंग साने हो॥

साधुराजा-क०-

जानी मशहूर कूर, पूरबेशऊर तुम, कायर ज़रूर यह नीके करि जानीमैं। ध्यावैं सुराधीश परमेश करि जाने ईश, ए हो अवनीश एई पूजित महानी मैं॥ किंकर सुदिव्य युगल मनुज दनुज हेत, ए वारक बिरुजके बरद बरदानी मैं। जग सुख दानीसों न कीनी पहिचानी मूढ़, डूब मरु उल्लूतैं चिल्लूभरि पानी मैं॥

दुष्टराजा-क०-

बार २ भाषत लबार बचको सम्हार, तोड़ फोड़ हाड़ मिल-ऊँगा धूल धानीमें। भाँट बनि हाट २ माँगै तू बराट द्वै २ टूक टाट दाताकी रहै तू मिहरबानीमें॥ दिव्य जू किंकर बलावेश नहिं वेष-माहिं, तजिनिज देश क्या तू आया मिहमानीमें। बैठ मत ऐंठ जग सेठके पनाती सम डूबमरु उल्लू०॥

साधुराजा-क०-

पाय नृपशासन शरासन शिब शंकरको, विमल विकाशनते तोरिहैं बखानीमैं। पाय जयमाल उर शाल शालि तेरे यह, कालहूके काल बरमाल बरदानी मैं॥ बादि बकवाद बिन स्वादको फ़साद करै, ह्वै है बरबाद यह नीकें करि जानी मैं। राम घनश्याम देखि लोचनाभिराम हमैं. डूब मरु उल्लू०॥

दुष्टराजा-क०-

लाजनकी बातनसों लजात नहिं लाजनसों, मानो तजि लाजगई आपही गलानीमें। कंजपात गात कुम्हिलात नेक बात बहे, एहैं नृपजात तिन्हैं त्रात बदै दानीमें॥ वीर धीरताई क्या दिखाओगे

प्रवीर बीच, किंकर हैं कौन काज आये रजधानीमें। कादर विरा-दर कुआदर सिधाओ नत, डूब मरु उल्लू० ॥

साधुराजा–क०–

तैने ना बुलाया नहिं आया हम राह तेरे, तेरा कुछ खाया नहिं डरूँ क्यों महानीमें। तेरे जो अमन्द ज़ोर ज़ोरआज़ माले फिर, बकता है वृथा मूढ़ क्यों कर नदानीमें ॥ किंकर सुदिव्य ज्ञान नफा नुकसान नाहिं, दुनियाके दीनमें न राम रहमानीमें। कामी तू हरामी तू, न नेक नेक नामी अरे, डूब मरु उल्लू० ॥

दुष्टराजा–ग़ज़लः–

अरे कादर निवल जगका क्यों बकता लनतरानी है।
मेरे भुजदंडके आगे यह क्या धनुही पुरानी है ॥ टेक ॥
उठाकर एकही झटके में तोड़ू चूर कर डालूँ।
हमारी इन भुजाओंकी नहिं शक्ती तू जानी है ॥ १ ॥
भलाए दुधमुहें बच्चे धनुषको तोड़ सकते हैं।
तेरी तारीफ़ यह सारी महज झूठी कहानी है ॥ २ ॥
हमारी वीरताईका जहांमें शोर है भारी।
न जानै तू अगर कुछ तो महज़ तेरी नदानी है ॥ ३ ॥
बना "किंकर" है तू इनका कौन करता मना तुझको।
दिखाता है फ़क़त तू ही, सभामें येक ज्ञानी है ॥ ४ ॥

साधुराजा–ग़ज़लः–अरे पामर ! बता क्यों तू वृथाकी रार है ठानी।
कठिन धनु शम्भुजीका यह करैगा मानकी हानी ॥ टेक ॥
करै बकबक वृथा सबमें जतावे वीरता अपनी।
गरजता मेघ जो ज्यादा बरस सकता नहीं पानी॥अरे पामर०१

भला किस वीरताईपर करै तारीफ तू अपनी।
धनुषका तोड़ना क्या तू महज़यक खेल हैजानी ॥अरेपामर०२
करेंगे चापका खंडन यही अवधेशके नन्दन।
नहीं है वीरताईमें जगतमें कोई इन सानी ॥ अरे पामर० ३
सदाहीसे बने "किंकर" हैं हम तो इनके चरणोंके!
न पहिचाना जो तू इनको महज़ तेरी नदानी है ॥अरेपामर०४

रावण—बाणासुरका आगमन।

रावण—भजनः—कहाँ सिया मोहि देहु बताई ॥ टेक॥
तोड़ि धनुष शिवशंकरजूको, अबहीं निज गृह जाउं लिवाई। कहाँ सि०॥१॥तोड़ैं न तोड़ैं इससे क्या मतलब,सिया लेनबस मम मन भाई ॥ कहाँ सिया० २ ॥

बाणासुर—(आकर) अरे तू क्या व्यर्थकी बकबाद लगा रक्खा है, और तू है कौन, सो तो बता।

रावण—अरे, तू, तू, तू, तेरा मूँ। तै पूछने वाला कौन है, अपना नाम तो कह।

बाणासुर—ह ह ह ह, अरे मैं कौन हूँ, मुझे पूछता है, मैं उसका पुत्र हूँ जिसके यहां भगवान भी भिखारी बने थे, और जिसने तुझे घुड़शालामें बाँध रक्खा था। सुन, सुन, मैं बलिका पुत्र हूँ, मेरा नाम है बाणासुर।

रावण—ह ह ह ह, तूने तो मुझे जानही लिया मैं हूँ लंकापाति दशकन्धर।समझा?

बाणासुर—अरे तू है दशकंधर, तो बकबक दूर कर।

रावण—अबे चुप रह। (गाता है) कहाँ सिया मोहि देहु बताई......

बाणासुर—(गाता है) भजनः—
नाहक़ क्यों बकबाद लगाई ॥ टेक॥ भारत गाल वृथा रे मूरख,

गुरुधनु धरचो निहारत नाई ॥ नाहक० १ ॥ नेक न लागत लाज तोहि शठ, करत गर्व नाहक अधिकाई ॥ नाहक० २ ॥

रावण-(बड़े गर्व्वसे) अरे शठ सुन :-

कवित्त-मेरे भुजदंडनते देखि खंड खंड दंड, भाजि ब्रह्माण्डहूते काल कीनो गौन है। परम प्रचंड नव खंडमें अखंड फैलो, देखिके प्रताप मार्त्तण्ड डोले मौन है ॥ देत देत दंड धन नाथ भयो द्रव्यहीन, सुनत कोदण्ड चंड इन्द्र मानो जौन है। बाहुकं छत्रदंडसो सुमेरु तौल्यों जाय, खीन मुंडमालीको कोदं गर्व कौन है ॥

बाणासुर-

कवित्त-जोई भगवान वरदान दाता तीनों लोक, तीन पायँ भूमिहे वेष बड़लीनो है। आये तात पास चीन्हों तापै नानिराः कीन्हों,दीन्हों दान लीन्हों ऊनो मानि रोष भीनो है ॥भाषे पितु लीजै मोहि दानी दान द्रव्य तुल्य, हौंही पाणि दा पालरेकै तौलि दीनो है । पर्व शर्वरीश जातें सर्व यश स भाषैं " रेरे" गर्व तेरो ऐसो हौं हूँ नाहिं कीनो है ॥

रावण-सवैया-

एकहि शीशकी कौन धरी, सिगरो जग ज्यों सरसों सम सोहै तौनहि शेषके वेध शरीरमें सूक्षम कीन्हें अभूषण जो है सो शिव वास कियो जेहि शैलपै,क़ौल भयो कर एकहि को है हौं नहि गर्व करौं करै कौन, प्रशंसत जाहि हरी रहतो है

बाणासुर-सवैया-

पीन पिनाक पुरारिको यों विरच्यो विधि लेकर वज्रको सार है

याकी न जानत तैं गुरुता नहिं सीख सुनै गुन्यो पूरो गँवार है॥
आपनो गर्व गवावनको धनु तोरनको शठ कीनो विचार है।
जो बढ़िकै बलते बलकै अवलोकत है सो तो नाऊको बार है॥

रावण–चौपाईः–
धनुष तोरि तौरौ मदतोरौं।पुरीउठायवारिनिधिबोरौं॥ (धनुष देखकर)
काह कहूँ रे तो सन भाई। जादू या महँ परत लखाई॥
और नहीं तो इस छोटीसी बातमें कौन बड़ाई–घर बुलाकर अपमान कराई।
लेकिन मैं तो सीताको ले जाऊंगा।

(नैपथ्यमें) अरे रावण! तेरी कन्याको एक दानव हरे जाता है, जाकर छुड़ा।

रावण–अरे! कौन लिये जाता है? (जाताहै)

बाणासुर–दोहाः–मेरे गुरुको धनुष यह, सीता मेरी माय।
यातें मैं गृह जात हूँ, दुहुँको शीश नवाय॥ (प्रणाम करके जाता है)

एक अव्यवस्थित अद्भुत अतिकाय राजाका आना।

वही–(झूमता, लड़खाता, गाताहुआ आता है)

गानाः–आया मिथिलाके देश, कैसा बाँका है वेष, हमीं तोड़ेंगे, शिवको धनुहवाँ यार॥ टेक॥ हमैं देहु तो बताई–कैसा धनुहाँ है भाई–तोरि देऊँ बहाई धनुहवाँ यार। देखो जी देखो सभी बातें न बनाओ, हँसी न उड़ाओ, हमारी मेरे यार। नहीं मारूँ गिन २ लातफिर भगिहौ चिल्लात–कैसा मेरा है गात–अजी वाह २ वाह ३ वाह ३॥ आया०॥ १॥

चोपदार–(आगेसे) अजी आप कौन हैं,जो कौएकी तरह काँव काँव करते, चील्हकी तरह मडराते, ऊंटकी तरह बलबलाते, जान न पहिचान, बेधडक पराये

मकानमें, विनां पूछे पाँछे, छूँछे छाँछे गधेके दूसर, ख़ासे धमधूसर, चलें आये ?
वही–अजी मैं, मैं, अरे मैं, मैं कौन हूं, ह ह ह ह, मैं कौन हूं, सच कहो, मुझसे कहते, मैं कौन हूं, क्या बताही दूँ ।

चोपदार–जीं हां ! कौन हैं आपी–जैसे बडे परतापी–की सोडींग हांकी–जरा कहियें तो अपनी ।

वही–हाँ । तो सच कहो,मुझसे पूछते हो मेरी–तो देख । हँसेगा तो लगादूँगा, यहीं तेरी ढेरी और सुन, मैं तो वही हूँ । अरे मेरा अच्छासा है नाम–भूला जाता है नाकाम–(एक दर्शकसे) अरे मेरे यार सहाई–मेरा नाम तो दो बताई–मैं तुम्हें दूँगा दिवाई–एक दमडीकी लाई–और, और दो कौडीकी मिठाई (कुछ सोचकर) अरे, हाँ, अच्छा ! रहनेदो, मुझे याद आगया, अजी हां, सुनो !

दोहाः–लीख सिंहका पुत्र हूँ, चीलरसिंह मम नाम ।
गूदड़पुर शुभनगरका, करता राज्य तमाम ॥ (हँसता है)

हा, हा, हा,हा,अरे क्या मैं ऐसा तैसा हूँ ? मुझे संसार जानता है । सुन,मेरे डरसे सबकोः-(घाँटो गाता है) "दिन नहिं चैन, रात नहिं निंदिया, तलफत करत विहनवाँ हो यारो । मोहि निहारो, मैं हूँ वाँका जवनवाँ हो यारो ॥ मोहि ० १ ॥ हाँ, हाँ, मोहि निहारो ॥ (जाना या नहीं)

चोपदार–ठीक है, महाराज चिलरसिंह ठीक है । जाना,

चीलरसिंह–अबे, नालायक, बदतमीज़, कुन्देनाशराश, क्या कहा,चीलरसिंह खबरदार ! अगर फिर ऐसा कहा तो जानले, बस हां । देख, इसतरह कहा कर, " आली जनाब, फ़ैज़माब बुलन्द इक़बाल, हातिमुज्ज़मा, रुस्तमे आलम, हुजूर–पुर–नूर श्री श्री श्री श्री २ सौ, हजार लाख, करोड श्री, श्रीमहाराजा बहादूर–राजे राजगान–ई-यम--ओ--डबल्यूजे--के-आर--यच-श्री मन्महाराजाधिराज श्रीश्री गूदडपुर नरेश, श्रीमान् राजासाहब राजा चीलर नारायणप्रसाद सिंह बहादुर

पे-खे-वे-अलिफ़-जूदेव देवानां सदा समरविजयिनां " बस ठीक इसी तरह कहाकर, समझा।

चोपदार—हाँ! समझा तो, मगर नहीं।

ची० सिं०—क्यों?

चो० दा०—यही कि मैं पाठशालाका विद्यार्थी नहीं कि, इतिहासका सबक याद करें।

ची० सिं०—फिर काम चलै कैसे?

चो० दा०—आप कहैं जैसे।

ची०सिं०—क्या कहूँ रे चोपदार!

चो०दा०—अजी, छोडिये ए बातें सरकार, और यह बताइये कि आप जो इतना बलबलाते अथवा खुर घिसते, पंजे फैलाये, मुँह बाये, यहाँतक आये हैं, तो आपमें कुछ बल, शक्ति, ताकत, जोर भी है, या यों ही, पढे न लिखे दरोगा नाँउँ।

ची० सिं०—हाँ! तो यों कह कि ताकत सुनना चाहता हूँ, अच्छा ले सुन, (सबसे) देखना जी कोई डरना नहीं, (चोपदारसे) हाँ! सुन, कान फटफटा ले, गर्दन टेढो कर, और जरा गौरसे सुन, (कहता है)

अब्बरके हम जब्बर, जब्बरके हम ताबेदार।
मारतेके पीछे वीर, भागतेके आगे तेज़ रफ़्तार॥

हाँ फिर और क्या, ऐसा तैसा।

चो० दा०—बस यही, "अब्बरके जब्बर,, कि और भी कुछ।

ची० सिं०—अरे और सुन, मैं जैसा बहादुर हूँ. तुझे बताता हूँ।

चो० दा०—हाँ, हाँ, फिर कहिये न!

चौ० सिं०–हाँ, सुन, (गाता है):–

हम तो बड़े वीर मज़बूते ॥ टेक ॥
मक्खी मारूँ टाँग उखाड़ूँ, तोड़ूँ कच्चे सूते।
लड़ते देखा चींटी चींटा, जाय पलँग तर लूके ॥ हम तो० १ ॥
जिसके काँख तले घुस जाऊँ, वे फिर कल नहिं पावें।
खुलजाते सब रात बितावे,एकौ पल नहिं सूते ॥ हम तो० २ ॥

चौ० दा०–वाह, वाह, यह बहादुरी, भला, खाते क्या हैं ?

चौ० सिं०–हो, हो, मैं क्या खाता हूँ ! क्या बहुत खाता हूँ, सिर्फ थोडा सा, क्योंकि:–

गाना–पेट हमारा है छोटा-तो मैं खाऊँ कितना ॥ टेक ॥
सौ मन पेड़ा, सौ मन बरफी सौमन चरबन जान।
सौ मन लड्डू होय सवेरे,तब करता जल पान ॥ तो मैं० १ ॥
नौ मन खीरे ककडी खाऊँ, दशमन गाजर तोल।
छः मन खाऊँ साग चनेका, खेतसे लेकर मोल ॥ तो मैं० २ ॥
सौ दो सौ मन ज्वार बाजरेकी रोटी नित शाम।
खाकर फिर भी भूखा रहता, तड़पत रात तमाम ॥ ॥ तो मैं०३॥
रावका शरबत भी मैं पीऊँ, मन पूरे पच्चास।
इतने परभी मुझको यारो, लगती बहुत पियास ॥ तो मैं० ४॥

और यही दश पन्द्रह मन इससे अधिक दो पहरको भी खाता हूँ और क्या अधिक बस, दश पांच मन सुपारी, कत्थे,पानके समझो । (सोचकर) अरे नौकर ! पान ला, पान ला, अबे संख पतियवा पान दे, पान, विना पान मुंह सूखकर पानी हो गया, जल्दी पान दे, नालायक जल्दी ।

नौकर—लीजिये सरकार ! पान लीजिये । (पान देता है)

चोपदार—हाँ महाराज ! तो कहिये कुछ शक्ति दिखला सकते हैं आप ?

ची० सिं०—हत् तेरी की, कहाँका सन्ताप नहीं तो । तमाम मेरी जाँच पड़ताल करडाली । और अभी शक्ति देखेगा । मेरी मुसीबत नहीं पूछा कि यहाँतक किन २ आफ़तोंको झेलकर आया हूं ।

चो० दा०—हाँ, हाँ, महाराज ! बतलाइये, मैं ज़रा पूछना भूल गया ?

ची० सिं०—भूल गया, भूल गया ! भूल गया तू कि मैं, सुन, जब मैं घरसे चला तो कैसे २ सुन्दर शकुन मिले हैं पहिले उसे सुन:—

सवैया—घरसे चलते भइ सामने छींक, अरु तेलिन सन्मुख आइ केरोई,
श्याल हुँहाइके मार्ग कट्यो अरु, स्वानन फटफट कान कोई ।
पुनि ब्राह्मण काना मिल्यो मगमें, घट पाँच मिले थे विना ही भरोई,
रांड, सुनार औ रोगी मिले, शकुनों अस पाय पयान करोई ॥

चो० दा०—और क्या हुआ महाराज ?

ची० सिं०—और क्या भाई, बडी कठिनाई, से हुई है अवाई, क्योंकि ईश्वरकी दयासे !

गाना:—है देह हमारी भारी ॥ टेक ॥
धोती भी नहिं हाथसे पहिनी, नौकरने पहिनाई ।
उठकर जल भी पिया कभी नहिं, पीर होत अधिकाई॥ है देह० १॥
किये दंडवत स्वर्ग मिले जो, तो भी सिर न झुकाये ।
सीय स्वयम्वर सुनकर मैंने बहुतै कष्ट उठाये ॥ है देह० ॥ २॥

सो भी मेरे नौकर संखपतियवाकी चतुराईसे बडा काम निकला । नहीं तो मुझे मिनटों तैयारीमें लग जाते । मगर उसने झटपट मुझे बोरेमें बाँधा, क्योंकि

मैं हूँ सीधा साधा, फिरे बैलपर लादा, वह बैल था हरामजादा, राहमें बहुत कूदा कादा, मैं गिरा जैसे लबादा, निकल पडा बुरादा, रह गया दम आधा, पर वह लाकर टेशनही पर दम साधा, देखते ही स्टेशन मास्टरने जवाब दिया कि " लाइन इज क्लोज " यानी इस लाइनसे हप्तेभर गाडियाँ न जावेंगी, हालां कि उसे ऐसा नहीं कहना था बल्कि यों कहना था कि " लाइन इज क्लौज फ़ार ए वीक" । मैं उसकी ग़लती बोरेमेंसे सुन रहा था, अगर बाहर होता तो पूरी इस्लाह करता, क्या करूँ चुप रहा, नौकर बेचारेने फिर उसी ढंगसे लाद फाँद ला "पोस्ट आफ़िस " में दे पटका। पोस्टमास्टर साहबने कहा, इतने बडे मालका पारसल पोस्ट आफ़िससे नहीं भेजा जा सकता, स्टेशनसे विलटी करो। विलटी-का नाम सुनकर मुझे मालूम हुआ गिलटी करने कहता है, घबडाके चिल्ला-उठा " दादा, दादा, दादा, " । मगर संखपतीने झट मेरा मुँह दाबा, नहीं तो मुझे ले जाते " यमके अजो यमके पियादा " आख़िरकार उस चतुर नौक-रने " आव देखा न ताव " चट दमडीका काग़ज ले लिफ़ाफ़ा बना ही तो डाला, बस, उसीमें मुझे बन्दकरके बैरंग ही " लेटर बाक्स " में डाल दिया। पोस्ट मास्टरने पैकरसे चीठियाँ निकलवाईं, और ठकाठक मुहरें ठुकवाकर थैलेमें फन्द कराके " मेल पियून " द्वारा रेलमें भेज दिया । पियून लाकर धडामसे पटका। इसी तरह पटकते लुढ़कते. पोस्ट आफ़िस "मिथिला सिटी " में बरामद हुआ। पोस्ट मास्टरने देखते ही कहा कि लिफ़ाफ़ेमें पीपा बन्द करके बैरंग ही किसने भेज दिया है। पता पढ़ा तो लिखा था, " तिरहुत स्टेट मुकाम मिथिला, पो० आ० मिथिला सिटी, केम्प आफ़ गूदडपुरनरेश संखपती सर्व्वेन्ट आफ़ महाराजा गूदड़ पुरको मिले "। फ़ौरनसे पेश्तर मुहर ठोंक पोस्टमैनसे कहा इसे अभी २ अकेला ले जाके केम्प दे आओ, शायद " धनुष-मख " की कोई "अरजेन्ट आर्टिकल" न हो, महसूल इसके पूरे साढ़े पौने, सवा नौ रुपये लेना उसने फ़ौरन मुझे उठा छकड़े पर लादके ले आया। इधर नौकर-

ने भी दूनकी सरपट मार पहुँच और महसूल चुका लिफ़ाफ़ा खोल डाला, जहाँसे मैं निकलकर धड़ाधड़ तड़ातड़ चला आता हूं।

चो० दा०–तो आपने इतना क्यों कष्ट उठाया, अगर न आते तो क्या कुछ हर्ज था?

ची० सिं०–अबे, आता क्यों न, क्या मैं नामर्द या कादर हूँ, जो स्वयंम्वरमें न आऊँ, मैंने तो पहले ही बताया है कि "आया मिथिलाके देश कैसा........हमीं तोडेंगे शिवका धनुहवाँ यार" हमीं०....यार ॥ (चारों ओर देख) अरे ! यहाँ तो सब पहले ही पहुँचे हैं क्या मैं पिछड़ गया ? क्या धनुष टूट गया ? क्या सीताका व्याह हो गया ?

नौकर–नहीं हुजूर ! देखिये धनुष तो बीचमें रक्खा हुआ है।

ची०सिं–ठीक, तू तो है न बताया करना ।

चो० दा०–अच्छा, तशरीफ़ शरीफ़ रखिये ।

ची० सिं०–क्या कहा रखिये। मैं यहां कुछ रखने नहीं आया हूँ ।

चो० दा०–अजी, बैठ जाइये ।

ची० सिं०–हां, यही कहो । अच्छा, कुर्सी यहां रक्खो, नहीं, यहां रक्खो । नहीं नहीं वहां रक्खो, सुनो, मेरे पास लाओ, अच्छा उस तख्तके पास रक्खो ।   (बार २ कुर्सी हटवाने बाद बैठता है)

तीसरा दृश्य.

जानकीका रंगभूमिमें आना–जनकका प्रण प्रगट होना–राजाओंका विक्रम दिखाना आदि ।

जनक–अहो चोपदार ! अब सीताके आनेका समय आगया, जाकर लिवा लाओ ।

चो० दा०–बहुत अच्छा महाराज !   (जाकर लिवा लाता है)

सहेलियाँ गाती हुई सीताको लिवा लाती हैं—

सहेलियाँ—गाना—

धीरे २ चली चलो प्यारी ॥ टेक ॥
रंग अवनि तक प्यारी चली चलो, हरि मूरति उर धारी ॥ चली
चलो० ॥ १ ॥ तारन सहित पूर्ण शशि जैसे, त्यों तूहूँ सुकुमारी ॥
चली चलो० ॥ २ ॥ श्रीद्विजदेव मनोहर मूरति, बार २ बलिहारी ॥
चली चलो० ॥ ३ ॥

सीताका रंगभूमिमें पहुँचना ।

सहेलियाँ—दादरा:—

श्रीमिथिलेश दुलारी, लखौ इत ॥ टेक ॥
दश २ के भूरि महीपति, आये वेष सँवारि ॥ लखौ इत० ॥ १ ॥
तवमुखचन्द,चकोरसरिसमन, कीन्हेतनमनवारी ॥लखौ इत० ॥ २
समुझि कठिन धनु कोउशंकितअति,कोऊहोत सुखारी॥लखौ०॥
मुनिसंग राजकुमार लसतदोउ, जेहितुमकाल्हिनिहारी॥लखौ०॥
मिथिलापुर नर नारि सबै मिल, निरखत नैन पसारी ॥ लखौ०॥
दिव्यजू किंकर केर मनोरथ, पुरवहिंगे त्रिपुरारी ॥ लखौ ० ॥ ६

स्त्रियाँ प्रण विषय समझ देवी देवता मनाती हैं—

स्त्रियाँ—ग़ज़ल:—भरोसा एक तेरा है, उमापतिजूके सुकुमारे।
हरो तुम धनुकी गरुआई, सकैं जेहि तोरि रघुवारे ॥ टे
हरौ जड़ता जनककी वेगि, हे विधिजू दया करके ।

होमतिमेरीसी,प्रणत्यागें,व्याहरघुपतिसेकरडारें॥भरोसा०॥१॥
कहै जग नीक यह जोरी, भावती मनमें सबहीके।
किये हठ दाह होवे मन, उसे नृप त्याग कर डारें॥भरोसा०॥२॥
यही है लालसा "किंकर" सकल मिथिलानिवासीका।
योग्यवर राम,सीताके,सुभग मनके हरण हारे॥भरोसा०॥३॥

सब नियत स्थानपर बैठती हैं।

नक-(चोपदारोंसे) हो चोपदार ! जाकर सुमति, बिमति, दोनों बन्दी-जनको मेरे निकट बुला लाओ।

ो० दा०-जो आज्ञा महाराज ! जाता हूँ (जाकर बुला लाते हैं)

(विरुदावली कहते हुये बन्दीजनोंका आना)

ुमति-दोहा-कैसे मणि दर्पणन्हमें, नृपकिरीट दरसात।
जनु शशिमंडल बहुत रवि, परते बिम्ब लखात॥

ेमति-सवैया-
सोहत मंचनकी अवली, गजदन्तमयी छवि उज्ज्वल छाई।
ईश मनो वसुधामें सुधारि, सुधाधर मंडल मंडि जुन्हाई॥
तामहँ केशवदास विराजत, राजकुमार सबै सुखदाई।
देवनसों जनु देवसभा, शुभ सीयस्वयम्बर देखन आई॥

ुमति-दोहा-को यह देखत आपनो, पुलकित बाहु विशाल।
सुरभि स्वयम्बर जो करत, मुकुलित सखा रसाल॥

िमति-सोरठा-जेहि यश परिमल मत्त, चंचरीक चारन फिरत।
दिशिहु विदिशि अनुरक्त, सुतौ मल्लिकापीड़ नृप॥ १॥

सुमति-दो०-जाके सुख मुख वासते, वासित होत दिगन्त।
सो पुनि कहु यह कौन नृप, शोभत शोभ अनन्त॥
विमति-सो०-राजराज दिगवाम, भाल लाल लोभी सभा।
अति प्रसिद्ध यहि नाम, काश्मीरको तिलक यह॥ २॥
सुमति-दो०-निज प्रताप दिनकर सदृश, लोचन कमल प्रकाश।
पान खात मुसुकात मृदु, को यह केशवदास॥
विमति-सो०-नृप मानिक, सुत वेस, दक्षिण त्रिय जिय भावतो।
कटि पट पीत सुदेश, कल कांची हिय मंडई॥ ३॥
सुमति-दो०-कुंडल परसन मिस कहत, कहौ कौन यह राजु।
शम्भु शरासन गुन करौ, कानन लिखित आजु॥
विमति-सो०-जानहु बुद्धि निधान, मत्सराज यह राजको॥
समर समुद्र समान, जानहु सब अवगाहिके॥ ४॥
सुमति-दो०-अंगराग रंजित रुचिर, भूषण भूषित देहु।
कहत विदूषणसों कछू, कहौ कौन नृप येहु॥
विमति-सो०-चन्दनचित्रित अंग, सिन्धुराज यह जानिये।
बहुत वाहिनी संग, मुक्ता माल विशाल उर॥ ५॥
सुमति-कवित्तः-सोहै चारु मार संग लीने ऋतुराज यह, कीधौं
सिद्धि साधन सुखमा सुघर हैं। कीधौं सुरराज
तो जयन्त साथ राजै जनु, कीधौं सुख सहि
शृंगार रूप वर हैं॥ कीधौं श्याम रूपके ललि
रवि राजि रहे, शोभाके अगार साथ लीने सुधा
धर हैं। साथ मुनि नाथके विराजैं नृपबाल कौन
करत सनाथ कीधौं नाथ हरि हर हैं॥

विमति-क०:-सूरजवंश अवतंश, मुनिजनके परम धरम, जीवन महे-
शके, सुपालक शुभ पथके। धरमके रक्षा हित धरत
धरामें तनु, सोहत नवल रूप मदहर मनमथके॥
सुन्दर कलित कला वलित सुजान शुचि, सुखके
निधान गुण गौरव सुगथके। हरिके अवतार भुजबलके
अगार अति, नाम "राम-लखन" कुमार दशरथके॥

सुमति-दोहा:-सिगरे राज समाजके, कहौ गोत अरु ग्राम।
देश, सुभाव, प्रभाव, कुल, बल विक्रम, गुन, नाम॥

विमति-कवित्त:-पावक, पवन, मुनि, पन्नग, पतंगपति, जिते ज्योति-
वन्त जग ज्योतिषन गाये हैं। असुर प्रसिद्ध, सिद्ध,
तीरथ, सरित, सिन्धु, केशव चराचर जे वेदन
बताये हैं॥ अजर, अमर, अज, अंगी और अनंग
सब, वरनि सुनावे ऐसे कौने गुन पाये हैं। सीताके
स्वयम्वरको रूप अवलोकिवेको, भूपनको रूप धरि
विश्वरूप आये हैं॥ (आये)

दोनों-दोहा:-प्रभुको आज्ञा शीश धरि, आया हूँ प्रभु पास।
जो कछु होवे काज सो, कीजे नाथ प्रकाश॥

जनक-दोहा:-ऐ मेरे सब बंदिजन, लखौ सु हमरी ओर।
पूर्ण भाँति समझाय प्रण, सबहिं सुनावहु मोर॥ (जाओ)

बन्दी-(हाथ जोड) जो आज्ञा, अन्नदाता! (लोगोंको सुनाकर)

दोहा:-नैक ध्यान देकर सुनो, जुरे जिते महिपाल।
भुजा उठाय सुनावहूँ, प्रण विदेह यहि काल॥ सुनो?

चौपाई:–

नृप भुजबल विधु शिव धनु राहू। गरुअ कठोर विदित सब काहू।
रावण बाण महाभट भारे। देखि शरासन गँवहिं सिधारे।
सोइ पुरारिको दण्ड कठोरा। राज समाज आजु जेहि तोरा।
त्रिभुवन जय समेम वैदेही। बिनहि विचार बरैं नृप तेही।

ऐ द्वीप द्वीपोंके महिपाल, हम दोनों भुजा उठाय विशाल, निज महिपाल मुकु मणिके प्रण कहते हैं। सुनिये ! सब नृप भुजबल चन्द्रमा समान ताके ग्रसनके शिव धनु राहु समान है। यह जैसा भारी और कठोर है वह सब विदित ही है कि जि देख रावण और बाणासुर आदि वीर चुप चले गये सो इस धनुषको जो को राजा आज इस राजसमाजमें तोडैगा-उसे त्रैलोक्यविजय समेत विना विच सोंचे जानकीको राजा विवाह देंगे।

एक राजा–फिरसे कहो, क्या बकते हो।

बन्दी–सुनिये, महाराज ! सुनिये।

गज़ल:–प्रतिज्ञा जनककी यह है, धनुष टूटै पुरारीका।
जो तोड़ै चाप शंकरका,वही पति हो कुमारीका॥ टेक॥
शुद्ध रजनीशसा बल भूपके,वाहोंका जो भारी।
ग्रसनको राहुसा है चाप, शंकर शूलधारीका॥ प्रं० १॥
धनुष जैसा कठिन है वह,सभीपर खूब रौशन है।
घटाया मान जो है बाण,औ रावण सुरारीका॥ प्रतिज्ञा०॥२
असुर सुर नाग नर किन्नर ,रूप भूपोंका धरि आये।
नहीं है भेद कुछ भी याँ,शूद्र औ ताजधारीका ॥प्रतिज्ञा०॥३
सभामें आज जो कोई, नृपति यह चाप तोड़ेगा।
तर्क तजिके करैगे व्याह,नृप अपनी दुलारीका॥ प्रतिज्ञा०॥

करो साहस पराक्रमको, सकल नृप आज क्रम २ से।
लहो "किंकर" सुकीरति चाप, जो टूटै पुरारीका ॥ प्रतिज्ञा०५

दूसरा राजा—अजी, मेरा ध्यान ज़रा और तरफ़ था, सुना नहीं, मुझे भी बता दो।

बन्दी—अच्छा, महाराज ! ज़रा ध्यान ठीक कीजिये।

दोहा—सावधान होकर सुनो, नृपवर ! कान लगाय।
प्रण हम राजाका कहें, अपनी भुजा उठाय ॥

छन्द राधेश्याम—
यह महा महोत्सव समारोह, राजाके प्रणका परिचय है।
अवसर है आर्य्य परिक्षाका, परिणाम प्रणयिनी परिणय है॥ १ ॥
जिस महादेवके धन्वाको, महिपाल न अबतक उठा सके।
दशशीश और बाणासुरभी, नहिं जिसे हलाऔ हटा सके ॥ २ ॥
उसपर प्रण करके मिथिलेश्वर, बैठे हैं आर्य्य परीक्षामें।
पृथ्वी, वीरोंसे शून्य नहीं, प्रण ठाना इसी प्रतीक्षामें ॥ ३ ॥
राजाकी सब सौगन्ध शपथ, धन्वाद्वारा पूरण होगी।
जो वीर धनुषको तोड़ैगा, सीता उसको अर्पण होगी ॥ ४ ॥

दोहा—वह देखो दर्म्यानमें, धरा है धनुष विशाल।
उधर देखलो जानकी, खड़ी लिये जयमाल ॥

छन्द—वीरोंमें कितनी ताक़त है, यह आज बानगी देखना है।
क़ौमी जुर्रत, क़ौमी ताक़त, क़ौमीमरदानगीदेखना है ॥ ५ ॥
देखैं वह कौन दिलावर है, जिससे दामादी की जाये।
शहज़ोर कौन शहज़ादाहै, जिसकोशहज़ादी दी जाये ॥ ६ ॥
शेरोंके सामने मान लहैं, यह ताव कहाँ स्यारोंकी है।
क्रम २ से जान लड़ा दोसब, जानकी जानदारोंकी है॥७॥

तीसरा राजा–संस्कृतं ब्रूयात्।

बन्दी–श्रुणुताम्, नरपते ! अहं ब्रूयेति, हे द्वीपेश्वरा ! करौ उत्थाय प्रार्थयामहे, शंकरस्य धनुः सर्वेषामग्रे प्रतीयते, यादशीम् काठिन्यम् भारवराह सन्ति सर्वेषां विदितमस्तु। येषां समक्षे दिङ्मुख बाणासुरादि दैत्येश्वरा दर्शनैव पलायमाना सन्ति। अस्य धनुः अस्यां राजसभायां यस्य पुरुषस्य खण्डनम् कर्त्तुं सक्नोति, सा राजकन्यां मधुपर्काधिकारीम् भविष्यति। बोधयन्तु जनाः।

तैलङ्गराज–तिलंगा माटनंची चपुड़ी।

बन्दी–सर्वदेशाधिपय जु क्षत्री ! मायक्क वचन प्रमाणानिकी बुजुण्ड्री तमयुक्का वाहुबलनुंची यत्ती यज्ञ समाजुली श्रीजनक जू महाराजजी पेद्दा पारम्प्यति चप्पि नन्दकूँ थुडुरी। अन्तराजूल भुजा पराक्रम इचटा चन्द्रनींरोडों श्रीरुद्रो खभी धनुक राहूनी समानं। ग्रसिनूँकी ग्रहन संख्या अइता दोई दीठी। अन्दर के तेलिया वड़तुण्ड्री, दीनवले ईवरूँ दुस्तर तिक्कली। कठोर गल दूँ चुरुन्द्री ई धनुक दी अति क्रतंकल दूँ, रावण वाणासुड़रू आति गलबी रूपरनी वीरन्नू तप्पिक्का तरलीपोहरी, इस बण्ड्री शंकरुनींदी धनुक अति कठोर सब रैत्ताईद्दीना। ई राजुल समाज यब्बरू ईक्कताड़ो मूड़लोकनरो विजय यश भवकं समेत श्रीजनक नन्दनी प्राप्त औनूँ।

गुर्जरराज–तमारो बोलवो ह्यमझा न थी, गुजराती बोकलो।

बन्दी–हे सर्वे देशानो राजायो ! म्हारो बोलवो सम्हारो केंहू । ए हाथ ऊँचो करिएं सभामें कुहू छूँ, के महाराज जनक जू प्रतिज्ञा धनी। जे शिव धनुक देखी, रावण वाणासुर मोटे बलवान छतांते पण बहाना करी चाली गया। ए बू महादेवजी नूँ धनुक छतांजे कोई आज दीवारे तोड़से, तेने त्रिनलोकनी विजयनो यश मिलजे, नेवली राजा जनक पोतानी कन्यानी प्रणवासे।

पार्सीक–मन नमी फ़हमांदेम पस वज़बान फ़ारसी बगो।

बन्दी–ऐ सलातीन हर दयार व मुकाम हर एक खुद व ज़ोर रुस्तम व शाम, व गोश व दिल मुखातिब बाशद। हर चन्द कि जोर बाजूय राजगान हम चूँ माहताबस्त,ई नावक महादेव मुहीब व ज़नब बाशद। कि नूर अज़रूय माहताब व वरद गिरां व सख्त। चक़दर कि पहलवान रुई तन हम चूँ रावन व बानासुर व मुर्जरद दीदनश सर बगरेवां वापस रफ्तन्द। बाजह बाद कि शाह जनक अहद बस्ता कि हम श्व हरकसे, ई नावक महादेव रा ख्वाहद कशीद। बे गुमां उरूसे सीता रा ख्वाहद याफ्त, व नाम नामश दर अर्श आलम रौशन ख्वाहद शुद।

इङ्गलेण्डीय–आई डिडनाट अण्डर स्टैण्ड प्लीज एक्सप्रेस दिस इंगलिश।

बन्दी–एटेन्शन। एटेन्शन॥ एटेन्शन॥ प्लीज़। ओ महाराजाज़! लेट अस डिक्लयर दैट हिज़ मजेस्टी महाराज जनक हैज़ सेटिंग ए साइड आल अदर कन्सीडेशन डिटर मिण्ड टू मेरी सीता। टू हिम हू औट आफ़ दिस एसेम्बली आफ़ महाराजाज़ शुड बेंक दिस शिवाजीज़ इस्टपेण्ड्स बाऊ टू डे। ऐण्ड दज़ बीन ए रि-नाउन इन आलदी थ्री वर्ल्डस, दी प्रोविटी ऐण्ड स्ट्रेंग्य आफ़ दिलबाऊ लूकिंग लाइकदी आफुल राहु इन कम्पेरिज़न टू योर मून। लाइक आर्म्स आर एवीडेण्ट आनदी वेरी साइट आफ़ इट, पावर फुल परसन्स लाइक एवन ऐण्ड बानासुर हैब गोनबैक मेकिंग ब्लाइण्ड एक्सक्यूजेज़।

बङ्गदेशीय–आमी किछू बूझते पारेना, किरपा पोखोक वंगदेशेर भाषा वखान कुरून।

बन्दी–ओ हे। सभा मध्यवर्ती नाना प्रदेशेर निवासित महाराज राजेन्द्रोगण आमी निजेर दोई हस्तो उत्तोलन कोरिया महाप्रभू श्रीमिथिलाधिपेर सुदृढ़

प्रतिज्ञा अपना देर निकट बरनन कोरेछी। आमेर बाक्येर एक बार अनुग्रह पूर्वोक कर्णपात कुरूँ न। ए ह्रा भयंकर वज्रो सदश महा धनुष अपना दिगके प्रदर्शित होयते छी। इहा राहु मोंतन आर राजा गणेर वल विशाल शुद्ध चन्द्रेर न्याई देखू न, रावो न बानासूर आदि वीर ईहा देखि पश्चात पोरे होइ आछेन, जिन एई भयंकर शंकर चापेर खंडन कोरवेन तिनि निस्सन्देह राजो कन्या श्रीजनक नन्दिनी त्रयलोक जयेर सहित प्राप्त होइवेन।

बन्दी–(मगधराजसे)

शेर–मगधराज शुभ समाज सिद्ध काज लाइये।
जनकराजको निवाज धनुषको चढ़ाइये॥

उठिये महाराज! धनुष तोड़िये।

मगधराज–दोहा–जीर्ण शीर्ण या धनुषकी, गणना कौन सुजान।
अभी चूर्ण करिदेत हूँ, देखहु शक्ति महान॥

अच्छा, ज़ोर आज़माता हूँ, यही आज्ञा है तो बजा लाता हूँ। (उठाने जाता है–न उठनेपर शरमाकर) महाराज! ज़ोर लगाऊँ, तो अभी उठाऊँ, परन्तु दूरसे आया हूँ, थका हूँ, मुरझाया हूँ।

विदूषक–अरे ना महाराज! ऐसा न करना, कहीं कमर बलखाये, नाभी टल जाये, तो नई मुसीबत सिर आये, फिर भला घर कौन पहुँचाये।

बन्दी–श्रीवर उज्जैनराज! वीरता दिखाइये। जानको लड़ाइये तो जानकीको पाइये।

विदू०–आज़माइये महाराज, लगाइये बुक्का, लग गया तो तीर नहीं तुक्का, कर डालिये धनुषके दो टुक्का।

उज्जैननरेश–(धनुषके पास जाकर और देखकर)

दोहा—वाह ! इसीके वास्ते, बड़ी लगाई हाँक ।
तोड़त हूँ मैं क्षणकमें, जैसे पल्लव ढाँक ॥
(उठाना चाहता है नहीं उठता)

अरे यह कमान तो वज्रसमान है,तोड़ना तो क्या उठाना भी बलाये जान है! जनकजी ! राजकीय कार्य्य हो तो मुझे बतलाइये, अगर बोझ उठवाना है तो मज़दूर बुलवाइये ।

विदू०—हहहह, वाह राजन् ! अच्छी करी । अच्छा जरा आराम फ़र्माइये । अगर तबीयत गर्मा गई हो तो जंगलकी हवा खाइये ।

बन्दी—कश्मीरराज आप अब बाँह उठाइये। तोड़के कमान नाम मानको बढ़ाइये ।

विदू०—आइये, आइये, आइये। ज़रा जोर तो दिखाइये ।

कश्मीर राज—(धनुष देखकर)

शेर—यह कौस क्या धनुष हो अगर आस्मान की। उसके भी तोड़नेमें नहीं फ़िक्र जानकी॥सीता मिली तो जाह मिली कुल जहानकी॥
(न उठनेपर)

मैं प्रेमरोगसे नातवाँ हो गया हूँ। इसलिये ज़रा हैरान हूँ । आज जयमाला मिल जाय, तो कल बन्दा पर्वतको भी उठा ले जाय ।

विदू०—वरमाला तो यों मिलती नहीं,अच्छा,तकलीफ़ न उठाइये,ज़रा बैठ जाइये।

बन्दी—भूप राज मथुराके दाँज यह मिटाइये। हार अगर न खाइये तो हार आप पाइये।

विदू०—ताल ठोंक आइये, निश्चिन्त आज़माइये, हौसला दिखाइये।

मथुराधिप—(आज़माकर) जनकराय ! मुझे याद कि शक्तिमान् महादेवके सन्मानमें हमारा मान और कल्यान है, इस कमानके भंगमें अपमान और हानि है, में अपयश नहीं लेता, नहीं तो इस दंडके दो खंड कर देता। क्योंकिः—

दोहा–ऐसे धनुष अनेक मैं, दीन्हों तोड़ि बहाय।
याहीके हित सभामें, चिल-पों रहा मचाय॥

विदू०–मान और अपमान कहाँका, नाचि न आया तो आँगन बाँका।

बन्दी–सौराष्ट्रनरेश आप भी अब वीरता दिखाइये। आप तोड़ धनुष, बान चाँदपे लगाइये। उठिये, महाराज!

विदू०–हाँ, हाँ, ज़रा आप भी मैदानमें आइये।

सौराष्ट्रपति–दोहा–

देखूँ तो या धनुषमें, है कितनोंसा भार।
जासु उठावनमें भये, सकल नृपति लाचार॥
तोड़ि टूक लाखन करूँ, मींजि मिलाऊँ धूल।
नोचि नोचि फेंकू इसे, यथा आपको तूल॥

अच्छा, मैं भी तो देखूँ इसमें क्या ऐसा भार है, जिसके उठानेमें हर एक लाचार है। (आज़माता है) अरे यह कमान तो बड़ा कड़ा है, क्या धरतीमें गड़ा है, ओः हो।

विदूषक–अरे नहीं महाराज! डरके मारे अकड़के पड़ा है। हाय! हाय!! आपकी भी आज़मायश अनर्थ हुई, मिहनत सब व्यर्थ हुई, अच्छा, अब मुँह फेरके बैठ जाइये, शरमिन्दगीसे बच जाइये।

(सब राजा वारी २ से उठते हैं धनुष न उठनेपर शरमिन्दा हो बैठ जाते हैं)

चीलरसिंह–बस, बस, मैं समझ गया, यह पतले दुबले लोगोंसे न टूटेगा, मैं, इसे अभी चूर २ कर देता हूँ। (फेंटा कसते गिरता है)

नौकर–(उठाकर) महाराज! पेट सँभालिये, धनुष गया ऐसी तैसीमें।

विदू०–अरे महाराज। कहीं ढोल न लुढ़के, नहीं बड़ा नुकसान हो।

चीलरसिंह—अरे देखो मैं विना तोड़े न छोड़ूँगा, ज़रा कसरत कर लूँ तो फुरती आ जाय (कसरत करता है बार २ गिर पड़ता है)

विदू०—वाह २ खूब भैंसा लोट रहा है।

नौकर—(सँभालकर) महाराज! कहीं हाथ पाव न टूटै—व्यर्थकी बकवकसे क्या लाभ, वैठ जाइये।

ची० सिं०—अरे संखपतियवा! तू क्यों मना करता है, क्या तुझे भी मेरी वीरता में सन्देह है? क्या उस दिन दोनों चींटोंकी लडाईके वक्त मेरी बहादुरी नहीं देखी थी, ज्योंही चींटे मेरी तरफ पिछडे कि उनकी दशा क्रोधकी देख मैं भागा ही चाहता था कि वे धक्का देही दिया, वह तो मैं सम्हलकर चारों खाने चित गिरा, नहीं तो दाँतोंकी सफाई थी, क्यों रे तूहीने तो उठाया था, फिर क्यों भूल करता है। मैं इस धनुषको सत्तू बनाके ही छोड़ूँगा (चलते २ गिरता है)

विदू०—अ र र र र। पीपा तो लुढक गया, कहीं राव तो नहीं निकल पडी।

नौकर—महाराज! रहने दीजिये, नाहककी तकलीफ न उठाइये।

ची० सिं०—अच्छा, तू भी ठीकही कहता है। फजूल ठकठकसे क्या काम, जो तोडेगा उसे मार सीतासे हम व्याह करलेंगे, बस यही ठीक।

नौकर—हाँ महाराज! बस ऐसा ही, अब बैठ जाइये (बैठता है)

ची० सिं०—(उठकर-सब राजाओंसे) सुनो, सुनो। मैंने एक अच्छी उपाय सोची है, सो करो।

दोहा—बहुत कियो बल ना हिल्यो, है धनु परम प्रचंड।
करि बल एकै बार सब, तोरौ हरकोदण्ड॥ १॥
और बात यामें कछू, असमंजसकी नाहिं।
जो जीतै संग्राममें, लेवे कुँवरि विवाहि॥ २॥

बस यही हाँ!

सब राजा–वाह ! वाह ! ! धन्य ३ । बहुत ठीक, चलो (सब एक साथ उठाते हैं मगर नहीं हलता, शरमिन्दा होते हैं)

विदूषक–बस, बस, कहीं सुरमा न हो जाय, रहने दीजिये , बैठ जाइये, फिर कभी । (राजाओंकी दशा देख जनक अकुलाते हैं)

जनक–अरे क्या वीरत्वकी महिमाका अन्त आया, या बहादुरोंके बलवान बाँहोंकी शक्तिको अभाग्यने घटाया । (आपही आप)

सवैया:–लीक अहै जिनकी जगमें सोइ वीर धुरीन धरापति आये ।
पै प्रण मोर पुरावनके हित, कोउ न शंकर चाप चढाये ॥
क्या विधि वाम भयो हम पै,जो पै वीरनकी भुज शक्ति घटाये ।
"किंकर"कीरति जाय तजे प्रण,ना तरु या पन शोक सहाये॥

(प्रकट)

छन्द–राधेश्यामः–

हे द्वीप २ के राजागण, हम किसे कहैं बलशाली है ।
हमको तो यह विश्वास हुआ, " पृथ्वी वीरोंसे खाली है"॥१॥
यदि यह विचार पहले होता, तो यह दुर्गती नहीं होती ।
हम ऐसा प्रण करते ही नहीं, तो ऐसी हँसी नहीं होती ॥ २ ॥
अब जो अपना प्रण तोड़ें हम, तो धर्म्म जाय और लज्जा है ।
पुत्रीको "क्वाँरी" रहना है, क्या करें हमारा वश क्या है ॥ ३॥
आसरा छोड़ प्रस्थान करो, हम सभा जोड़के पछताने ।
सीता सुकुमारीका विवाह, लिखा ही नहीं विधाताने ॥ ४ ॥

लक्ष्मण–(क्रोधावेशमें) श्री रामजीसे ।

कवित्त:–जनक महान अनजानसे कहे हैं वैन, चैन उर है न, बैन सुनिये कृपाके नाथ । पाऊँ जो रजाय तो उठाय मेरु

मन्दरको, चूरन बनाय जग बोरौं मैं समुद्र पाथ ॥ किंकर जू दिव्य चाप जाकी गुरुताकी पाथ, रावरे प्रताप बल भाषत शपथ साथ। धारि नवखंड धाम, खंड छत्र दण्ड सम, जौन करौं आज तौ धरौं ना मैं धनुष हाथ॥

(धनुष फेंकते हैं)

हे प्रभो ! ए तीरसे वचन सहन नहीं होते हैं। क्योंकि:-

छन्द-राधेश्याम:-

रघुवंशी वीरोंके होते, कोई ऐसी भी कहे नहीं।
जैसी उलटी सीधी बातें, मिथिलेश राजने आज कही ॥१॥
रघुवीर रामजीके होते, अनुचित वाणी कह डाली है।
यह शब्द हृदयमें चुभते हैं, "पृथ्वी वीरोंसे खाली है"॥२॥

क०:-करत हूँ प्रमान प्रण रोपिके सुजान यह, कन्दुक समान ब्रह्माण्डको उपारू मैं। खेलूँ चौगान फोरि डारूँ ज्यों काँचो घट,मूलक यों मेरुको मरोरि तोरि डारूँ मैं॥ बापुरो पिनाक है पुरानो किस गिनती माँहि, सिरसके सुमन सम अभी चीर डारूँ मैं। आयसु जो पाऊँ कमल नाल सा चढ़ाऊँ, शत योजन लै धाऊँ तब तो लखन कहाऊँ मैं॥

(रामके इशारेसे बैठते हैं)

विश्वामित्र-(जनक प्रति)

दो०:-हे राजा धीरज धरो, कर्य्य सभी हो जाय।
महादेवके चापको, खंडैंगे रघुराय॥

जनक-(उदासीन मनसे)-छन्द तर्ज-राधेश्याम:-

रावण अरु बाण व सब योधा, हारे जो धनुष उठानेमें।
क्या लाभ मिलेगा हे भगवन्! लड़कोंके खेल खेलानेमें॥
अब तक बदनामी बहुत हुई, अब क्या फिर हँसी करावैंगे।
योधा तो सारे हार चुके, बच्चे क्या धनुष उठा उठावैंगे॥

विश्वामित्र-क०:-छोटा सा दीपक घरभरमें प्रकाश करे, छोटी सी कटारीको कारी पहिचानिये। छोटी सी गोली बड़े रोगका विनाश करै, छोटा सा सिंह काल हाथिनको जानिये। छोटेके लघुता पै कीजिये न छोटा जी, छोटी सी बात यह हमारी आप मानिये। बड़ो ताड़को न झाड़ जानिये गुलाबकेर, तेजमान छोटेको न छोटा बखानिये॥

वि० मि०:-सवैया:-

हे राम! महासुख धाम सुनो, मिथिलेश हिये दुख दारुण व्यापी।
राजसमाज लहे अति लाज, विराज मनो मृदु मूरति थापी॥
किंकर दिव्यजू शंकरचाप, कठोर महा सु सबै अति तापी।
मों अनुशासन मानि रघूत्तम, भंजहु आप महान प्रतापी॥

सुनैना-(सखियोंसे)

सवैया:-हैं मतिमन्द सबै सजनी, हितकारक जे हमरे कहवावें।
कोउ न जाय कहै नृपसों, कहुँ बाल मराल कि मेरु चुढावें॥
दिव्यजू रावण बाण अमान, किये जेहि सो किसु बाल चढ़ावें।
भूप समानप गई विनशाय, न जानि परै विधिका जिय भावे॥

गानाः-वरज क्यों न देउ रे, उमर लड़कइयाँ ॥ टेक ॥

योधा होते तो तोड़ते कमनिया,अयश जनि लेउरे ॥उमर०॥१॥
होते चतुर चतुरइया दिखाते, कुमति मति लेउरे ॥ उमर० ॥ २ ॥
खेवा होते तो खेते नवरिया, न हठ करि रहउरे ॥ उमर० ॥ ३ ॥

सखी-ग़ज़लः-

सुनो महरानि ! गुनखानी, अरज़ मों चित्तमें धारी ।
गुनो जनि छोट करि तिनको कि जिनका तेज है भारी ॥टेक ॥
ऋषी कुम्भज समुन्दरकी, कथा सब जगतभर जानी ।
अमित जलको पलकमें जिन,किया है यान यश जारी॥सुनो०॥१॥
लखे लघु लागते दिनकर, उदयसे नाश होता तम ।
सु तैसे मंत्रके वशमें, रहै है देवता झारी ॥ सुनो० ॥ २ ॥
सुमनसम कौन कोमल है, उसीका बाणकर लीजे ।
मदन त्रिभुवन वशीकरता वशी, सब तन औ मन वारी ॥सु० ३॥
तजो सब सोचको मनसे, गुनो "किंकर" के वैनोंको ।
सरिस जलजात गातोंसे, दलैंगे चाप सुखकारी ॥ सुनो० ॥४॥

विश्वामित्र-(श्रीरामजीसे) दोहाः-

बात हमारी मानके, राम कीजिये काज ।
जनक विषाद मिटाइये, चाप तोड़के आज ॥

चौ०:-उठहु राम भंजहु भवचापू । मेटहु तात जनक परितापू ॥

श्रीराम-(हाथ जोड़) शेरः-

आज्ञामें नाथके न ज़रा देर होयगी ।
टूटेगा शम्भु चाप नहीं वेर होयगी ॥ (उठते हैं)

सीता (स्वतः) सवैयाः-

हे करुणाकर शंभु सुजान, करी अबलौं तुम्हरी सेवकाइ ।
आइ परो अब काम सोई, परिपूरण कीजिये वेगि सहाई ॥
श्रीरघुराजके पंकज पाणि, तिहारे शरासनकी गरुआई ।
फेनहुँते पुनि फूलहुते अरु, तूलहुते न लहै अधिकाई ॥

छन्द-राधेश्या०-

हे पार्वती हे दयावती, दीनोंकी माता तुम्हीं तो हो ।
मैं आज तुम्हीं पर निर्भर हूँ, मेरी वरदाता तुम्हीं तो हो ॥ १ ॥
कामनाके फूलोंसे गूथी, वह भेंट तुम्हें कर-मालाकी ।
अब आज तुम्हींको लज्जा है, जयमालाकी वरमालाकी ॥ २ ॥
यह धनुष तुम्हारे पियाका है, तुम पियाकी अपने प्यारी हो ।
तृणके समान तोड़ें रघुवर, तब सच्ची गिरा तुम्हारी हो ॥ ३ ॥
हे महादेवके महा धनुष, हे कुलिश इस समय हलकाना ।
रघुराईका कर लगते ही, तृणके समान तू हो जाना ॥

श्रीरामजी-(चापके पास पहुँच-चारों तरफ देख तथा सीताकी दशा समझ आपहीं आप)

चौपाईः-

का वर्षा जब कृषी सुखाने । समय चूकि पुनि का पछिताने ।
तृषित वारि विनु जो तनु त्यागा । मुये करहि का सुधा तड़ागा ॥

(धनुषको देखा)

लक्ष्मण-(धनुष तकते देख दिगपालोंसे)

कवित्तः-सुनहुँ दिशाओंके अहिं कुंजर कमठ कोल, आपलोग धीरज धरि पृथ्वी सम्हारौ जू । नैक नहीं हालै ध्यान धरौ यही

ख्यालै, भले रघुलालैं, चहैं धनुव खंडि डारौं जू ॥ होय सावधान सबै धरली धर धीर, यामें तुम लोग नहीं रंचक त्रुटि धारौ जू । वेर मत कीजो ध्यान देके सुन लिजो सब, जाने द्विजदेव यही शिक्षा हमारौ जू ॥

(श्रीरामजी–सब गुरुजनोंको प्रणामकर धनुषको एक ही झटकेमें उठाके तोड़ देते हैं)

(जयजयकी ध्वनि होती है)

(रनिवासमें सहेलियाँ तथा आकाशमें देवांगनायें
व किन्नर लोग मंगल गान करते हैं)

सहेलियाँ–ग़ज़लः–

वनज वारिज वदन वारो, सुभग श्रीरामकी जय हो ।
मदनके मद हरन हारो, सुभग श्रीरामकी जय हो ॥ टेक ॥
नगर नर नारियोंके सब, मनोरथ पूर्ण करनेमें ।
अमित सुरवृक्ष सरिवारो, सुभग श्री० ॥ १ ॥
सिया, महराज़ महरानी, पड़े थे शोक सागरमें ।
तरनीसम तिनके मुदवारो, सुभग श्री० ॥ २ ॥
लली जयमाल कर धारो, पधारो आशु गल डारो ।
लली करकेर अगवारो, सुभग श्री० ॥ ३ ॥
लहै जग दिव्य गति जिनसों, सुकहता मोद भरि किंकर ।
अनाथोंके सुरखवारो, सुभग श्री० ॥ ४ ॥

(सीता जयमाला लेकर सखियोंके साथ चलती हैं सखियां गाती जाती हैं)

सखियाँ–दादराः–चलो मग धीरे २ जनक दुलारी ॥ टेक ॥
जनक दुलारि ठुमुकि पग धारो, कीरहिं लजावनहारी ॥
चलो मग० ॥ १ ॥ निमिकुलचन्दिनि, त्रिभुवनवंदिनि,

जनकलली सुकुमारी ॥ चलो मग० ॥ २ ॥ अंग २ भूषण अति भूषित, बिछुवनकी झनकारी ॥ चलो मग० ॥ ३ ॥

देवांगनायें–विहागः–सखी, भयो, आनन्द आज अपार ॥ टेक ॥
हरकोदंड खंड करि डारे,दशरथ राजकुमार॥ सखी भयो० १॥
लखि२रूप अनूपम हरिको,बढ़त मोद सुखसार॥सखी भ०२॥
कह द्विज देव दूर दुख भाज्यो,देखि सीय करहार॥सखी०३॥

किन्नर–दादराः–चाप कैसे तोरि डारे राजदुलारे ॥ टेक ॥
ज्यहि गरुतातें नृप सब हारे,तनक भूमि नहिं टारे॥चाप कै०॥१
सोइ शंभुको चंड शरासन,तोरि खंड करि डारे॥चाप कैसे०२॥
"किंकर"सिय बर सुघर सलोनो,जीवन प्राणअधारे॥ चा०३

बन्दी–दोहाः–भूप सगरके वंशमें भगिरथ जग विख्यात ।
नृप दिलीप रघु अजहुके, यश कछु कह्यो न जात ॥
ताके सुत अवधेश है, श्रीदशरथ महराज ।
जाके सुत श्रीरामजी, शिव धनु तोड़े आज ॥

युवतियाँ–विहागः–
सखी सब गावहु मंगल गीत ॥ टेक ॥ करि द्वै खंड चाप महि डारे, हर्ष विषाद न चीत ॥ सखी सब० ॥ १ ॥ जय जयकार भयो तिहुँ पुरमें, कुटिल नृपति भयभीत ॥ सखी० ॥ २ ॥ कह द्विज देव आनन्द अति उमग्यो, देखि-अलौकिक प्रीति ॥ सखी० ॥ ३ ॥

(सीता जयमाला पहिनाती हैं, जय २ व
आनन्द गान होता है)

सहेलियाँ–गानाः–
प्यारे गले जयमाला–सोहत अति ॥ टेक ॥

कुंडल झलक पलक नहिं ठहरत, ज्योति अधिक उजियाला ॥ सोहत० ॥ १ ॥ सुभग कंठ जयमाला राजत, फूलि रहे जनु लाला ॥ सोहत० ॥ २ ॥ भ्रुकुटि धनुष शर तकनि सुतीक्षण, मोहन रूप निराला ॥ सोहत० ॥ ३ ॥ रसिक रामकी शोभा ताछिन, कछुक बरणि नहिं जाला ॥ सोहत० ॥ ४ ॥

दुष्ट राजा–सवैया–

लेहु छुड़ाय सिया कहँ कोउ, ए बालक दोनहुँ बाँधहु भाई।
काज सरै नहिं चाप टुटे मम, जीवत सीतहिंको लेइ जाई॥
जीतहु राजकुमार समेत, विदेह करैं यदि आय सहाई।
कालहुसे हम नाहिं डरै, इकवार करौं सियहेत लराई॥

छं०–राधेश्याम–

बाँधो इन दोनों लड़कोंको, मत दयाकरो सुकुमारोंपर।
अबतक फ़ैसला धनुषपर था, अब फ़ैसला है तलवारोंपर ॥१॥
कट जाओ, मर जाओ, ज़नपर, तौहीन न आये शानोंपर।
करदो खूनोंसे लाल ज़मीं, ले चलो सियाको प्रानोंपर ॥ २ ॥

साधु राजा–छंद–राधेश्याम–

तलवार, बान, शानो, शौक़त, सब धनुष टूटते संग गई।
अब नीची नज़रों घर जाओ, सब शूर वीरता भंग भई ॥ १ ॥
अब जो तलवार उठाते हो, लानत है इस मरदानीमें।
गर शर्म शानवाले हो तो, डूबो अब चुल्लू पानीमें ॥ २ ॥

हे भाई ! सवैया–

नाक पिनाकहिं संग गई, तुमरो बल तेज प्रताप बड़ाई।
जो बल चाप उठावतके क्षण, तोई अहै कि अबै कहुँ पाई॥

काहेके गाल बजावत हो विधि–न तुम्हरे मुँहमें मसि लाई।
राम सुजान लखो करि ज्ञान, तजो ईर्षा मद मान हे भाई॥

चौथा दृश्य।

परशुरामका आना, सबका प्रणाम करना इत्यादि।

परशुराम–(उस रूपसे आकर सबको देखते हैं)

१ राजा–दोहा–विजयपालका पुत्र हूँ, अजयपाल मम नाम।
मगधदेशका नृपति मुनि, सादर करत प्रणाम॥ १॥

२ राजा–" मैं उज्जैनका नृपति हूँ, चन्द्रभानुसिंह नाम।
उदयभानुसिंहका सुवन, तुमकहँ करत प्रणाम॥ २॥

३ राजा–" राजा हूँ कश्मीरका, भालचन्द्र शुभ नाम।
रायचन्द्रका पुत्र हूँ, स्वीकृत करहु प्रणाम॥ ३॥

४ राजा–" नृप सुरेन्द्रका पुत्र हूँ, है ब्रजेन्द्रसिंह नाम।
मथुराका मैं नृपति हूँ, मम साष्टाङ्ग प्रणाम॥ ४॥

५ राजा–" नृप हूँ मैं सौराष्ट्रका, विजयसेन है नाम।
चित्रसेनका पुत्र हूँ, स्वीकृत होय प्रणाम॥ ५॥

६ राजा–" लीखसिंहका पुत्र हूँ, चीलरसिंह शुभ नाम।
गूदड़पुरका अधिपती, मुनिजू करहु प्रणाम॥ ६॥

७ राजा–" घिनहूँसिंह हैं मम पिता, मोर पवारू नाम।
धूरपूरका नृपति मैं, मों सन करहु प्रणाम॥ ७॥

८ राजा–" नकछेदीसिंहका सुवन, भीनकसिंह है नाम।
पंडोहीपुरका नृपति, मुनि झुकि करहु प्रणाम॥ ८॥

१ राजा-दोहाः-अटपटसिंहका पुत्र हूँ, लटपट सिंह है नाम।
खटपट गढ़का भूप सुनि, झटपट करहु सलाम॥

(सब क्रम २ से प्रणाम करते हैं)

जनक-(हाथ जोड) हे भगवन्! प्रणाम! (सीताको चरणोंमें मेलते हैं)

परशुराम-कीर्त्ति बढै। (सीताको) चिरंजीवी पुत्री!

विश्वामित्र-नमस्कार महात्मन्!

परशु०-नमस्कार, नमस्कार (परस्पर भेंटते हैं)

वि० मि०-हे प्यारे राम लखन! तुम लोग भी प्रणाम करो।

श्रीराम-लखन-प्रभुवर! प्रणाम।

परशु०-सौर्य्य बढे राजकुमारो। (विश्वामित्रसे) हे मुनिवरजी!

गानाः-ए दोउ काके बलकवा हो, लोचन अभिराम॥ टेक॥
स्यामल गौर मनोहर जोरी, शोभा कोटिन काम हो॥ लो० १॥
देखत ही मन मोहि लेत है, सब सुखमाके धाम हो॥ लो० २॥
"किंकर" कहँके राजकुँवर ए, क्या इनके शुभनाम हो॥लो०३॥

वि० मि०-दोहाः-सरयू दक्षिण कूलमें, अवध नगर यक ठाम।
राजा दशरथके तनय, राम, लखन है नाम॥

परशु०-(जनकसे) छंद-राधेश्यामः-

हे जनक! कहो कारण क्या जो, याँ भीड़ भाड़ भारी यों है?
यह अभी शोर सा कैसा था? वीरोंमें छेड़ छाड़ क्यों है?॥ १॥
या कोई महा महोत्सव था? या किसीका व्याह यहांपर था?।
किस लिये सजावट करी गई, जो बड़ा जमाव यहांपर था॥ २॥

जनक-हे महाराज! आज सीता स्वयंवरकी सभा थी, जिसमें धनुष तोडनेकी प्रतिज्ञा थी।

परशुराम–धनुष। ओ निर्भय मनुष्य ! मेरे गुरुका धनुष। (टूटा धनुष देख क्रोधसे)

गानाः–किसने तोड़ा धनु शंकरका, टूटत ही डोला संसार ॥ टेक ॥
काननमें धुनि घोर छई, काननकी नाहिं सम्हाल भई, पूजा जब "राधेश्याम" छुटी, मैं भागा सुन गुञ्जार ॥ किसने० १॥
उत्तर देता नहीं मूढ़ क्यों ? गुरुके ऋणसे आज निबट लूँ, वरना तेरा राज पलट दूँ, करदूँ हा हा कार ॥ किसने० २॥

चौपाईः–

अति रिस व्यापेउ अंगन मोरा। कहु जड़ जनक धनुष केहि तोरा ॥

कवित्तः–खंड २ कीरति अखंड चाप चंडी पति, खंड करि ताको कौन कीरति लहत है। दिव्य जू बताव छल भावको विहाय लाव, पाव करनीको फल मौन क्यों महत है॥ सहस्र भुजासों अरि मेरो सो महान जान, आन कर क्यों ना वह संगर गहत है। परशु कराल काल गालते कराल मध्य, ना तो या समाज आज जाइवो चहत है ॥

श्रीराम–छंद–राधेश्यामः–

शिव धनुष तोड़नेवाला भी, कोई शिव प्यारा ही होगा।
जिसने ऐसा अपराध किया, वह दास तुम्हारा ही होगा ॥ १॥
जो कृपापात्र है गुरुओंका, वह कब किससे डर सकता है।
जिसपर है कृपा ब्राह्मणोंकी, यह काम वही कर सकता है ॥ २॥

कवित्तः–शील गुण आगर प्रसिद्ध सिद्ध नागर, सुनीजे ज्ञानसागर सुधीरता हियेके बास। भाषत अनन्त सन्त वेद भगवन्त तन्त, जाहि उपजावे पुनि करत तेई को नाश ॥ किंकर वदत दिव्य शंकरकमान यश, कान २ फैल्यो सोई परो है

तिहारे पास। ह्वै है धनु नाशकर कोऊ खास दास नाथ,
आयसु प्रकाश शीघ्र कीजिये कृपाके रास ॥

परशु०-छन्द-राधेश्यामः-

हे राम! सुनो सेवक वह हैं, जिसका सेवा पर ही दिल है।
जो वैरीका सा काम करै, वह काट डालने काबिल है ॥ १ ॥
हे राम! हुआ है अगुआ तू, इस क्षत्रीदलकी गाढ़ीमें।
इस लिये मसल वह याद आई, तिनुका है चोरकी दाढ़ीमें॥२॥

सवैयाः-हे राम! सुनो श्रुति सेवकसो,छल भाव विहाय करै सेवकाई।
द्वेष करै विन द्वेषन जो, करिये तेहि संग अभंग लराई ॥
"किंकर दिव्य सहस्रभुजानसों,है रिपु जौन दल्यो धनु आई।
सो विलगाय अबै विलगाय, सभा नतु देत सबै विनसाई ॥

१ दुष्ट राजा-मुनीश्वरजी! किया तो बहुत ही बुरा है किन्तु क्षमा कीजिये,
नादानकी नादानी पर न लक्ष कीजिये।

२ दुष्ट राजा-बेशक! ऐसी नादानी नादानोंहीका काम है।

३ दु० रा०-लड़कोंके लड़कपनका यही अंजाम है।

लक्ष्मण-छन्द-राधेश्याम-

सुखका भी सम्वाद कभी, दुखका कारण हो जाता है।
मीठा और मधुर बोलनेसे, तोता पिंजड़ेमें आता है॥ १ ॥
जो ज्यादा मीठा होता है, वह अपना नाश कराता है।
मीठे गन्नेको देखो तो, कोल्हूमें पेरा जाता है ॥ २ ॥
भाईने मीठे वचन कहे, तो क्रोध और चढ़ आया है।
सबसे पहलै यह बोल उठे, इस लिये चोर ठहराया है ॥ ३ ॥

क०:-कौन बात जातें अति क्रोध अधिकात जात, कारन न जानो
जात काहू मन ठानी है। ऐसियै कमान बालापनमें बहु आन २,

तोरी तान २ बान २ जग जानी है ॥ किंकर जु दिव्य सुनी याहित सु ऐसी रीस, देखी नहीं जैसी लाल लोयन लखानी है । कीजिये प्रकाश कृपा राशि खास दास जाने, यापै केहि हेत आज ममता महानी है ॥

हे प्रभो । क्या इसे हीरा मोती लगे थे ।

परशु०–दोहाः–

रे नृपबालक ! कालवश, बोलत, तोहि न संभार ।
धनुही सम त्रिपुरारि धनु, विदित सकल संसार ॥

गानाः–यह धनुष तो है त्रिपुरारीका, ए रे अजान पहिचान शान ॥ टेक ॥ सप्त द्वीप नव खंड, दंड हरको प्रचंड ब्रह्माण्ड जान । सो कर न गुमान । ए रे नदान । धनुही समान । धनु न बखान । कामारीका ॥ यह धनुष० ॥ १ ॥

सवैयाः–रे नृपबालक! बोलु संभारि, विचार हिये नहिं लावत है री ।
कालके गाल परैगो सही, तन देखि दया उर छावत है री ॥
किंकर दिव्यजू बान दशाननको, धनु जो शरमावत है री ।
चंड महा यमदंडहुते धनु ही, शठ ताहि बतावत है री ॥

क्यों रे कैसा कहता है ?

लक्ष्मण–चौपाईः–

हे भृगुनायक ! हमरे जाना । सुनहु अहै सब धनुष समाना ।
का क्षति लाभ जीर्ण धनु तोरे । देखा रामनयेके भोरे ॥

सवैयाः–मों मतिकी गतिमें द्विजराज! अहै धनुही सब एक समाना ।
लाभ न हानि कछू यहि माहिं, शिवापति चाप महान पुराना॥
भंग भयो करके परसावत, किंकर दिव्य नयो हरि जाना।
दोष न रोष करौ बिनु काज, क्षमा समचित्त क्षमा नहिं आना॥

यानी-छंद-राधेश्याम-

श्रीमहाराज !तुम ब्राह्मण हो,इसलिये मुझे यह कहना है।
तुमको यह ज़ेवनहीं देता,जो क्रोधका ज़ेवर पहना है॥१॥
यह ज़ेवर है रजपूतोंका, जो पहना जाता है रणमें।
अपराध क्षमा हो महाराज, चाहिये शान्ती ब्राह्मणमें॥२॥

परशु०चौ०-

लघु मुख निकरत वचन न थोरा। रे शठ ! सुनेसि स्वभाव न मोरा॥

कवित्त-जानै ना स्वभाव चितलाव मूढ़ गूढ़ मति, बालकको घालक न ताते बध कीनों मैं। मार २ क्षत्रिन निक्षत्र कै इकीस बार, भूमि भूमिदेव सेव देय कारि लीनों मैं॥ किंकर कुठार दिव्य विक्रम अगार लखु, दश शत भुज भुज बल दलि दीनों मैं। तात मात सोच पोच, विवश करै तू मति, प्रतिघ अभंग रंग हींमें सदा भीनों मैं॥

छंद-राधेश्याम-रे शठ! तुझे हुआ क्या है,जो बातें काटता जाता है।
क्या " न्योतारी वामन" समझा, जो मुझे डाटता जाता है॥१॥
मुझको सीधा ब्राह्मण न समझ, मैं क्षत्रीकुलका द्रोही हूँ।
भृगुवंशी, बालब्रह्मचारी, अतिक्रोधी हूँ निर्मोही हूँ॥ २॥
मेरे इस खूनी फरसेने, शोणितकी नदी बहादी है।
इस आर्य्यभूमिमें बहुत बार, क्षत्राणी रांड बना दी है॥ ३॥
विख्यात सहस्रबाहुकी भी, बाजुयें काटनेवाला है।
इस फरसेको अब तू भी देख, जो खून चाटनेवाला है॥ ४॥

लक्ष्मण-हे महाराज!भला आप ही समझिये कि,इस रद्दीको शिवधनुष कौन कहेगा?

जो०-चौपाई-

छुवत टूट रघुपतिहिं न दोषू। मुनि बिनु काज करत कत रोषू॥
औरहि निबल कोउ बाल बनाई। काहेकी धनु जाने न जाई॥

कवित्त–तूलकी रही कि काहू फूलकी रही कि मृदु, मूलकी रही कि
धूल सानिके बनाई थी। सांटीकी रही कि कहूँ साँची स्वच्छ
माटी लाय, कांची काहू कुशल कुलालते कराई थी॥ रसिक
बिहारी भृगुनाथ! भाषिये तो नैक, शंकर समीप ए कहाँते
किमि आई थी॥ हौं तो यह जानों अनुमानते जु कोऊ बाल,
खेल हेत कमलमृनालते बनाई थी॥

परशु०–चौपाई–

बालक जानि वधौं नहीं तोही। केवल मुनि जड़ जानेसि मोही॥

सवैया–रे शठ भूपकिशोर नहीं कत बोलत बैन सुनेक विचारी।
ना तू सुने शठ बालपनेहीसे कोही महान औ ब्रह्मअचारी॥
"किंकर" मोर कराल कुठार लखै नहिं काल सुधार सुधारी।
काटिके शीश तेरा क्षणमें बकबाद करूँ शठ दूर तिहारी॥

लक्ष्मण–चौपाई–

आवत हास्य हमें सुनि बानी। अहो मुनीश महा भट मानी॥
पुनि २ मोहि देखाव कुठारा। चहत उड़ावन फूँकि पहारा॥

सवैया–मोहि देखावत हो कुरहड़ा भृगुनाथ कहो मन काह बसी है।
कोउ न है कुम्हडा इत जो लखिके तर्जनि भरि भूमि खसी है॥
किंकर देव महीसुर दीन औ गाय वधे जगमें अयशी है।
तातें सहौं सब बातें महामुनि या दुविधामहँ बुद्धि फँसी है॥

छन्द–राधेश्याम–

बस इसी एक ही फर्सेसे, क्षत्रियोंका मुक्तीद्वार खुला।
हलदीकी एक गाँठही पर, पसरहट्टेका बाज़ार खुला॥ १॥
क्यों बूढ़ा परसा दिखलाकर, क्षत्रिय जवानको डरा रहे।
बलिहार आप तो फूँकसे ही, उदयाचल पर्वत उडा रहे॥२॥

हम उस माईके लाल नहीं, जो हउएसे डरपा जायें।
और छुईमुईके पेड़ नहीं, जो उँगलीसे मुरझा जायें॥ ३॥

सुनिये:-विप्रोंकी नाईं तुम आते, तो प्रभो! मैं सह लेता लातें।
वीरोंका वेष देख करही, हमने भी कही इतनी बातें॥ ४॥

ख़ैर-अपराध क्षमा हो, और अवभी:-

कवित्त-पाऊँ अनुशासन तो आसन बिछाऊँ वेगि, वासन भराऊँ शीघ्र धीर उर राखिये। द्विज गुनमान ज्ञानते विचार मान कीजे, छोह कोहते इतो न मन माहिं माखिये॥ देखि धनु वान क्षत्रि जानि वीर मानि तुम्हैं, कीनो हम रोषसों कृपाते दोष नाखिये। " रसिकविहारी " सदा पूज्य हो हमारे याते, मीठो दधि मोदक मँगाऊँ वैठि चाखिये॥

परशु०-चौपाई:-

कौशिक सुनहु मन्द यह वालकाकुटिल कालवश निज कुलघालक॥

छन्द:-ओ: हो! यह नन्हींसी ज़बान, पर्वतकी बातें करती है।
अफसोस, दूधवाले मुँहसे, कैसी कड़ु बात निकलता है॥१॥
कौशिक इसको अब बरजो तुम, क्यों! मुझसे लड़कर मरता है।
मुझ जैसे क्रोधीके आगे, किसलिये लड़कपन करता है॥ २॥

क०:-कालवश कुटिल घलैया निज कुलकर, कौशिक सुनहु यह बालक महान मन्द। सूरवंश चन्दको कलंक यह राहु रूप, अवुध अशंक त्यों निरंकुश करैया फन्द॥ किंकर सुदिव्य मैं पुकारि कहौं खोरि नाहिं, कालको कवर शठ होई क्षण यही छन्द। वारौ २ चहहु उवारो तो सपदि कहि, परम प्रताप बल पौरुष हमारो कन्द॥

चौपाई:-

तुम हटकहु जो चहहु उबारा। कहि प्रताप बल सुयश हमारा॥

लक्ष्मण-चौपाई:-

मुनि ! प्रतापबल सुयश तुम्हारा। तुमहिं अछतको वरनै पारा॥
अपने मुख तुम अपनी करनी। बार अनेक भांति बहु वरनी॥

क०:-आप परत्यक्ष स्वच्छ रावरो सुयश लक्ष कहिवो सपक्ष अस दक्ष ना दिखानो है। आपने मुखनि निज करनी सु बारबार किंकर वरनि दिव्य मन ना अघानो है॥ नहि जो सन्तोष तो महान पुनरुक्ति नाहिं क्रोधको निवारि कहिये जो उर आनो है। वीरवृत्तिधारी त्यों अक्षोभी छोनी क्षोभी नाहिं गारी गरुआईते न शोभा सुख मानो है॥

छन्द:-श्रीमहाराज। हम लड़के हैं, लड़केही लड़कपन करते हैं।
पर तुम्हें नहीं शोभा देता, जो लड़कोंके मुँह लगते हैं॥ १॥
मेरे मुँहमें वह दूध नहीं, जो तुर्शीसे तलखा जाये।
डरता हूँ आपकी अग्नीसे, कहीं और उबाल न आजाये॥ २॥
वह शूर नहीं कहलाते हैं, जो अपने आप बखान करैं।
वह काम नहीं करसकते हैं, जो बातोंका भुगतान करैं॥३॥

परशुराम-चौपाई:-

अब जनि दोष देय मोहि लोगू। कटु बादी बालक बधयोगू॥

सवैया-रोष अदोषन दोष कछू अब दीजियो मोहि सुनौ सब लोगू।
बालक बैन कुबैन अहै भगि चैन जगो यहि दारुण रोगू॥
किंकर दिव्यजू है कुल घालक पालक ना यह भोगन भोगू।
तातें कुठार सुधारि बधौं यह मूढ़ सदा बधके अति योगू॥

छन्द–यह मूढ़ महा कटुवादी है, इसकी नहिं बात सही जाती।
इसकी छोटीसी जिह्वासे, चिनगारी है कढ़ती जाती॥१॥
परसेको इसमें पाप नहीं, बालकका मरनेपर दिल है।
मत देना मुझको दोष कोई, यह लड़का बधके क़ाबिल है॥२॥

विश्वामित्र–दोहा–

बालवृन्दके दोष वा, साधु न मनमें धार।
ताते भृगुपति क्षमिय अब, तुम हो कृपा अगार॥

गाना–क्रोध न करिये दास तुम्हारा है॥ टेक॥ दास तुम्हारा है। राजदुलारा है॥ क्रोध०१॥ रघुकुल बालक प्रान पियारा है। शिष्य हमारा है॥ क्रोध० २॥ अबतक मुखमें दूधकी धारा है। बल चतुराईमें रौशन तारा है॥ क्रोध० ३॥

परशुराम–चौपाई–

कर कुठार मैं अकरण कोही। आगे अपराधी गुरुद्रोही॥
उतर देत छांड़ौ बिनु मारे। केवल कौशिक शील तुम्हारे॥

कवित्त–गुरु अपराधी स्वच्छ अक्षन प्रत्यक्ष देखि, करमें कुठार बिन कारन लड़ैया मैं। व्याप्यो सर्वत्र यत्र तत्र यह हमारो यश, पत्र सम क्षत्र क्षत्र धारिन कटैया मैं॥ दिव्यजू दयाके बिनु साम्ब सों हमारो हिय, अकह कहानी अनुरूप भिड़वैया मैं। श्रम बिन गुरु ऋण उऋण घरीमें होत, छाड़त तिहारे शील कबका छड़ैया मैं॥

छन्द–लो कौशिक! आपके आग्रहसे, मैं इसको छोड़ देता हूँ।
अबतक जो मैंने क्रोध किया, उस क्रोधको वापस लेता हूँ १॥

लक्ष्मण–क्या खूब! (मुसकाते हैं)

परशुराम–(लक्ष्मणको मुसुकाते देख विश्वामित्रसे)

छन्द–देखो उसकी यह मुसुकाहट, फिर मेरी छाती छेदती है।
उसकी वह जहरीली चितवन, मेरी शरीरको बेधती है ॥ १ ॥
उसको भी तो कुछ समझाओ,मुझको ही मत मजबूर करो।
उस नालायक़की बातोंसे, मत मेरे दिलको चूर करो ॥ २ ॥
हम शील तुम्हारा करते हैं तो,तुम्हें ख्याल करना चाहिये।
कटुवादी अपने चेलेको तो, तुम्हें बाज़ करना चाहिये ॥ ३ ॥

लक्ष्मण–चौपाई–

ऐ मुनीश तव शील अपारा। को नहिं जान विदित संसारा ॥

सवैया–शील निलय मुनि शील तुम्हार,अपार पसार कवीन्द्र बखाने।
किंकर दिव्य सु मातु पिता, ऋणते उऋणी करणी हम जाने॥
मों शिरपै सह व्याज गुरू ऋण, लीन सो देन दुतै अनुमाने।
लाइये जाय बुलाय महाजन, लेय सो हाज़िर भूरि ख़ज़ाने॥

बुलाइये, बुलाइये महाराज ! मैं रुपये गिन दूँ, जिसमें और व्याज न बढ़े।

परशुराम–मैं अभी काटके फेंक दूँगा (परसा लेकर दौड़ते हैं)

सबलोग–हाँ ! हाँ !! हाँ !!! महाराज क्षमा कीजिये। (शान्त होते हैं)

१ दुष्टराजा–अजी, क्यों मना करते हो, बहुत देरसे टर्र टर्र करता है।

२ दु० रा०–बड़ा गुस्ताख़ है जो बडोंके मुँह लगता है।

३ दु० रा०–मुनीश्वरजी ! आप डरते हैं क्या ? इसे, हाँ !

चौ० सिं०–डरिये नहीं, मैं आपको पीछेसे सम्हाल रक्खूँगा, गिरने न पावोगे।

लक्ष्मण–चौपाई–

भृगुवर परसु देखावहु मोही। विप्र विचारी बचौ नृप द्रोही॥

कवित्त–बार २ हमहिं देखावहु कुठार धार, पारावार सरिस मिले
न भट तोहीको । जाने द्विजराज आज सकल समाजमध्य,

साँची कहौं तजत न तोसे नृपद्रोहीको ॥ सेवा लहि घरहिं बढ़े हैं द्विज किंकरसे, दिव्य यह भेव अहमेव निरमोहीको। मर्दक विपक्षपक्ष दक्षताविहीन अक्ष, ताते परत्यक्ष दक्ष जानै नहिं मोहीको ॥

अरे महाराजजी ! चौपाई-

का जानहि द्विज युद्ध उपाई। बोलत वचन बहकि बरियाई ॥

(सुनिये,)

कवित्त-वेद पढ़ि जानैं, जप यज्ञ बड़ी जानें पाप, पुण्य मढ़ि जानैं, बहु बातैं गढ़ि जानैं हैं। शापबेमें जानैं, वर थापबेमें जानैं दोष, ढाँपबेमें जानैं तप तापबेमें जानैं हैं ॥ खाय जानैं खूब औ अजूब माँगि ल्याइ जानैं, "रसिकबिहारी" बालकूँ पढ़ाइ जानैं हैं। एती पुनि औरहू अनेक रीति जानैं एक, "युद्ध, वर वीरताई" विप्र का जानैं हैं ॥

परशुराम-(क्रोधसे) अरे तुझे मैं रसातल ही भेज दूँगा।

श्रीराम-चौपाई-

नाथ करहु बालकपर छोहू। सूध दूधमुख करिय न कोहू ॥

कवित्त-कीजै दयादृष्टि वृष्टि नेह मेंह पालो शिशु, सूध मुखदूध चित चेत कछु ना धरी। जानत प्रभाव तो जनावत न एती रिस, मुनि शुनि नमत न करत बराबरी ॥ गुरु पितु मात तात मानत न चूक ताहि, किंकर जू दिव्य भूल बालक जो कबौं करी ॥ ख़ास शिशु दास जानि कोह तजि दीजै मुनि, वीर धीर शीलता विदित जग रावरी ॥

लक्ष्मण-(अँगूठा दिखाकर मुसुकाते हुये) टिलीलीलीं २

परशुराम–चौपाई–

देखु हसत मोहि पुनि रिस व्यापी। राम तोर भ्राता बड़ पापी॥

क०–वात उत्पात की बतात तोर भ्रात राम, होत है निपात मम गात रिस व्यापी है। मन तो श्याम गौर वपु बोलत विनु गौर बात, देखो करि गौर कालकूट मुख पापी है॥ किंकर सुदिव्यजु स्वभाव तेरे सम नाहिं, वीरता जनावत यह जगत परितापी है। नीच मीच विवश न जानै नीच मीच मोहि, मोंते परतापी जग कौन परतापी है॥

लक्ष्मण–दोहा–वचन हमारी सुनहु मुनि, क्रोध पापकर मूल।
जेहि वश जन अनुचित करहिं, चलहि विश्व प्रतिकूल॥

कवित्तः–सुनिये मुनीश रीस पापकर मूल शूल,-प्रद है कहत वेद ताहि उर लये थाप। ख़ास दास जानि कृपा कीजै कृपाके राशि, नशित पिनाक जुरि जइहैं न किये ते दाप॥ किंकर जु दिव्य प्रिय प्राणके समान जोपै, आनि गुनमान बनवाऊं नहिं कीजै ताप। करत प्रलाप जाप सहत संताप आप, बैठिये विवश श्रम चरण रहे हैं कांप॥

परशु०–चौपाईः–

राम क्रोध मम परम कठोरा। बचै विचारि बन्धु लघु तोरा॥

कवित्तः–दशशत बाहुबाहु काटे स उछाहु जग, गोपित न काहु यहि परसु कठोरे से। जानत न मूढ़ गूढ़ प्रबल प्रभाव मोर, वीर रणधीर रण भिरत न भोरे से॥ किंकर सुदिव्य तन मानस मलीन कस, कनककुंभ मांहि जस विष रस घोरेसे। कूर पूर रूर ना ग़रूर सब दूर होत, बचत है जरूर राम तेरोई निहोरे से॥

श्रीराम—चौपाई:-

सुनहु नाथ तुम सहज सुजाना। बालक वचन करिय जनि काना॥
बालक बरैं एक स्वभाऊ। तिनहिं न सन्त विदूषहिं काऊ॥

सवैया-हे मुनि नायक! शीलनिलय लघु,बालक वैन करौ नहिं काना।
ज्ञान निधान न होत हैं य प्रभु, बालक बर्र स्वभाव समाना॥
"किंकर" दिव्य मैं भंग कियो धनु, वा सन काच नहीं विनशाना। ताते कृपा वध बन्ध हमीं पर, कीजिये जो मनमें अनुमाना॥

चौपाई:-तेइ नाहीं कछु काज विगारा। अपराधी मैं नाथ तुम्हारा॥

लक्ष्मण—दोहा:-यह बतिया तो फिर वही, रहा न जाता मौन
अपराधी रघुनाथको, कह सकता है कौन॥

छन्द:-अपराधी तो तुम हो मुनीश, जलसा विगाड़ने आये हो।
भाई जब दही विलोय चुके, तब घी निकालने आये हो॥ १॥
यह धनुष अनेकों वर्षोंसे, मिथिलापुरमें था पड़ा हुआ।
क़बज़े में मिथिलेश्वरके था, इससे हक़ उनका बड़ा हुआ॥ २॥
जिसका हक़ था उसनेही उसे, अपने आगे तुड़वा डाला।
अब कहिये आप होते हैं कौन, जो करते हो "गड़बड़ झाला"॥३॥

परशुराम—चौपाई:-

कहहु राम जावे रिस कैसे। अजहुँ बन्धु तव कहै अनैसे॥

कवित्त:-कैसे रिस जाय राम अबलों तिहारो बन्धु, भृकुटि तानि
कटुक वैन बान तानि दीनो है। सुनिके गिरावें गर्भ नरपति

रौनि औनि, परसु कठोर घोर रौद्र रस भीनो है ॥ किंकर सुदिव्य लसै कंठ उपकंठयाके, कठिन कुठारते दुकंठ करि दीनो है। तोपै कहा क्रोध करि कीनो है विमुख विधि, जौनेमों स्वभाव आन विधिकरि दीनो है ॥

नतो मेरे पैर आगे बढ़ते हैं और न कुठारही उठता है, क्या कुंठित होगया ? और क्यों हृदयमें दयाका संचार हो रहा है।

लक्ष्मण—चौपाई:–

बायुकृपा मूरति अनुकूला । बोलत वचन झरत जनुफूला ॥

सवैया:–चेत सचेत लखो मुनि नाथ कृपा वपु रावरि है अनुकूला ।
किंकर दिव्यजु ताते सुबैन झरै पवि पाहनके जनु फूला ॥
कोप किये विधि राखहि देह जो नेह किये उपजै बहु शूला ।
बान कमान तजौ अभिमान गहौ वर ज्ञान महा सुख मूला ॥

हे द्विजवर !

छन्द–देखना, सम्हलना, खबरदार, मूरत होकर मत रह जाना ।
यह न हो कि हमको इसी जगह,मन्दिर हो आपका बनवाना१
फिर पूजाकी सामग्री भी, इस समय नहीं हम रखते हैं ।
हे देव ! जो तुम स्वीकार करो, तो"हार"भेंट कर सकते हैं २

और आपके कुठारके कुंठित होनेको क्या कहूँ । मालूम होता है कि:–

कवित्त–कै तो कर कम्पत गिरो है कहुँ पाहन पै, परसु निहारो तब हौसे क्षीणधार भो । कै तो कांचे लोहते बनायो है अजान कोऊ, कै तो यह आज लौं न काहू पै प्रहार भो ॥ कै तो

कहुँ कानन कठोर तरु कीने छिद्र, जातें मन्द धार है कुठार विनकार भो। "रसिकबिहारी" सत्य यही दरसात मोंकों, कांधपै धरे ही धरे कुंठित कुठार भो॥

परशुराम-(जनकसे)

चौ०-देखु जनक! हठ बालक एहू। कीन चहत शठ यमपुर नेहू॥

दादरा-वैन वान वर्षत विपुल, बालक अबुध विदेह।
नैन ओट करु नतरु यह, जान चहत यम गेह॥

लक्ष्मण-दोहा-श्रीभृगुपति महराज जू, हौ माकूल पसन्द।
अपनी आंखें आप ही, करन लीजिये बन्द॥

छन्द-आंखोंसे आंखें डरती हैं, तो आंखें मूँद चले जाओ।
तबियत ज्यादा घबड़ाती हो, तो दिलपर हाथ मले जाओ॥१॥
जब बिना बुलाये आये हो, तो विना कहे जा सकते हो।
यदि नेह धनुष खंडोंसे हो, तो उनको ले जा सकते हो॥२॥

परशुराम-चौपाई-

रे शठ राम! शम्भु धनु तोरी। कहि मृदु करत प्रबोधन मोरी॥
बन्धु कहै कटु सम्मति तोरे। तैं छल विनय करत कर जोरे॥

कवित्त-ए हो रामचन्द्र! चन्द्रशेखर धनुष तोरि, चन्द छल छन्द युत करत प्रबोधको। निपट निशङ्क वङ्क वैन सैन तेरे यह, बोलै है तेहिते करै है अनुरोधको॥ किंकर सुदिव्य समर कारि करु परितोष मोर, नातो राम नाम तजि देवे विन बोधको। नातरु भाय सहित पठाय काल गाल तोहि, सबहिं देखाऊँ फल शङ्कर विरोधको॥

दोहा–वाक युद्ध अब हो चुका, बान युद्ध अब होय।
अरे राम संग्राममें, अब देखूँगा तोय॥

छन्द–राधेश्याम–

है परशुराम जो नाम मेरा, तो तू भी राम कहाता है।
मेरे ही नामका पिछला पद, तू अपना नाम बताता है॥ १॥
अतएव राम तू बनता है, तो कर मुझसे संग्राम अभी।
वरना मत रामको धोका दे, दे बदल यह अपना नाम अभी॥२॥

लक्ष्मण—छन्द राधेश्यामः–

नफ़रत है राम नाम से तो, साहित्य युद्ध भी दिखलाओ।
महराज! वर्णमालासे भी, दोनों अक्षरको निकलाओ॥१॥
अफ़सोस! खिजाहट तो देखो, कहते हैं नाम "राम" क्यों है।
जो नाम एक ब्राह्मणका है, क्षत्रीका वही नाम क्यों हैं॥ २॥

श्रीराम–(लक्ष्मणको मना करके) हे मुनिजी! सुनिये,

चौ०:–सुनहु लखनकर हमपर रोषू। कतहुँ सुधाइउ ते अति दोषू॥
क०:–कीनो जो लखन दोष, मों पै सो करत रोष, होत बड़दोष कहुँ निपट सुधाई ते। द्वैज द्विजराज राहु ग्रसत न शंक मानि, तैसेइ सशक वक्रावक्र वक्रताई ते॥ किंकर कुठार दिव्य आगे यह शीश रीस, मेटिये मुनीश निज विमल उपाईते। संगर लराई रिपुरिपुते सदाई होत, सेवक लराई सेवकाईमें सदाईते॥

छं० रा० श्याम०:–

हे नाथ! आपमें औ हममें, देखो तो कितना अन्तर है।
है "परशु" नाम तो मस्तकपर, और "राम" नाम चरणोंपर है॥१॥

मैं "राम" आप हैं "परशुराम," बतलाओ किसका नाम बड़ा।
बस वही बड़ा कहलाता है,जिसका होता है नाम बड़ा ॥ २ ॥

परशुराम-दोहाः-

बार २ मुनि, विप्र, द्विज, कहत मोहि तू राम ।
जस द्विज तोहि सुनावहूँ, तहूँ बन्धु सम बाम ॥

क०:-एरे राम ! तैं हूँ निजबन्धु सम बोलै बाम, याचक छदाम कर जाने द्विज मोहीको । किंकर सुदिव्य विप्र जैसो मैं सुनाऊँ तोहि, चाप स्त्रुवा शर अनल कोप शुक्र जोहीको॥सैन चतुरंग दारु भूभृत उपाकृतन्ह, दीने बहु बार बलि ऐसे अवलोहीको। जानैं न उद्दंड तेज तातें बहु बातें करै, खर्व धनु तोरेसे खर्व गर्व तोहीको ॥

श्रीराम-चौपाईः-

कहहु नाथ!टुक वैन विचारी। रिसि तुव बड़ि, लघु चूक हमारी
देव ! एक गुण धनुष हमारे। नव गुण परम पुनीत तुम्हारे ॥

श्लोकः-ऋजुस्तपस्वी सन्तुष्टः, क्षमाशीलो जितेन्द्रियः ।
दाता, ज्ञानी, दयालुश्च, ब्राह्मणो नवभिर्गुणैः ॥

चौ०:-छुवत हि टूट पिनाक पुराना। मैं केहि हेतु करौं अभिमाना ॥

दोहाः-जो मैं निदरौं विप्र वदि, सत्य सुनहु भृगुनाथ।
तो अस को जग सुभट जेहि, भयवश नावहिं माथ ॥

सवैयाः-वैन विचारि कहौ मुनिनाथ ! करौ लघु चूक पै तामस भारी।
किंकर छूवत चाप टुटो, अभिमान सुदिव्य कहा उर धारी ॥

पावन पूज्य तिहूँ पुरमें, निदरौं तुमको नहिं विप्र विचारी।
जो निदरौं तो डरौं केहिको, रण आय करै सरि कौन हमारी॥

छं० रा० श्या०:-

महराज ! विनय हम करते हैं, और आप विगड़ते जाते हो।
हम जितने नवते जाते हैं, तुम उतने चढ़ते जाते हो ॥ १ ॥
बिगड़ जायँ जो महाराज, हम तो अनर्थ हो जायेगा ॥
फिर ऐसा को संसारमें है, जो हमको आ डरपायेगा ॥ २ ॥

क०:-भूप सुर भूप, देव, दानव, सुवीर, धीर, समर प्रचारै लरौं काल किन आवै जो। किंकरजु दिव्य गुनौं कुलको कलंकी सत्य, क्षत्रीको शरीर धरि समर सकावै जो ॥ वंशको प्रशंस विन कहत स्वभाव रण, कालते डरै ना रघुवंशी कहवावै जो। विप्रवंशकेरी प्रभुताई अस गाई नाथ, तुम्हहिं डेरावै नहिं काहूको डेरावै जो ॥

छं० रा० श्या०:-

इसलिये न फरसा दिखलाओ, हम खौफ़ न उसका करते हैं।
हां,एक अस्त्र महाराजपै है, जिससे हम अब भी डरते हैं ॥ १ ॥
कहिये बतलायें वह क्या है, जिसका हमको ज्यादा डर है।
महराज ! देखिये नीचेको, वह श्रीचरणोंकी ठोकर है ॥ २ ॥
ब्राह्मणोंके हम हैं कृपापात्र, इतना इस जगह ग़ौर भी है।
बस यह भी चिह्न वहींपर हो,जिस जगह निशान औरभीहै ॥ ३ ॥

परशुराम-(आश्चर्यमें हो) चौपाई-

राम रमापतिकर धनु लेहू। खैंचहु चाप मिटै सन्देहू ॥

दोहा–राम रमापतिकर धनुष, कर गहि देहु चढ़ाय।
जानि रमापति जग सुखद, संशय मोर नशाय ॥(धनुष देते हैं)

श्रीराम–(धनुष लेते हैं वह आप ही चढ़ जाता है)

परशुराम–(सन्देह रहित हो स्तुति करते हैं)

चौपाई–जय रघुवंश वनजवन भानू। गहन दनुजकुल दहन कृशानू ॥
जय सुर धेनु सन्त हितकारी। जय मद मोह कोह भ्रमहारी ॥
विनयशील करुणागुणसागर । जयति वचन रचना अतिनागर ॥
सेवकसुखद सुभग सब अंगा। जय शरीरछवि कोटि अनंगा ॥
काह करौं मुख एक प्रशंसा। जय महेश मन मानस हंसा ॥
अनुचित बहुत कहेउँ अज्ञाता। क्षमहु क्षमामन्दिर दोउ भ्राता ॥

गाना–

रघुकुलमें सूर्य्यसमान हो तुम,–हे राम तुम्हारी जय होवे ।
असुरोंके लिये कृशानु हो तुम–हे राम तुम्हारी जय होवे ॥ टेक ॥
गो–द्विज–महि–सुरसन्तोंके हित–नररूपमें प्रकटे त्रिभुवनपति।
नर होकर भी निर्वान हो तुम–हे राम तुम्हारी० ॥ १ ॥
जो शंकरके सर्वस सुख हैं–वे आज हमारे सन्मुख हैं।
हम भक्त हैं औ भगवान हो तुम,–हे राम तुम्हारी० ॥ २ ॥
विनु जाने हम कटु वैन कहे–सो नाथ क्षमा हम माँग रहे।
क्षमियेगा कृपानिधान हो तुम–हे राम तुम्हारी० ॥ ३ ॥
ह सीता शक्ति तेरी जय हो–हे लक्ष्मण शेष तेरी जय हो ।
त्रैगुण्यमय विश्वके प्रान हो तुम–हे राम तुम्हारी० ॥ ४ ॥
कहे "राधेश्याम" भक्ति वरदो–और नाथ नवीन शक्ति भर दो।
हम भिक्षुक हैं धनवान हो तुम–हे राम तुम्हारी० ॥ ५ ॥

(जय जय ध्वनि होती है–परसुराम तपको जाते हैं–सखियाँ मंगलगान करती हैं)

१ दुष्ट राजा–क्यों जी ! क्या हुआ ?

२–दुष्ट राजा–हुआ क्या, कुछ नहीं ।

३–दुष्ट राजा–चीं चपड़कर कराके चल दिया ।

चीलरसिंह–अरे यारो ! डाढ़ीवाला तो चला गया. अब,

सबराजा–यह तो, कुछ न हुआ. अब सब धीरेसे खसको ।

सखियाँ—गानाः–

आओ सबै मिल आली–करैं मंगल गान ॥ टेक ॥ साजहु कंचन थारी–सखी नवनारी–हर्ष अति भारी–कहा मेरी सखि मान ॥ आओ० ॥ १ ॥ दुंदुभि देव बजावें–सुमन बरसावें–देखत बनि आवे–भयो हर्ष महान ॥ आओ० ॥ २ ॥ रामसिया की जोरी–लखहु सब गोरी–नैन सुख लोरी–मन्द २ मुसुकान ॥ आओ० ॥ ३ ॥

सहानाः–घरी आजकी प्यारी प्यारी मुबारक । गुलोंको यह फ़स्ले बहारी मुबारक ॥ टेक ॥ महाराजका क़ौल पूरा हुआ है। रही क़ौमकी लाज सारी मुबारक ॥ घरी० ॥ १ ॥ अवधके कुवरने धनुष तोड़ डाला। हेमशाको यह यादगारी मुबारक ॥ घरी० ॥ २ ॥ जिन हाथोंके हाथ आई ताज़ीमें क़ौमी। उन हाथोंके हम सब हैं वारी मुबारक ॥ घरी०३॥ सभामें मिली जिनको माला विजयकी। उसे बज्मकी शान दारी मुबारक ॥ घरी० ॥ ४ ॥ मुबारक जनकनन्दिनी राम-जीको सियाको अवधके बिहारी मुबारक॥ घरी०॥५॥ फलैं और फूल ए बाग़े जहांमें । दुआ "राधे श्याम" यह हमारी मुबारक ॥ घरी० ॥ ६ ॥

गानाः–प्यारी तोरे चमनमें फूलनकी बहार हो ।

फूलनकी बहार हो, सुमनकी बहार हो ॥ टेक ॥

राजनसे रजी रहो, साजनसे सजी रहो,
ताज तेरे राजका चाह प्यार हो ॥ प्यारी० ॥ १ ॥
हो मुबारक हमें जगदीश यह बढ़कर शादी।
बाग़े हस्तीमें खिलाये गुले अनवर शादी ॥
शाद दूल्हा रहे ता इस्र आबाद दुल्हन।
उसको हासिल हो खुशी इसको मयस्सर शादी ॥ प्यारी०॥२॥

ग़ज़लः–शिक्षा पै रामरहस्यकी टुक कान करना चाहिये।
अरु बालकोंके खेल पर भी ध्यान धरना चाहिये॥ टेक ॥
प्रकटी जहाँ से पुण्य धारा प्रेम पारावारकी।
उस पूज्य रामायणका हमको मान करना चाहिये ॥१॥
व्यवहारकी परमार्थकी मानवधरम अरु शान्तिकी।
उच्चतम आदर्श शिक्षा ज्ञान लहना चाहिये ॥ २ ॥
कौशिलासी मातु पितु दशरथसे अब मिलते कहाँ।
राम लक्ष्मणके सुपथ पर ध्यान करना चाहिये ॥ ३ ॥
गुरुकी आज्ञा जिस तरह पालन किया है रामजी।
उस तरह पर सबको गुरु सम्मान करना चाहिये ॥४॥
मालियोंसे पूछ कर दल फूल रघुपतिने लिये।
आज्ञा बिना पर वस्तुपर नहि पानि करना चाहिये ॥ ५ ॥
और नृपकी भाँति नहि रघुनाथ बकवादी बने।
वीर जनको यों सदा ही धीर बनना चाहिये ॥ ६ ॥
दीन गौतमनारिका उद्धार रघुपतिने किया।
यों दुखी जनके दुखोंका नाश करना चाहिये ॥ ७ ॥
किंकर कहाँ तक कह सके, हरि लीलाकी शिक्षा सभी।
पर, सज्जनोंको खोजके, शुद्धि ज्ञान करना चाहिये ॥ ८ ॥

अंतिम प्रार्थना ।

भगवान ! भारत वर्ष ये, क्रीड़ा निकेतन आपका ।
क्या फिर बनेगा ? करोगे, आकर शमन सन्तापका ॥
स्वाधीनताका साज, भारतको सजा दीजे प्रभो ।
विश्वेश ! डंका विश्वमें, जयका बजा दीजे विभो ॥ १ ॥
हे विभो ! हम भारतीयोंमें, परस्पर प्यार हो ।
संचार हो बन्धुत्वका, द्वेषत्वका संहार हो ॥
निज मातृभूपै मानयुत, मरना हमें स्वीकार हो ।
अन्यायसे हम दूर हों, बस न्याय ही आधार हो ॥ २ ॥
अच्युत ! उबारो सब अवनतिसे अभय उत्थान दो ।
स्वाधीनता दो, शान्ति दो सर्वेश सुख सन्मान दो ॥
भारतदशापर ध्यान दो, करुणाकथापर कान दो ।
म्रियमाण प्रायः हो चुके, जगदीश जीवनदान दो ॥ ३ ॥

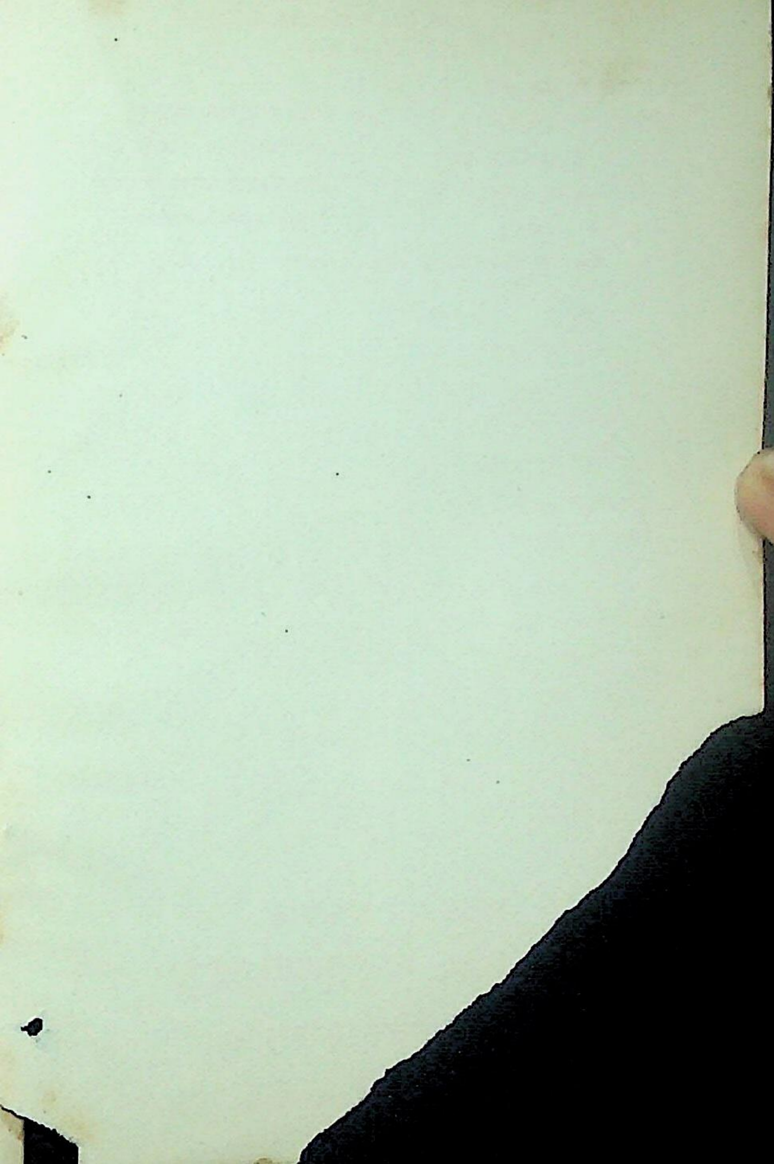
विश्राम–सानन्द भव्य भविष्यका, तू लेखनी सन्देश दे ।
तेरे परिश्रमको सफलता, शान्तिमय सर्वेश दे ॥
थोड़े समयके हेतु सविनय, वेग अपना थामले ।
जय जानकीजीवनकी कह, हे लेखनी विश्राम ले ॥ १ ॥

पुस्तके मिलने के स्थान :–

खेमराज श्रीकृष्णदास
श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७वीं खेतवाडी, खम्बाटा लेन,
बम्बई–४०० ००४

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
अहिल्याबाई चौक, कल्याण
(जि० ठाणे–महाराष्ट्र)

खेमराज श्रीकृष्णदास, चौक–वाराणसी (उ० प्र०)



पुस्तके मिलने के स्थान :-

खेमराज श्रीकृष्णदास
श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७वीं खेतवाडी, खम्बाटा लेन,
बम्बई-४०० ००४

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
अहिल्याबाई चौक, कल्याण
(जि० ठाणे-महाराष्ट्र)

खेमराज श्रीकृष्णदास, चौक-वाराणसी (उ० प्र०)

खेमराज श्र
श्रीवेंकटेश्वर प्रे
खेमराज श्रीकृष्णद
७वीं खेतवाडी, खम्बाट
बम्बई-४०० ००४
खेमराज श्रीकृष्णदास, चौ

मुद्रक एवं प्रकाशकः
राज श्रीकृष्णदास
श्रीवेंकटेश्वर प्रेस
र्ग, बम्बई-४०० ००४